मुक़दमा
सहीह मुस्लिम
(हिन्दी)

तालीफ़:-
अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज
क़ुशैरी नीशापूरी

तर्जुमा:-
मुहम्मद शिराज़ बिन आलम
(कैफ़ी)

प्रूफ़ रीडिंग:-
इरफ़ान अली

मुक़दमा सहीह मुस्लिम

(हिन्दी)

तालीफ़:-

अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज क़ुशैरी नीशापूरी

तर्जुमा:-

मुहम्मद शिराज़ बिन आलम (कैफ़ी)

प्रूफ़ रीडिंग:-

इरफ़ान अली

مقدمة الإمام مسلم رحمه الله

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम के साथ जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ، وَصَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ، وَعَلَى جَمِيعِ الْأَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِينَ

हर तरह की तारीफ़ सारे जहानों के पालने वाले अल्लाह के लिए और बेहतरीन बदला तक़वा इख़्तियार करने वालों के लिए है । अल्लाह ख़ातमुल अम्बियाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अपनी रहमत नाज़िल फरमाए और सारे नबियों और रसूलों पर भी ।

أَمَّا بَعْدُ،

فَإِنَّكَ يَرْحَمُكَ اللهُ بِتَوْفِيقِ خَالِقِكَ، ذَكَرْتَ أَنَّكَ هَمَمْتَ بِالْفَحْصِ عَنْ تَعَرُّفِ جُمْلَةِ الْأَخْبَارِ الْمَأْثُورَةِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سُنَنِ الدِّينِ وَأَحْكَامِهِ، وَمَا كَانَ مِنْهَا فِي الثَّوَابِ وَالْعِقَابِ، وَالتَّرْغِيبِ وَالتَّرْهِيبِ، وَغَيْرِ ذَلِكَ مِنْ صُنُوفِ الْأَشْيَاءِ بِالْأَسَانِيدِ الَّتِي بِهَا نُقِلَتْ، وَتَدَاوَلَهَا أَهْلُ الْعِلْمِ فِيمَا بَيْنَهُمْ، فَأَرَدْتَ، أَرْشَدَكَ اللهُ أَنْ تُوَقَّفَ عَلَى جُمْلَتِهَا مُؤَلَّفَةً مُحْصَاةً، وَسَأَلْتَنِي أَنْ أُلَخِّصَهَا لَكَ فِي التَّأْلِيفِ بِلَا تَكْرَارٍ يَكْثُرُ، فَإِنَّ ذَلِكَ زَعَمْتَ مِمَّا يَشْغَلُكَ عَمَّا لَهُ قَصَدْتَ مِنَ التَّفَهُّمِ فِيهَا، وَالِاسْتِنْبَاطِ مِنْهَا، وَلِلَّذِي سَأَلْتَ أَكْرَمَكَ اللهُ حِينَ رَجَعْتُ إِلَى تَدَبُّرِهِ، وَمَا تَؤُولُ بِهِ الْحَالُ إِنْ شَاءَ اللهُ عَاقِبَةٌ مَحْمُودَةٌ وَمَنْفَعَةٌ مَوْجُودَةٌ، وَظَنَنْتُ حِينَ سَأَلْتَنِي تَجَشُّمَ ذَلِكَ أَنْ لَوْ عُزِمَ لِي عَلَيْهِ، وَقُضِيَ لِي تَمَامُهُ، كَانَ أَوَّلُ مَنْ يُصِيبُهُ نَفْعُ ذَلِكَ إِيَّايَ خَاصَّةً قَبْلَ غَيْرِي مِنَ النَّاسِ لِأَسْبَابٍ كَثِيرَةٍ يَطُولُ بِذِكْرِهَا الْوَصْفُ،

अल्लाह आप[1] पर रहम फ़रमाएं ! बिला शुबा आपने अपने पैदा करने वाले की तौफ़ीक़ से यह ज़िक्र किया है कि आप दीन के तरीकों और अहकाम के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (उम्मत तक) पहुँचने वाली हदीसों को उनकी सनदों के साथ जानना चाहते हैं और उन हदीसों को भी जो सवाब और अज़ाब, रगबत (शौक़) दिलाने और डराने और उन जैसी दूसरी चीज़ों के बारे में हैं और अहले इल्म ने एक दुसरे से लीं और पहुँचायीं हैं । अल्लाह आपकी रहनुमाई फ़रमाए! आप चाहते हैं कि यह हदीसे आपके सामने जमा की जायें । आपने मुझसे यह ख्वाहिश की है कि मैं इन हदीसों को बिना तकरार (पुनरावृत्ति) के आपके लिए इस किताब में जमा कर दूं क्यूंकि आप समझते हैं कि यह तकरार इन हदीसों को अच्छी तरह समझने और उनसे निष्कर्ष निकालने में आपके लिए रुकावट की वजह बनेगी जो कि आपका असल मक़सद है । आपने जिस चीज़ की मुझसे ख्वाहिश की है, जब मैंने इसके और इससे मिलने वाले फ़ायदे के बारे में गौर ओ फ़िक्र किया तो (मुझे यक़ीन हो गया कि) इन शा अल्लाह इसका नतीजा बहुत अच्छा और बहुत फ़ायदेमंद होगा । और जब आपने मुझ से इस काम के लिए कहा तो

1. आपने यह बात अपने शागिर्द अहमद बिन सलमा बिन अब्दुल्लाह बज़्ज़ार नीशापूरी से कही जिन्होंने आपसे सहीह मुस्लिम लिखने की ख्वाहिश की थी

إِلَّا أَنَّ جُمْلَةَ ذَلِكَ أَنَّ ضَبْطَ الْقَلِيلِ مِنْ هَذَا الشَّأْنِ، وَإِتْقَانَهُ، أَيْسَرُ عَلَى الْمَرْءِ مِنْ مُعَالَجَةِ الْكَثِيرِ مِنْهُ، وَلَا سِيَّمَا عِنْدَ مَنْ لَا تَمْيِيزَ عِنْدَهُ مِنَ الْعَوَامِّ، إِلَّا بِأَنْ يُوَقِّفَهُ عَلَى التَّمْيِيزِ غَيْرُهُ، فَإِذَا كَانَ الْأَمْرُ فِي هَذَا كَمَا وَصَفْنَا، فَالْقَصْدُ مِنْهُ إِلَى الصَّحِيحِ الْقَلِيلِ أَوْلَى بِهِمْ مِنَ ازْدِيَادِ السَّقِيمِ، وَإِنَّمَا يُرْجَى بَعْضُ الْمَنْفَعَةِ فِي الِاسْتِكْثَارِ مِنْ هَذَا الشَّأْنِ، وَجَمْعِ الْمُكَرَّرَاتِ مِنْهُ لِخَاصَّةٍ مِنَ النَّاسِ مِمَّنْ رُزِقَ فِيهِ بَعْضُ التَّيَقُّظِ، وَالْمَعْرِفَةِ بِأَسْبَابِهِ وَعِلَلِهِ، فَذَلِكَ إِنْ شَاءَ اللهُ يَهْجُمُ بِمَا أُوتِيَ مِنْ ذَلِكَ عَلَى الْفَائِدَةِ فِي الِاسْتِكْثَارِ مِنْ جَمْعِهِ، فَأَمَّا عَوَامُّ النَّاسِ الَّذِينَ هُمْ بِخِلَافِ مَعَانِي الْخَاصِّ مِنْ أَهْلِ التَّيَقُّظِ وَالْمَعْرِفَةِ، فَلَا مَعْنَى لَهُمْ فِي طَلَبِ الْكَثِيرِ، وَقَدْ عَجَزُوا عَنْ مَعْرِفَةِ الْقَلِيلِ

मुझे यक़ीन हो गया कि अगर मुझे इस काम की तौफ़ीक़ मिली और अल्लाह की तरफ़ से इसके मुकम्मल होने का फ़ैसला हुआ तो पहला शख़्स जिसे दुसरे लोगो से पहले इससे ख़ास तौर पर फ़ायदा होगा, वह मैं ख़ुद होऊंगा । इसकी कई वजह हैं कि उन सबको यहाँ बयान करना बात को बहुत लम्बा कर देगा, लेकिन सार यह है कि इन ख़ूबी वाली थोड़ी हदीसो को जमा करना और इनमें महारत हासिल करना इन्सान के लिए बहुत ज़्यादा हदीसो को जमा करने के मुक़ाबले में ज़्यादा आसान है ,ख़ास तौर पर आम लोगो में से एक ऐसे इन्सान के लिए जो उस वक़्त तक उनमें (से सहीह और ज़ईफ़ के बारे में भी) फ़र्क़ नहीं कर सकता जब तक कोई दूसरा उसे इस फ़र्क़ के बारे में न बताये । जब बात इस तरह है जैसे हमने बयान की तो थोड़ी सहीह (हदीस) चुन लेना बहुत ज़्यादा ज़ईफ़ हदीसो को जमा करने से कहीं बेहतर है । यह बात (अपनी जगह) सही है कि बहुत सी हदीसो को इकठ्ठा करने और एक जैसी हदीसो (मफ़हूम के ऐतबार से) को जमा करने के भी कुछ फ़ायदे हैं, ख़ासतौर पर उन लोगो के लिए जिन्हें इस (इल्म) में कुछ समझ और इलल (हदीस में छुपी हुई कमियां) की वजहों की जानकारी अता की गयी है । अल्लाह की मर्ज़ी से ऐसा इन्सान इन खूबियों की वजह से जो उसे अता की गयीं हैं, ज़्यादा हदीसो को जमा करके फ़ायदा उठा सकता है लेकिन जहाँ तक आम इन्सान की बात है जो समझ और जानकारी रखने वाले ख़ास (शख़्स) से अलग हैं, उनके लिए कम हदीसो की जानकारी भी मुश्किल हैं तो उनके लिए ज़्यादा हदीसो को हासिल करने से कोई फ़ायदा नहीं है ।

ثُمَّ إِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ مُبْتَدِئُونَ فِي تَخْرِيجِ مَا سَأَلْتَ وَتَأْلِيفِهِ، عَلَى شَرِيطَةٍ سَوْفَ أَذْكُرُهَا لَكَ، وَهُوَ إِنَّا نَعْمِدُ إِلَى جُمْلَةِ مَا أُسْنِدَ مِنَ الْأَخْبَارِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَنَقْسِمُهَا عَلَى ثَلَاثَةِ أَقْسَامٍ، وَثَلَاثِ طَبَقَاتٍ مِنَ النَّاسِ عَلَى غَيْرِ تَكْرَارٍ،إِلَّا أَنْ

फ़िर आपने जिस (किताब) की ख्वाहिश की है हम इन शा अल्लाह इस तरीक़े से इसकी तख़रीज (अलग अलग पहलुओं से इसकी व्याख्या) और किताब की शुरुआत करते हैं जिसका मैं आपके सामने ज़िक्र करने लगा हूँ और वह यह है कि हम उन सारी हदीसो को लेंगे जो सनदन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान की गयीं और बिना दोहराएँ उन्हें तीन हिस्सों और (बयान करने

वाले) लोगों के तीन तबकों के मुताबिक़ बाटेंगे सिवाए यह कि कोई ऐसा मौक़ा आ जाये जहाँ किसी हदीस को दोबारा ज़िक्र किये बिना कोई चारा न हो, (जैसे) उसमें कोई मतलब ज़्यादा हो या कोई सनद ऐसी हो जो किसी इल्लत या किसी वजह से दूसरी सनद के साथ आई हो क्यूंकि हदीस में एक अर्थ ज़्यादा भी एक पूरी हदीस के बराबर होता है, इसलिए ऐसी हदीस को, जिसमें हमारा बयान किया हुआ कोई अर्थ ज़्यादा पाया जाता है, दोबारा लाये बिना चारा नहीं या जब मुमकिन हुआ तो हम उस अर्थ को पूरी हदीस से अलग करके बयान कर देंगे लेकिन कभी उसे पूरी हदीस से अलग करना मुश्किल होता है और जब इसकी गुंजाइश न हो तो इसे असल शक्ल में दोबारा बयान करना ज़्यादा मुनासिब होता है । अलबत्ता जहाँ जहाँ हमारे लिए इसे पूरा दोहराने से बचना मुमकिन होगा और हमे इसकी ज़रुरत नहीं होगी तो हम इन शा अल्लाह इससे बचने की कोशिश करेंगे ।

يَأْتِيَ مَوْضِعٌ لَا يُسْتَغْنَى فِيهِ عَنْ تَرْدَادِ حَدِيثٍ فِيهِ زِيَادَةُ مَعْنًى، أَوْ إِسْنَادٌ يَقَعُ إِلَى جَنْبِ إِسْنَادٍ، لِعِلَّةٍ تَكُونُ هُنَاكَ، لِأَنَّ الْمَعْنَى الزَّائِدَ فِي الْحَدِيثِ الْمُحْتَاجَ إِلَيْهِ يَقُومُ مَقَامَ حَدِيثٍ تَامٍّ، فَلَا بُدَّ مِنْ إِعَادَةِ الْحَدِيثِ الَّذِي فِيهِ مَا وَصَفْنَا مِنَ الزِّيَادَةِ، أَوْ أَنْ يُفَصَّلَ ذَلِكَ الْمَعْنَى مِنْ جُمْلَةِ الْحَدِيثِ عَلَى اخْتِصَارِهِ إِذَا أَمْكَنَ، وَلَكِنْ تَفْصِيلُهُ رُبَّمَا عَسُرَ مِنْ جُمْلَتِهِ، فَإِعَادَتُهُ بِهَيْئَتِهِ إِذَا ضَاقَ ذَلِكَ أَسْلَمُ، فَأَمَّا مَا وَجَدْنَا بُدًّا مِنْ إِعَادَتِهِ بِجُمْلَتِهِ مِنْ غَيْرِ حَاجَةٍ مِنَّا إِلَيْهِ، فَلَا نَتَوَلَّى فِعْلَهُ إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى

जहाँ तक पहली क़िस्म का ताल्लुक़ है (उसमे) हम यह कोशिश करेंगे कि उन्हीं हदीसो को ज़्यादा अहमियत दें जो दूसरी हदीसो के मुक़ाबले कमियों से ज़्यादा बची हुई हों और ज़्यादा पाक हों, यानी उन रिवायत को नक़ल करने वाले रावी हदीस के मामले में सेहत और सिक़ाहत रखने वाले हों, उनकी रिवायत में शदीद इख़तिलाफ़ न पाया जाये और न ही हदीस के अल्फाजों को आपस में एक दुसरे में मिलाया गया हो जिस तरह कि बहुत से हदीसो को बयान करने वालों में पाया गया है और उन रिवायत में यह चीज़ पता लग चुकी हैं ।

فَأَمَّا الْقِسْمُ الْأَوَّلُ، فَإِنَّا نَتَوَخَّى أَنْ نُقَدِّمَ الْأَخْبَارَ الَّتِي هِيَ أَسْلَمُ مِنَ الْعُيُوبِ مِنْ غَيْرِهَا، وَأَنْقَى مِنْ أَنْ يَكُونَ نَاقِلُوهَا أَهْلَ اسْتِقَامَةٍ فِي الْحَدِيثِ، وَإِتْقَانٍ لِمَا نَقَلُوا، لَمْ يُوجَدْ فِي رِوَايَتِهِمْ اخْتِلَافٌ شَدِيدٌ، وَلَا تَخْلِيطٌ فَاحِشٌ، كَمَا قَدْ عُثِرَ فِيهِ عَلَى كَثِيرٍ مِنَ الْمُحَدِّثِينَ، وَبَانَ ذَلِكَ فِي حَدِيثِهِمْ

हम इस क़िस्म के सिक़ा रावियों की बयान की गयी रिवायतो को बयान कर लेंगे तब इसके बाद ऐसी रिवायत लायेंगे जिनकी सनदों में कोई ऐसे रावी मौजूद होंगे जो पहली क़िस्म के रावियों जैसे हाफ़िज़े वाले तो नहीं होंगे, उनसे दर्जे में थोड़े कम होंगे लेकिन वो भी सिक़ा और इल्म वाले होंगे जैसे अता बिन साइब, यज़ीद बिन अबी ज़ियाद, लैस बिन अबी सुलैम और उन्ही की तरह रिवायत को बयान

فَإِذَا نَحْنُ تَقَصَّيْنَا أَخْبَارَ هَذَا الصِّنْفِ مِنَ النَّاسِ، أَتْبَعْنَاهَا أَخْبَارًا يَقَعُ فِي أَسَانِيدِهَا بَعْضُ مَنْ لَيْسَ بِالْمَوْصُوفِ بِالْحِفْظِ وَالْإِتْقَانِ، كَالصِّنْفِ الْمُقَدَّمِ قَبْلَهُمْ، عَلَى أَنَّهُمْ وَإِنْ كَانُوا فِيمَا وَصَفْنَا دُونَهُمْ، فَإِنَّ اسْمَ السَّتْرِ، وَالصِّدْقِ، وَتَعَاطِي الْعِلْمِ يَشْمَلُهُمْ كَعَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ،

السَّائِبِ، وَيَزِيدَ بْنِ أَبِي زِيَادٍ، وَلَيْثِ بْنِ أَبِي سُلَيْمٍ، وَأَضْرَابِهِمْ مِنْ حُمَّالِ الْآثَارِ، وَنُقَّالِ الْأَخْبَارِ

करने वाले रावी हैं ।

فَهُمْ وَإِنْ كَانُوا بِمَا وَصَفْنَا مِنَ الْعِلْمِ، وَالسَّتْرِ عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ مَعْرُوفِينَ، فَغَيْرُهُمْ مِنْ أَقْرَانِهِمْ مِمَّنْ عِنْدَهُمْ مَا ذَكَرْنَا مِنَ الْإِتْقَانِ، وَالِاسْتِقَامَةِ فِي الرِّوَايَةِ يَفْضُلُونَهُمْ فِي الْحَالِ وَالْمَرْتَبَةِ، لِأَنَّ هَذَا عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ دَرَجَةٌ رَفِيعَةٌ، وَخَصْلَةٌ سَنِيَّةٌ

यह हज़रात बावजूद इसके कि अहले इल्म के नज़दीक इल्म और सदाक़त में मशहूर हैं लेकिन इनके साथ के कुछ हज़रात ऐसे हैं जो रिवायत को लेने में और रिवायत की सेहत के मामले में अपने मक़ाम और मर्तबे के ऐतबार से इनसे अफज़ल हैं । इसकी वजह यह है कि अहले इल्म के पास यह एक बहुत ऊँचा मर्तबा और एक बहुत बुलंद सिफ़त है ।

أَلَا تَرَى أَنَّكَ إِذَا وَازَنْتَ هَؤُلَاءِ الثَّلَاثَةَ الَّذِينَ سَمَّيْنَاهُمْ عَطَاءً، وَيَزِيدَ، وَلَيْثًا، بِمَنْصُورِ بْنِ الْمُعْتَمِرِ، وَسُلَيْمَانَ الْأَعْمَشِ، وَإِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ فِي إِتْقَانِ الْحَدِيثِ وَالِاسْتِقَامَةِ فِيهِ، وَجَدْتَهُمْ مُبَايِنِينَ لَهُمْ، لَا يُدَانُونَهُمْ لَا شَكَّ عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ بِالْحَدِيثِ فِي ذَلِكَ، لِلَّذِي اسْتَفَاضَ عِنْدَهُمْ مِنْ صِحَّةِ حِفْظِ مَنْصُورٍ، وَالْأَعْمَشِ، وَإِسْمَاعِيلَ، وَإِتْقَانِهِمْ لِحَدِيثِهِمْ، وَأَنَّهُمْ لَمْ يَعْرِفُوا مِثْلَ ذَلِكَ مِنْ عَطَاءٍ، وَيَزِيدَ، وَلَيْثٍ

आप देखते नहीं कि इन तीनो हज़रात: अता, यज़ीद और लैस, जिनका हमने अभी नाम लिया, का मुक़ाबला हदीस के हिफ्ज़ और पुख्तगी में मन्सूर बिन मोतमिर, सुलेमान आमश और इसमाईल बिन अबी ख़ालिद से करें तो इन्हें आप उन हज़रात से ख़ासे फ़ासले पर पाएंगे, यह इनके क़रीब भी नहीं आ पाते । माहिरीन इल्मे हदीस को इस बारे में कोई शक नहीं कि मन्सूर, आमश और इसमाईल हिफ्ज़ हदीस और हदीस बयान करने में जो महारत रखते हैं वो अता, यज़ीद और लैस नहीं रखते ।

وَفِي مِثْلِ مَجْرَى هَؤُلَاءِ إِذَا وَازَنْتَ بَيْنَ الْأَقْرَانِ كَابْنِ عَوْنٍ، وَأَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ، مَعَ عَوْفِ بْنِ أَبِي جَمِيلَةَ، وَأَشْعَثَ الْحُمْرَانِيِّ، وَهُمَا صَاحِبَا الْحَسَنِ، وَابْنِ سِيرِينَ، كَمَا أَنَّ ابْنَ عَوْنٍ، وَأَيُّوبَ صَاحِبَاهُمَا، إِلَّا أَنَّ الْبَوْنَ بَيْنَهُمَا، وَبَيْنَ هَذَيْنِ بَعِيدٌ فِي كَمَالِ الْفَضْلِ، وَصِحَّةِ النَّقْلِ، وَإِنْ كَانَ عَوْفٌ، وَأَشْعَثُ غَيْرَ مَدْفُوعَيْنِ عَنْ صِدْقٍ وَأَمَانَةٍ عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ، وَلَكِنَّ الْحَالَ مَا وَصَفْنَا مِنَ الْمَنْزِلَةِ عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ

अगर आप अन्य एक वक़्त के रावियों का मुक़ाबला करें तो भी यहीं माजरा सामने आता है जैसे आप इब्ने ऑन और अय्यूब सख़तियानी का मुक़ाबला ऑफ बिन अबी जमीला और अशअस हमरानी से करें । यह दोनों भी इसी तरह हसन बसरी और इब्ने सीरीन के शागिर्द हैं जिस तरह इब्ने ऑन और अय्यूब इनके शागिर्द हैं लेकिन उन दोनों और इन दोनों के बीच में हदीस को नक़ल के ऐतबार से बहुत बड़ा फ़ासला पाया जाता है । ऑफ और अशअस भी बावजूद इसके कि अहले इल्म के नज़दीक सच्चाई और अमानत से हटे हुए नहीं माने जाते लेकिन जहाँ तक मर्तबे का तअल्लुक़ है तो अहले इल्म के नज़दीक बात वही है जो हमने बयान की है ।

وَإِنَّمَا مَثَّلْنَا هَؤُلَاءِ فِي التَّسْمِيَةِ لِيَكُونَ تَمْثِيلُهُمْ سِمَةً يَصْدُرُ عَنْ فَهْمِهَا مَنْ غَبِيَ عَلَيْهِ طَرِيقُ أَهْلِ الْعِلْمِ فِي تَرْتِيبِ أَهْلِهِ فِيهِ، فَلَا يُقَصِّرُ بِالرَّجُلِ الْعَالِي الْقَدْرِ عَنْ دَرَجَتِهِ، وَلَا يُرْفَعُ مُتَّضِعُ الْقَدْرِ فِي الْعِلْمِ فَوْقَ مَنْزِلَتِهِ، وَيُعْطَى كُلُّ ذِي حَقٍّ فِيهِ حَقَّهُ، وَيُنَزَّلُ مَنْزِلَتَهُ

हमने नाम ज़िक्र करके मिसाल इसलिए दी है ताकि उस शख़्स के लिए, जिसको यह नहीं पता कि अहले इल्म ने लोगो के अलग अलग दर्जे बयान किये हैं जान लें इस मिसाल के ज़रिये और ऊँचा दर्जा रखने वाले को उसके मर्तबे से न घटाए और न कम दर्जे वाले को उसके मर्तबे से बढाएँ, हर एक को उसका हक़ दें और उसके मर्तबे पर रखे ।

وَقَدْ ذُكِرَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا، أَنَّهَا قَالَتْ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُنَزِّلَ النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ مَعَ مَا نَطَقَ بِهِ الْقُرْآنُ، مِنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: {وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ} [يوسف: 76]

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत बयान की गयी, उन्होंने कहा: हमें रसूलुल्लाह ने हुक्म दिया था कि हम लोगो को उनके मक़ाम पर रखें ।[1] इसके साथ ही अल्लाह का हुक्म है जो क़ुरान ने बयान फ़रमाया: "हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म रखने वाला है ।" [युसूफ़: 76]

فَعَلَى نَحْوِ مَا ذَكَرْنَا مِنَ الْوُجُوهِ، نُؤَلِّفُ مَا سَأَلْتَ مِنَ الْأَخْبَارِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसो को जो आपने हमसे मुतालबा किया है, इसी तरह ज़िक्र करेंगे जैसे हमने ऊपर बयान किया है ।

فَأَمَّا مَا كَانَ مِنْهَا عَنْ قَوْمٍ هُمْ عِنْدَ أَهْلِ الْحَدِيثِ مُتَّهَمُونَ، أَوْ عِنْدَ الْأَكْثَرِ مِنْهُمْ، فَلَسْنَا نَتَشَاغَلُ بِتَخْرِيجِ حَدِيثِهِمْ، كَعَبْدِ اللهِ بْنِ مِسْوَرٍ أَبِي جَعْفَرٍ الْمَدَائِنِيِّ، وَعَمْرِو بْنِ خَالِدٍ، وَعَبْدِ الْقُدُّوسِ الشَّامِيِّ، وَمُحَمَّدِ بْنِ سَعِيدٍ الْمَصْلُوبِ، وَغِيَاثِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، وَسُلَيْمَانَ بْنِ عَمْرٍو أَبِي دَاوُدَ النَّخَعِيِّ، وَأَشْبَاهِهِمْ مِمَّنِ اتُّهِمَ بِوَضْعِ الْأَحَادِيثِ، وَتَوْلِيدِ الْأَخْبَارِ

जो हदीसे उन लोगो से मरवी हैं जो सारे इल्मे हदीस के महिरीन या उनमे से ज़्यादातर के नज़दीक मुतहम (जो आम बोलचाल में झूट बोलता हो), हम उनकी रिवायत से कोई मतलब नहीं रखेंगे, जैसे अब्दुल्लाह बिन मिसवर अबू जाफ़र मदाइनी, अम्र बिन ख़ालिद, अब्दुल क़ुद्दूस शामी, मुहम्मद बिन सईद मसलूब, ग़ियास बिन इब्राहीम, सुलेमान बिन अम्र अबू दावूद नख़ई और इन जैसे रिवायत करने वाले लोगो से भी, जिन पर हदीस घड़ने और रिवायत साज़ी के इल्ज़ामात हैं ।

وَكَذَلِكَ، مَنِ الْغَالِبُ عَلَى حَدِيثِهِ الْمُنْكَرُ، أَوِ الْغَلَطُ أَمْسَكْنَا أَيْضًا عَنْ حَدِيثِهِمْ

इसी तरह वह लोग जिनकी रिवायते ज़्यादातर मुनकर और गलत हदीसो पर आधारित हैं, हम उनकी हदीसो से भी परहेज़ करेंगे ।

1. यह हदीस सुनन अबू दावूद (4842) में ज़ईफ़ सनद से मरफ़ू बयान हुई है, हज़रत इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैहि इस बात को जानते थे, इसलिए उन्होंने इमाम बुख़ारी और कई मुहद्दीस्सीन के तरीक़े पर मजहूल सीगे "ذُكِرَ" कह कर इसके ज़ोफ़ की तरफ़ इशारा कर दिया है ।

وَعَلَامَةُ الْمُنْكَرِ فِي حَدِيثِ الْمُحَدِّثِ، إِذَا مَا عُرِضَتْ رِوَايَتُهُ لِلْحَدِيثِ عَلَى رِوَايَةِ غَيْرِهِ مَنْ أَهْلِ الْحِفْظِ وَالرِّضَا، خَالَفَتْ رِوَايَتُهُ رِوَايَتَهُمْ، أَوْ لَمْ تَكَدْ تُوَافِقُهَا، فَإِذَا كَانَ الْأَغْلَبُ مِنْ حَدِيثِهِ كَذَلِكَ كَانَ مَهْجُورَ الْحَدِيثِ، غَيْرَ مَقْبُولِهِ، وَلَا مُسْتَعْمَلِهِ

किसी हदीस बयान करने वाले की मुनकर रिवायत की निशानी यह है कि जब उसकी रिवायत की हुई हदीसो की तुलना दुसरे किसी अच्छे हाफ्ज़े वाले और मक़बूल रावी की हदीसो से की जाती है तो वह इनकी रिवायतो के खिलाफ़ हो या इनके साथ मुवाफ़िक़ न हो, जब किसी की ज़्यादातर रिवायते इस तरह की हों तो वह मतरूकुल हदीस होता है, उसकी रिवायते क़ुबूल नहीं की जाती हैं और उनका इस्तेमाल नहीं होता है ।

فَمِنْ هَذَا الضَّرْبِ مِنَ الْمُحَدِّثِينَ: عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَرَّرٍ، وَيَحْيَى بْنُ أَبِي أُنَيْسَةَ، وَالْجَرَّاحُ بْنُ الْمِنْهَالِ أَبُو الْعَطُوفِ، وَعَبَّادُ بْنُ كَثِيرٍ، وَحُسَيْنُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ ضُمَيْرَةَ، وَعُمَرُ بْنُ صُهْبَانَ، وَمَنْ نَحَا نَحْوَهُمْ فِي رِوَايَةِ الْمُنْكَرِ مِنَ الْحَدِيثِ، فَلَسْنَا نُعَرِّجُ عَلَى حَدِيثِهِمْ، وَلَا نَتَشَاغَلُ بِهِ

इस क़िस्म के रावियों में अब्दुल्लाह बिन मुर्हरर, यहया बिन अबू उनैसा, जर्राह बिन मिनहाल अबू अतूफ़, अब्बाद बिन कसीर, हुसैन बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुमैरह, उमर बिन सोहबान और इस तरह के अन्य मुनकर रिवायाते बयान करने वाले लोग शामिल हैं, हम उनकी रिवायतो से कोई मतलब नहीं रखेंगे और न उनकी तरफ़ ध्यान देंगे ।

لِأَنَّ حُكْمَ أَهْلِ الْعِلْمِ، وَالَّذِي نَعْرِفُ مِنْ مَذْهَبِهِمْ فِي قَبُولِ مَا يَتَفَرَّدُ بِهِ الْمُحَدِّثُ مِنَ الْحَدِيثِ أَنْ يَكُونَ قَدْ شَارَكَ الثِّقَاتِ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ وَالْحِفْظِ فِي بَعْضِ مَا رَوَوْا، وَأَمْعَنَ فِي ذَلِكَ عَلَى الْمُوَافَقَةِ لَهُمْ، فَإِذَا وُجِدَ كَذَلِكَ، ثُمَّ زَادَ بَعْدَ ذَلِكَ شَيْئًا لَيْسَ عِنْدَ أَصْحَابِهِ قُبِلَتْ زِيَادَتُهُ، فَأَمَّا مَنْ تَرَاهُ يَعْمِدُ لِمِثْلِ الزُّهْرِيِّ فِي جَلَالَتِهِ، وَكَثْرَةِ أَصْحَابِهِ الْحُفَّاظِ الْمُتْقِنِينَ لِحَدِيثِهِ وَحَدِيثِ غَيْرِهِ، أَوْ لِمِثْلِ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، وَحَدِيثُهُمَا عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ مَبْسُوطٌ مُشْتَرَكٌ، قَدْ نَقَلَ أَصْحَابُهُمَا عَنْهُمَا حَدِيثَهُمَا عَلَى الِاتِّفَاقِ مِنْهُمْ فِي أَكْثَرِهِ، فَيَرْوِي عَنْهُمَا، أَوْ عَنْ أَحَدِهِمَا الْعَدَدَ مِنَ الْحَدِيثِ مِمَّا لَا يَعْرِفُهُ أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِهِمَا، وَلَيْسَ مِمَّنْ قَدْ شَارَكَهُمْ فِي الصَّحِيحِ مِمَّا

क्यूंकि हदीस में अकेल रिवायत करने वाले रावी की रिवायत क़ुबूल करने के बारे में अहले इल्म का मशहूर मज़हब और उनका फ़ैसला यह है कि अगर वह (रावी) आम तौर पर अहले इल्म, हिफ्ज़ और सच्चे रावियों के अनुकूल रिवायत बयान करता है तो ऐसी सूरत में अगर वह कोई ऐसा इज़ाफा बयान करता है जो उसके दुसरे साथियों के पास नहीं हैं तो उसका यह इज़ाफा (मुहद्दिस्सीन के नज़दीक) क़ुबूल किया जायेगा, लेकिन जिस हदीस बयान करने वाले को आप देखें कि वह इमाम ज़ोहरी जैसे चोटी के मुहद्दिस से रिवायत बयान करता है जिनके बहुत सारे शागिर्द ऐसे हैं जो हुफ्फाज़े हदीस हैं, उनकी और दुसरे मुहद्दिस्सीन की रिवायत के माहिर हैं या वह हिशाम बिन उरवा जैसे (ताबई के इमाम) से रिवायत करता है, इन दोनों की हदीसे तो अहले इल्म के पास ख़ूब फैली हुई हैं, वो सब इनकी रिवायत में एक दुसरे के साथ सांझा रखते हैं और इन दोनों की ज़्यादातर हदीसो में इनके शागिर्द एक दुसरे से सहमत हैं और यह शख्स इन दोनों या इनमे से किसी एक से कई सारी ऐसी हदीसे रिवायत करे जिनमे इनके शागिर्दों में से

الصَّحِيحِ مِمَّا عِنْدَهُمْ، فَغَيْرُ جَائِزٍ قَبُولُ حَدِيثِ هَذَا الضَّرْبِ مِنَ النَّاسِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ

इसके साथ कोई और शरीक नहीं तो इस जैसे लोगो से इस क़िस्म की कोई हदीस क़ुबूल करना जायज़ नहीं, अल्लाह ही ज़्यादा जानने वाला है ।

قَدْ شَرَحْنَا مِنْ مَذْهَبِ الْحَدِيثِ وَأَهْلِهِ بَعْضَ مَا يَتَوَجَّهُ بِهِ مَنْ أَرَادَ سَبِيلَ الْقَوْمِ، وَوُفِّقَ لَهَا، وَسَنَزِيدُ، إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى شَرْحًا وَإِيضَاحًا فِي مَوَاضِعَ مِنَ الْكِتَابِ عِنْدَ ذِكْرِ الْأَخْبَارِ الْمُعَلَّلَةِ، إِذَا أَتَيْنَا عَلَيْهَا فِي الْأَمَاكِنِ الَّتِي يَلِيقُ بِهَا الشَّرْحُ وَالْإِيضَاحُ، إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

हमने हदीस और असहाबे हदीस (मुहद्दिस्सीन) के तरीक़ेकार का कुछ हिस्सा हर उस शख्स की तवज्जो के लिए जो उनके रास्ते पर चलना चाहता है और जिसे उसकी तौफ़ीक़ नसीब होती है, तफ़सील से बयान कर दिया है । इन शा अल्लाह हम (हम इस तरीक़ेकार की) अधिक शरह और वज़ाहत किताब के उन जगहों पर करेंगे जहाँ मालूल हदीसे (जिनमे कोई छुपी हुई इल्लत पाई जाती है) का ज़िक्र होगा, यानि जब हम वहां पहुंचेंगे जहाँ इसकी शरह और वज़ाहत का मुनासिब मौक़ा होगा । इन शा अल्लाह तआला

وَبَعْدُ، يَرْحَمُكَ اللَّهُ، فَلَوْلَا الَّذِي رَأَيْنَا مِنْ سُوءِ صَنِيعِ كَثِيرٍ مِمَّنْ نَصَبَ نَفْسَهُ مُحَدِّثًا، فِيمَا يَلْزَمُهُمْ مِنْ طَرْحِ الْأَحَادِيثِ الضَّعِيفَةِ، وَالرِّوَايَاتِ الْمُنْكَرَةِ، وَتَرْكِهِمُ الِاقْتِصَارَ عَلَى الْأَحَادِيثِ الصَّحِيحَةِ الْمَشْهُورَةِ مِمَّا نَقَلَهُ الثِّقَاتُ الْمَعْرُوفُونَ بِالصِّدْقِ وَالْأَمَانَةِ، بَعْدَ مَعْرِفَتِهِمْ وَإِقْرَارِهِمْ بِأَلْسِنَتِهِمْ أَنَّ كَثِيرًا مِمَّا يَقْذِفُونَ بِهِ إِلَى الْأَغْبِيَاءِ مِنَ النَّاسِ هُوَ مُسْتَنْكَرٌ، وَمَنْقُولٌ عَنْ قَوْمٍ غَيْرِ مَرْضِيِّينَ مِمَّنْ ذَمَّ الرِّوَايَةَ عَنْهُمْ أَئِمَّةُ أَهْلِ الْحَدِيثِ مِثْلُ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، وَشُعْبَةَ بْنِ الْحَجَّاجِ، وَسُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ، وَيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الْقَطَّانِ، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَهْدِيٍّ، وَغَيْرِهِمْ مِنَ الْأَئِمَّةِ، لَمَا سَهُلَ عَلَيْنَا الِانْتِصَابُ لِمَا سَأَلْتَ مِنَ التَّمْيِيزِ، وَالتَّحْصِيلِ

इस (वज़ाहत) के बाद अल्लाह आप पर रहम फरमाए! अगर हमने अपने आपको मुहद्दिस के मंसब पर फाईज़ करने वाले बहुत से लोगो को ज़ईफ़ हदीसो और मुनकर रिवायतो को छोड़ने के बारे, जिनका छोड़ना उनके लिए ज़रूरी था, गलत रवय्या न देखा होता और अगर उन्होंने सहीह रिवायत के बयान पर ही भरोसा करने को छोड़ा न होता, जिन्हें सिक़ा रावियों ने बयान किया जो सच्चाई और अमानत में मशहूर हैं, वह भी उनके इस रवय्ये पर कि जो कुछ वह सीधे साधे कम अक़ल लोगो के सामने बयान किये जा रहे हैं, उसका ज़्यादा हिस्सा ग़ैर मक़बूल है, उन लोगो से नक़ल किया गया है जिनसे रिवायत लेने पर अहले इल्म राज़ी नहीं और जिनसे रिवायत करने को बड़े बड़े आइमा हदीस, जैसे मालिक बिन अनस, शोबा बिन हज्जाज, सुफियान बिन उयैयना, याहया बिन सईद क़त्तान, अब्दुर रहमान बिन महदी आदि बुरा समझते हैं । अगर हमने यह सब न देखा होता तो आपने सहीह और ज़ईफ़ में फ़र्क़ और सिर्फ़ सहीह को हासिल करने के हवाले से जो मुतालबा किया है उसे क़ुबूल करना आसान न होता ।

وَلَكِنْ مِنْ أَجْلِ مَا أَعْلَمْنَاكَ مِنْ نَشْرِ الْقَوْمِ الْأَخْبَارَ الْمُنْكَرَةَ بِالْأَسَانِيدِ الضِّعَافِ الْمَجْهُولَةِ، وَقَذْفِهِمْ بِهَا إِلَى الْعَوَامِّ الَّذِينَ لَا يَعْرِفُونَ عُيُوبَهَا، خَفَّ عَلَى قُلُوبِنَا

लेकिन जिस तरह हमने आपको क़ौम की तरफ़ से कमज़ोर और मजहूल सनदो से बयान की गयी मुनकर हदीसो को बयान करने और उन्हें ऐसे लोगो में, जो इन हदीसो के ऐब को नहीं जानते हैं, फैलाने के बारे में बयाया तो सिर्फ़ इसी

إِجَابَتُكَ إِلَى مَا سَأَلْتَ

वजह से हमारे दिल के लिए आपके मुतालबे को मानना आसन हुआ ।

بَابُ وُجُوبِ الرِّوَايَةِ عَنِ الثِّقَاتِ، وَتَرْكِ الْكَذَّابِينَ وَالتَّحْذِيرِ مِنَ الْكَذِبِ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

बाब 1 : सिक़ा रावियों से हदीस बयान करना, कज्ज़ाबो (झूटों) को छोड़ने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूट बांधने से बचना वाजिब है ।

وَاعْلَمْ وَفَّقَكَ اللهُ تَعَالَى أَنَّ الْوَاجِبَ عَلَى كُلِّ أَحَدٍ عَرَفَ التَّمْيِيزَ بَيْنَ صَحِيحِ الرِّوَايَاتِ وَسَقِيمِهَا، وَثِقَاتِ النَّاقِلِينَ لَهَا مِنَ الْمُتَّهَمِينَ، أَنْ لَا يَرْوِيَ مِنْهَا إِلَّا مَا عَرَفَ صِحَّةَ مَخَارِجِهِ، وَالسِّتَارَةَ فِي نَاقِلِيهِ، وَأَنْ يَتَّقِيَ مِنْهَا مَا كَانَ مِنْهَا عَنْ أَهْلِ التُّهَمِ وَالْمُعَانِدِينَ مِنْ أَهْلِ الْبِدَعِ

अल्लाह आपको तौफ़ीक़ से नवाज़े! आप जान लें कि हर ऐसे इन्सान पर जो सहीह और ज़ईफ़ रिवायते, सिक़ा और झूटे रावियों के बीच पहचान कर सकता है, उस पर यह फ़र्ज़ है कि वह उन हदीसो के सिवा, जिनके सहीह तुर्क से हासिल होने का और जिनके नक़ल करने वालो के सिक़ा होने का इल्म है, कोई और रिवायत बयान न करे और उन रिवायतो से बचे जो झूटे लोगो और बिदअत करने वाले लोगो से मरवी हो ।

وَالدَّلِيلُ عَلَى أَنَّ الَّذِي قُلْنَا مِنْ هَذَا هُوَ اللَّازِمُ دُونَ مَا خَالَفَهُ، قَوْلُ اللهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ} [الحجرات: 6]، وَقَالَ جَلَّ ثَنَاؤُهُ: {مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ} [البقرة: 282]، وَقَالَ عَزَّ وَجَلَّ: {وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِنْكُمْ} [الطلاق: 2]، فَدَلَّ بِمَا ذَكَرْنَا مِنْ هَذِهِ الْآيِ أَنَّ خَبَرَ الْفَاسِقِ سَاقِطٌ غَيْرُ مَقْبُولٍ، وَأَنَّ شَهَادَةَ غَيْرِ الْعَدْلِ مَرْدُودَةٌ

इस बारे में हमने जो कहा, उसके ख़िलाफ़ को छोड़ते हुए इसी को इख़्तियार करना लाज़िम है, इसकी दलील, अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: “ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ (गुनाहगार) तुम्हारे पास कोई ख़बर ले कर आये तो तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी क़ौम पर नादानी से जा पड़ो, फ़िर अपने किये पर पछताने लगो ।” [हुजरात: 6] और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “उन गवाहों में से जो तुम्हें पसंद हों ।” [बक़रः: 282] इसी तरह अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “अपने में से दो मोतबर लोगो को गवाह बना लो ।” [तलाक़: 2]

इन सब आयतों से साबित हुआ कि फ़ासिक़ की पहुंचाई हुई ख़बर ऐतबार के लायक़ नहीं और क़ुबूल करने के लायक़ नहीं है और जो शख़्स आदिल नहीं उसकी गवाही मरदूद है ।

وَالْخَبَرُ وَإِنْ فَارَقَ مَعْنَاهُ مَعْنَى الشَّهَادَةِ فِي بَعْضِ الْوُجُوهِ، فَقَدْ يَجْتَمِعَانِ فِي أَعْظَمِ مَعَانِيهِمَا، إِذْ كَانَ خَبَرُ الْفَاسِقِ غَيْرَ مَقْبُولٍ عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ كَمَا أَنَّ شَهَادَتَهُ

हालांकि कुछ वजहों से शहादत गवाही से अलग अर्थ रखता है लेकिन दोनों अपने बुनयादी अर्थ में एक ही जैसे हैं । जहाँ अहले इल्म के नज़दीक फ़ासिक़ की ख़बर क़ुबूल करने के लायक़ नहीं हैं वहां उन सब के नज़दीक उसकी गवाही भी मरदूद है । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

مَرْدُودَةٌ عِنْدَ جَمِيعِهِمْ، وَدَلَّتِ السُّنَّةُ عَلَى نَفْيِ رِوَايَةِ الْمُنْكَرِ مِنَ الأَخْبَارِ كَنَحْوِ دَلاَلَةِ الْقُرْآنِ عَلَى نَفْيِ خَبَرِ الْفَاسِقِ وَهُوَ الأَثَرُ الْمَشْهُورُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ حَدَّثَ عَنِّي بِحَدِيثٍ يُرَى أَنَّهُ كَذِبٌ، فَهُوَ أَحَدُ الْكَاذِبِينَ

सुन्नत भी मुनकर रिवायतो को उसी तरह क़ुबूल करने से रोकती है जिस तरह से क़ुरान फ़ासिक़ की ख़बर को क़ुबूल करने से मना करने पर दलालत करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मरवी मशहूर हदीस: "जिसने मुझसे ऐसी हदीस बयान की जिसे वह जानता है कि झूट है तो वह दो झूटों में से एक झूटा है।"

[١] حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ أَيْضًا، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، وَسُفْيَانَ، عَنْ حَبِيبٍ، عَنْ مَيْمُونِ بْنِ أَبِي شَبِيبٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَلِكَ

[1] हमसे से अबू बक्र बिन अबी शैबा ने हदीस बयान की, कहा: हमसे वकीअ ने हदीस बयान की, उन्होंने शोबा से, उन्होंने हज़रत समरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत की। इसी तरह हमसे अबू बक्र बिन अबी शैबा ही ने हदीस बयान की, कहा: हमसे वकीअ ने हदीस बयान की, उन्होंने शोबा और सुफ़ियान से, उन्होंने हबीब से, उन्होंने मैमून बिन अबी शबीब से और उन्होंने हज़रत मुगीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत की, दोनों ने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया था।

بَابُ فِي التَّحْذِيرِ مِنَ الْكَذِبِ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

बाब 2 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूट बोलने के बारे में सख़्ती

[٢]١-(١) وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ بَشَّارٍ، قَالَا :حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، أَنَّهُ سَمِعَ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَخْطُبُ، قَالَ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لَا تَكْذِبُوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ يَكْذِبْ عَلَيَّ يَلِجِ النَّارَ

[2] रिबअी बिन हिराश ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ुत्बा देते हुए यह फ़रमाते हुए सुना: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझ पर झूट न बोलो, बेशक जिसने मुझे पर झूट बोला वह जहन्नम में दाख़िल होगा।"

[٣]٢-(٢) وحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ يَعْنِي ابْنَ عُلَيَّةَ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ قَالَ :إِنَّهُ لَيَمْنَعُنِأَنْ أُحَدِّثَكُمْ حَدِيثًا كَثِيرًا

[3] हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहू से रिवायत है, कहा: मुझे तुम्हारे सामने ज़्यादा हदीसे बयान करने से यह बात रोकती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था: "जिसने जानबूझ कर मुझ पर झूट बोला वह

كَثِيرًا أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ : مَنْ تَعَمَّدَ عَلَيَّ كَذِبًا ، فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ

आग में अपना ठिकाना बना ले ।"

[٤]٣-(٣) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْغُبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا، فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ

[4] हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है, कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिसने जानबूझ कर मुझ पर झूट बोला वह आग में अपना ठिकाना बना ले ।"

[٥]٤-(٤) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ رَبِيعَةَ، قَالَ: أَتَيْتُ الْمَسْجِدَ وَالْمُغِيرَةُ أَمِيرُ الْكُوفَةِ، قَالَ: فَقَالَ الْمُغِيرَةُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: «إِنَّ كَذِبًا عَلَيَّ لَيْسَ كَكَذِبٍ عَلَى أَحَدٍ، فَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا، فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ»

[5] सईद बिन उबैद ने कहा: हमें अली बिन रबीअ वालिबी ने हदीस बयान की, कहा: मैं मस्जिद में आया और (उस वक़्त) हज़रत मुगीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहू अन्हु कूफ़ा के गवर्नर थे, मुगीरा ने कहा: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फ़रमा रहे थे: "मुझ पर झूट बोलना इस तरह नहीं जैसे मेरे अलावा किसी एक आम आदमी पर झूट बोलना है, जिसने जानबूझ कर मुझ पर झूट बोला वह जहन्नम में अपना ठिकाना बना ले ।"

[٦] وحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ قَيْسٍ الْأَسَدِيُّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ رَبِيعَةَ الْأَسَدِيِّ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِثْلِهِ، وَلَمْ يَذْكُرْ: إِنَّ كَذِبًا عَلَيَّ لَيْسَ كَكَذِبٍ عَلَى أَحَدٍ

[6] मुहम्मद बिन क़ैस असअदी ने अली बिन रबीअ असअदी से उन्होंने हज़रत मुगीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसी तरह रिवायत की लेकिन "बेशक मुझ पर झूट बोलना उस तरह नहीं जैसे किसी एक आम आदमी पर झूट बोलना है" बयान नहीं किया ।

بَابُ النَّهْيِ عَنِ الْحَدِيثِ بِكُلِّ مَا سَمِعَ

बाब 3 : हर सुनी सुनाई बात बयान करने की मनाही

[٧]٥-(٥) وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ قَالَا: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

[7] अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "आदमी के झूटा होने के लिए यही काफ़ी है कि वह हर सुनी हुई बात (बिना तहक़ीक़) बयान कर दे ।"

قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَفَى بِالْمَرْءِ كَذِبًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ»

[٨] وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِثْلِ ذَلِكَ

[8] अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसी जैसी रिवायत की।

[٩] وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ: بِحَسْبِ الْمَرْءِ مِنَ الْكَذِبِ أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ

[9] अबू उस्मान नहदी से रिवायत है, कहा: उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहू अन्हु ने फ़रमाया: आदमी के लिए झूटा होने के लिए यही काफ़ी है कि वह हर सुनी हुई बात बयान कर दे।

[١٠] وحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: قَالَ لِي مَالِكٌ: اعْلَمْ أَنَّهُ لَيْسَ يَسْلَمُ رَجُلٌ حَدَّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ، وَلَا يَكُونُ إِمَامًا أَبَدًا وَهُوَ يُحَدِّثُ بِكُلِّ مَا سَمِعَ

[10] इब्ने वहब ने ख़बर दी, कहा: मालिक बिन अनस ने मुझसे कहा: मुझे मालूम है कि ऐसा आदमी सही सालिम नहीं होता जो हर सुनी हुई बात आगे बयान कर दे, वह कभी इमाम नहीं बन सकता जो हर सुनी हुई बात आगे बयान कर देता है।

[١١] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الْأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: بِحَسْبِ الْمَرْءِ مِنَ الْكَذِبِ أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ

[11] अबू अहवस ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत की, कहा: आदमी के झूट में यही काफ़ी है कि वह हर सुनी हुई बात बयान कर दे।

[١٢] وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ مَهْدِيٍّ، يَقُولُ: لَا يَكُونُ الرَّجُلُ إِمَامًا يُقْتَدَى بِهِ حَتَّى يُمْسِكَ عَنْ بَعْضِ مَا سَمِعَ

[12] मुहम्मद बिन मुसन्ना ने कहा: मैंने अब्दुर रहमान बिन महदी से सुना, कह रहे थे: आदमी उस वक़्त तक इमाम नहीं बन सकता कि लोग उसकी बात माने जब तक वो सुनी सुनाई बातों को बयान करने से रुक न जाये।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيِّ بْنِ مُقَدَّمٍ، عَنْ سُفْيَانَ بْنِ حُسَيْنٍ، قَالَ: سَأَلَنِي إِيَاسُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ: إِنِّي أَرَاكَ قَدْ كَلِفْتَ بِعِلْمِ الْقُرْآنِ، فَاقْرَأْ عَلَيَّ

[13] सुफ़ियान बिन हुसैन से रिवायत है, कहा: इयास बिन मुआविया ने मुझसे कहा: मैं तुम्हे देखता हूँ कि तुम क़ुरान के इल्म का बहुत ज़्यादा शौक़ रखते हो, तुम मेरे सामने एक सुरह पढ़ो और उसकी तफ़सीर करो ताकि जो तुम्हे इल्म है मैं भी उसे देखूं। कहा: मैंने ऐसा किया तो उन्होंने

سُورَةً، وَفَسِّرْ حَتَّى أَنْظُرَ فِيمَا عَلِمْتَ، قَالَ: فَفَعَلْتُ، فَقَالَ لِي: احْفَظْ عَلَيَّ مَا أَقُولُ لَكَ: «إِيَّاكَ وَالشَّنَاعَةَ فِي الْحَدِيثِ، فَإِنَّهُ قَلَّمَا حَمَلَهَا أَحَدٌ إِلَّا ذَلَّ فِي نَفْسِهِ، وَكُذِّبَ فِي حَدِيثِهِ»

मुझसे फ़रमाया: जो बात मैं तुमसे कहने लगा हूँ उसे मेरे तरफ़ से हमेशा याद रखना, नापसंदीदा (मुनकर) रिवायतो को बयान करने से बचना! क्यूंकि ऐसा न होने के बराबर है कि किसी ने यह काम किया हो (मुनकर रिवायते बयान कीं) और वह अपनी ज़ात में ज़लील न हुआ हो और उसकी बयान की हुई हदीस को झूटा न समझा गया हो ।

[١٤] وحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالَا: أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ، قَالَ: «مَا أَنْتَ بِمُحَدِّثٍ قَوْمًا حَدِيثًا لَا تَبْلُغُهُ عُقُولُهُمْ، إِلَّا كَانَ لِبَعْضِهِمْ فِتْنَةً»

[14] हज़रत अबुद्ल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु ने फ़रमाया: तुम किसी क़ौम के सामने ऐसी हदीस बयान नहीं करते जिसके सहीह मफ़हूम तक उनकी अक़्ले नहीं पहुँच सकतीं मगर वह उनमें से कुछ के लिए फ़ितने की वजह बन जाती है (इसलिए लोगो की अक़्लो के हिसाब से बात करो) ।

بَابُ النَّهْيِ عَنِ الرِّوَايَةِ عَنِ الضُّعَفَاءِ وَالِاحْتِيَاطِ فِي تَحَمُّلِهَا

बाब 4 : ज़ईफ़ रावियों से रिवायत की मनाही और रिवायत की (हिफाज़त और बयान की) ज़िम्मेदारी उठाते हुए एहतियात

[١٥]٦-(٦) وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هَانِئٍ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ مُسْلِمِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ قَالَ: سَيَكُونُ فِي آخِرِ أُمَّتِي أُنَاسٌ يُحَدِّثُونَكُمْ مَا لَمْ تَسْمَعُوا أَنْتُمْ، وَلَا آبَاؤُكُمْ، فَإِيَّاكُمْ وَإِيَّاهُمْ

[15] अबू हानी ने अबू उस्मान मुस्लिम बिन यसार से, उन्होंने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की कि आपने फ़रमाया: “मेरी उम्मत के आख़िरी ज़माने में ऐसे लोग होंगे जो तुम्हारे सामने ऐसी हदीसें बयान करेंगे जो न तुमने सुनी होंगी और न तुम्हारे बाप दादो ने, तुम इस तरह के लोगो से दूर रहना ।”

وحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَرْمَلَةَ بْنِ عِمْرَانَ التُّجِيبِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو شُرَيْحٍ أَنَّهُ سَمِعَ شَرَاحِيلَ بْنَ يَزِيدَ، يَقُولُ: أَخْبَرَنِي مُسْلِمُ بْنُ يَسَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ، يَأْتُونَكُمْ مِنَ الْأَحَادِيثِ بِمَا لَمْ

[16] मुस्लिम बिन यसार ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु को यह कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया: “आख़िरी ज़माने में ऐसे दज्जाल (धोकेबाज़) कज़्ज़ाब (झूटे) होंगे जो तुम्हारे पास ऐसी हदीसे लायेंगे जो न तुमने सुनी होगी और न तुम्हारे बाप दादो ने सुनी होगी, तुम उनसे दूर रहना कहीं वह तुम्हें गुमराह न कर दें और तुम्हें फ़ितने में न डाल दें ।”

تَسْمَعُوا أَنْتُمْ، وَلَا آبَاؤُكُمْ، فَإِيَّاكُمْ وَإِيَّاهُمْ، لَا يُضِلُّونَكُمْ، وَلَا يَفْتِنُونَكُمْ

[१७] وحَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ الْأَشَجُّ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدَةَ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: " إِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَتَمَثَّلُ فِي صُورَةِ الرَّجُلِ، فَيَأْتِي الْقَوْمَ، فَيُحَدِّثُهُمْ بِالْحَدِيثِ مِنَ الْكَذِبِ، فَيَتَفَرَّقُونَ، فَيَقُولُ الرَّجُلُ مِنْهُمْ: سَمِعْتُ رَجُلًا أَعْرِفُ وَجْهَهُ، وَلَا أَدْرِي مَا اسْمُهُ يُحَدِّثُ "

[17] हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु ने फ़रमाया: बेशक़ शैतान किसी आदमी की शक्ल इख्तियार करता है, फ़िर लोगो के पास आता है और उन्हें झूट (के आधार पर) कोई हदीस सुनाता है, फ़िर वह बिखर जाते हैं, उनमें से कोई आदमी कहता है: मैंने एक आदमी से हदीस सुनी है, मैं उसका चेहरा तो पहचानता हूँ पर उसका नाम नहीं जानता, वह हदीस सुना रहा था।

[١٨] وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، قَالَ: إِنَّ فِي الْبَحْرِ شَيَاطِينَ مَسْجُونَةً، أَوْثَقَهَا سُلَيْمَانُ، يُوشِكُ أَنْ تَخْرُجَ، فَتَقْرَأَ عَلَى النَّاسِ قُرْآنًا

[18] ताऊस ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहू अन्हुमा से रिवायत की, कहा: समंदर में बहुत से शैतान क़ैद है जिन्हें हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने बाँधा था, वक़्त आ रहा है कि वह निकलेंगे और लोगो के सामने क़ुरान पढ़ेंगे।

[١٩] وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، وَسَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الْأَشْعَثِيُّ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ سَعِيدٌ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حُجَيْرٍ، عَنْ طَاوُسٍ، قَالَ: جَاءَ هَذَا إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ - يَعْنِي بُشَيْرَ بْنَ كَعْبٍ - فَجَعَلَ يُحَدِّثُهُ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ: عُدْ لِحَدِيثِ كَذَا وَكَذَا، فَعَادَ لَهُ، ثُمَّ حَدَّثَهُ، فَقَالَ لَهُ: عُدْ لِحَدِيثِ كَذَا وَكَذَا، فَعَادَ لَهُ، فَقَالَ لَهُ: مَا أَدْرِي أَعَرَفْتَ حَدِيثِي كُلَّهُ، وَأَنْكَرْتَ هَذَا؟ أَمْ أَنْكَرْتَ حَدِيثِي كُلَّهُ، وَعَرَفْتَ هَذَا؟ فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّا كُنَّا نُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ لَمْ يَكُنْ يُكْذَبُ عَلَيْهِ، فَلَمَّا رَكِبَ النَّاسُ الصَّعْبَ وَالذَّلُولَ، تَرَكْنَا الْحَدِيثَ عَنْهُ

[19] हिशाम बिन हुजैर ने ताऊस से रिवायत की, कहा: यह (उनकी मुराद बुशैर बिन कआब से थी) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा के पास आया और उन्हें हदीसें सुनाने लगा, इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा ने उससे कहा: फ़ुलां हदीस दोहराओ ।उसने दोहरा दीं, फ़िर उनके सामने हदीसे बयान कीं। उन्होंने उससे कहा: फ़ुलां हदीस दोबारा सुनाओ। उसने उनके सामने दोहराईं, फ़िर आपसे पूछा: मैं नहीं जानता कि आपने मेरी बयान की हुई सारी हदीसें पहचान ली हैं और इस हदीस को मुनकर जाना या सबको मुनकर जाना है और इसे पहचान लिया है? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा ने उससे कहा: जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूट नहीं बोला जाता था हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीसे बयान करते थे, फ़िर जब लोग हर मुश्किल और आसान सवारी पर सवार होने लगे (बिना तमीज़ सहीह और ज़ईफ़ रिवायत बयान करने लगे) तो हमने बिना वास्ते के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीस बयान करना छोड़ दिया।

[٢٠] وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: «إِنَّمَا كُنَّا نَحْفَظُ الْحَدِيثَ، وَالْحَدِيثُ يُحْفَظُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَمَّا إِذْ رَكِبْتُمْ كُلَّ صَعْبٍ وَذَلُولٍ، فَهَيْهَاتَ»

[20] हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा: हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसे हिफ्ज़ करते थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मरवी हदीस की हिफाज़त की जाती थी मगर जबसे तुम लोगों ने बिना तमीज़ के हर मुश्किल और आसान पर सवारी शुरू कर दी तो यह मामला दूर हो गया (यह मुश्किल हो गया कि हमारे तरह एहतियात करने वाले लोग इस तरह बयान की गयी हदीसो को क़ुबूल करे, फ़िर याद रखे) ।

[٢١] وحَدَّثَنِي أَبُو أَيُّوبَ سُلَيْمَانُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ الْغَيْلَانِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ يَعْنِي الْعَقَدِيَّ، حَدَّثَنَا رَبَاحٌ، عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، قَالَ: جَاءَ بُشَيْرٌ الْعَدَوِيُّ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ، فَجَعَلَ يُحَدِّثُ، وَيَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجَعَلَ ابْنُ عَبَّاسٍ لَا يَأْذَنُ لِحَدِيثِهِ، وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ، مَالِي لَا أَرَاكَ تَسْمَعُ لِحَدِيثِي، أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلَا تَسْمَعُ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: " إِنَّا كُنَّا مَرَّةً إِذَا سَمِعْنَا رَجُلًا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ابْتَدَرَتْهُ أَبْصَارُنَا، وَأَصْغَيْنَا إِلَيْهِ بِآذَانِنَا، فَلَمَّا رَكِبَ النَّاسُ الصَّعْبَ، وَالذَّلُولَ، لَمْ نَأْخُذْ مِنَ النَّاسِ إِلَّا مَا نَعْرِفُ "

[21] मुजाहिद से रिवायत है कि बुशैर बिन कआब अदअवी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा के पास आया और उसने हदीसे बयान करते हुए कहना शुरू कर दिया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया । हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा ने यह रवय्या रखा कि न उसको ध्यान से सुनते थे और न उसकी तरफ़ देखते थे । वह कहने लगा: ऐ इब्ने अब्बास! साथ क्या मामला है, मुझे नज़र नहीं आता कि आप मेरी बयान की हुई हदीस सुन रहे हैं? मैं आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीस सुना रहा हूँ और आप सुनते ही नहीं । हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा ने फ़रमाया: एक वक़्त ऐसा था कि जब हम किसी को यह कहते सुनते: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो हमारी नज़रें फ़ौरन उसकी तरफ़ उठ जाती और हम कान लगा कर ग़ौर से उसकी बात सुनते, फ़िर जब लोगो ने बिना तमीज़ हर मुश्किल और आसान सवारी शुरू कर दी तो हमने लोगो से कोई हदीस क़ुबूल न की सिवाए उस हदीस के जिसे हम जानते थे ।

حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ عَمْرٍو الضَّبِّيُّ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ: كَتَبْتُ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَسْأَلُهُ أَنْ يَكْتُبَ لِي كِتَابًا، وَيُخْفِي عَنِّي، فَقَالَ: «وَلَدٌ نَاصِحٌ أَنَا أَخْتَارُ لَهُ الْأُمُورَ اخْتِيَارًا،وَأُخْفِي عَنْهُ»، قَالَ: فَدَعَا بِقَضَاءِ عَلِيٍّ، فَجَعَلَ يَكْتُبُ مِنْهُ أَشْيَاءَ، وَيَمُرُّ بِهِ

[22] इब्ने अबी मुलैका से रिवायत है, कहा: मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा की तरफ़ लिखा और उनसे गुज़ारिश की कि वह मेरे लिए एक किताब लिखें और (जिन बातो की सेहत सही न हो या जो न लिखने की हों वह) बातें मुझसे छुपा लें । उन्होंने फ़रमाया: लड़का नसीहत करता है, मैं इसके लिए हदीस के मुताल्लिक सारे मामलात में (सही) चुनुँगा और (मौज़ू और मनघडंत हदीसो को) हटा दूंगा (कहा: उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हू

الشَّيْءُ، فَيَقُولُ: «وَاللهِ مَا قَضَى بِهَذَا عَلِيٌّ إِلَّا أَنْ يَكُونَ ضَلَّ»

के फ़ैसले मंगवाए) और उनमे से चीज़ें लिखनी शुरू कीं और (यह हुआ कि) कोई चीज़ गुज़रती तो फ़रमाते: अल्लाह की क़सम! यह फ़ैसला हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु ने नहीं किया, सिवाए उसके कि वह गुमराह हो गए हों (जबकि ऐसा नहीं हुआ) ।

[٢٣] حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حُجَيْرٍ، عَنْ طَاوُسٍ، قَالَ: «أُتِيَ ابْنُ عَبَّاسٍ بِكِتَابٍ فِيهِ قَضَاءُ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَمَحَاهُ إِلَّا قَدْرَ»، وَأَشَارَ سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ بِذِرَاعِهِ

[23] ताऊस से रिवायत है, कहा: हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा के पास एक किताब लायी गयी जिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु के फ़ैसले (लिखे हुए) थे तो उन्होंने इतना छोड़ कर बाक़ी सब कुछ मिटा दिया । सुफ़ियान बिन उयैय्ना ने हाथ जितनी लम्बाई का इशारा किया ।

[٢٤] حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: " لَمَّا أَحْدَثُوا تِلْكَ الْأَشْيَاءَ بَعْدَ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ عَلِيٍّ: قَاتَلَهُمُ اللهُ، أَيَّ عِلْمٍ أَفْسَدُوا "

[24] अबू इसहाक़ से रिवायत है, कहा: जब (बज़ाहिर हज़रत अली का नाम लेने वाले) लोगों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु के बाद (उनके नाम पर) यह चीज़े ऐजाद कर लीं तो उनके साथियों में एक शख्स ने कहा: अल्लाह इन लोगो को क़त्ल करे! इन्होने कैसा बड़ा इल्म बिगाड़ दिया ।

[٢٥] حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرٍ يَعْنِي ابْنَ عَيَّاشٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْمُغِيرَةَ، يَقُولُ: «لَمْ يَكُنْ يَصْدُقُ عَلَى عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِي الْحَدِيثِ عَنْهُ إِلَّا مِنْ أَصْحَابِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ»

[25] हज़रत मुगीरा रज़ियल्लाहू अन्हु फ़रमाते थे: हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु से मरवी हदीसो में किसी चीज़ के सच होने को नहीं माना जाता था सिवाए उसके जो अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु के शागिर्दों से रिवायत की गयी हो ।

بَابُ فِي أَنَّ الْإِسْنَادَ مِنَ الدِّينِ وأن الرواية لا تكون إلا عن الثقات وأن جرح الرواة بما هو فيهم جائز بل واجب وأنه ليس من الغيبة المحرمة بل من الذب عن الشريعة المكرمة

बाब 5 : इस्नाद दीन में से है, (हदीस की) रिवायत सिर्फ़ सिक़ा रावियों से हो सकती है । रावियों में पाई जाने वाली कुछ कमज़ोरियों, कोताहियों की वजह से उन पर जरह जायज़ ही नहीं बल्कि वाजिब है, यह ग़ीबत में शामिल नहीं जो हराम है बल्कि यह तो शरियत का बचाओ है

حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، وَهِشَامٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، وَحَدَّثَنَا فُضَيْلٌ، عَنْ

[26] मुहम्मद बिन सिरीन ने कहा: यह इल्म दीन है, इसलिए अच्छी तरह देख लो कि तुम किन लोगो से अपना दीन ले रहे हो ।

هِشَامٍ قَالَ: وَحَدَّثَنَا مَخْلَدُ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، قَالَ: إِنَّ هَذَا الْعِلْمَ دِينٌ، فَانْظُرُوا عَمَّنْ تَأْخُذُونَ دِينَكُمْ

[٢٧] حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ عَاصِمٍ الْأَحْوَلِ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، قَالَ: " لَمْ يَكُونُوا يَسْأَلُونَ عَنِ الْإِسْنَادِ، فَلَمَّا وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ، قَالُوا: سَمُّوا لَنَا رِجَالَكُمْ، فَيُنْظَرُ إِلَى أَهْلِ السُّنَّةِ فَيُؤْخَذُ حَدِيثُهُمْ، وَيُنْظَرُ إِلَى أَهْلِ الْبِدَعِ فَلَا يُؤْخَذُ حَدِيثُهُمْ "

[27] इब्ने सिरीन ने कहा: (शुरआती दौर में हदीस के आलिम) इस्नाद के बारे में कोई कोई सवाल न करते थे, जब फ़ितना पड़ गया तो उन्होंने कहा: हमारे सामने अपने रिजाले (हदीस) के नाम लो ताकि अहले सुन्नत को देख कर उनसे हदीस ली जाये और अहले बिदअत को देख कर उनकी हदीस क़ुबूल न की जाये।

[٢٨] حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا عِيسَى وَهُوَ ابْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسَى، قَالَ: لَقِيتُ طَاوُسًا فَقُلْتُ: حَدَّثَنِي فُلَانٌ كَيْتَ وَكَيْتَ، قَالَ: إِنْ كَانَ صَاحِبُكَ مَلِيًّا، فَخُذْ عَنْهُ

[28] औज़ाई ने सुलेमान बिन मूसा से रिवायत की, उन्होंने कहा: मैं ताऊस रहमतुल्लाह अलैहि से मिला और उनसे कहा: मुझे फुलां शख्स ने इस तरह हदीस सुनाई। उन्होंने कहा: अगर तुम्हारे साहब (उस्ताद) पूरी तरह भरोसे के लायक़ हैं तो उनसे ले लो।

[٢٩] وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا مَرْوَانُ يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ الدِّمَشْقِيَّ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسَى قَالَ: قُلْتُ لِطَاوُسٍ: إِنَّ فُلَانًا حَدَّثَنِي بِكَذَا وَكَذَا، قَالَ: إِنْ كَانَ صَاحِبُكَ مَلِيًّا، فَخُذْ عَنْهُ

[29] सईद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने सुलेमान बिन मूसा से रिवायत की, उन्होंने कहा: मैंने ताऊस रहमतुल्लाह अलैहि से पूछा की: फुलां ने इन अलफ़ाज़ से मुझे हदीस सुनाई। उन्होंने कहा: अगर तुम्हारे साहब सिक़ाहत से भरपूर हैं तो उनसे ले लो।

[٣٠] حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا الْأَصْمَعِيُّ، عَنِ ابْنِ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: " أَدْرَكْتُ بِالْمَدِينَةِ مِائَةً، كُلُّهُمْ مَأْمُونٌ، مَا يُؤْخَذُ عَنْهُمُ الْحَدِيثُ، يُقَالُ: لَيْسَ مِنْ أَهْلِهِ "

[30] अब्दुर रहमान बिन अबी ज़िनाद ने अपने वालिद से रिवायत की, कहा: मैं मदीना में सौ अहले इल्म से मिला जो दीन में तो महफूज़ थे लेकिन उनसे हदीस नहीं ली जाती थी, कहा जाता था यह इस इल्म के लायक़ नहीं।

[٣١] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، وحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ خَلَّادٍ الْبَاهِلِيُّ - وَاللَّفْظُ

[31] मिसअर से रिवायत है, कहा: मैंने साद बिन इब्राहीम बिन अब्दुर रहमान बिन ऑफ से सुना, कह रहे थे: सिक़ा

لَهُ - قَالَ:سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ إِبْرَاهِيمَ يَقُولُ: «لَا يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَّا الثِّقَاتُ»

रावियों के अलावा और कोई शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीस ब्यान न करे ।

[٣٢] وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ قُهْزَاذَ مِنْ أَهْلِ مَرْوَ، قَالَ :سَمِعْتُ عَبْدَانَ بْنَ عُثْمَانَ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ الْمُبَارَكِ، يَقُولُ : الْإِسْنَادُ مِنَ الدِّينِ، وَلَوْلَا الْإِسْنَادُ لَقَالَ مَنْ شَاءَ مَا شَاء

[32] अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं: इस्नाद (सनद के साथ हदीस रिवायत करना) दीन में से है । अगर इस्नाद न होती तो जो कोई जो कुछ चाहता, कह देता ।

وقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ :حَدَّثَنِي الْعَبَّاسُ بْنُ أَبِي رِزْمَةَ، قَالَ :سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ، يَقُولُ : بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْقَوَائِمُ «يَعْنِي الْإِسْنَادَ

(इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैहि ने) कहा: और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने कहा: मुझे अब्बास बिन अबी रिज़मा ने हदीस सुनाई, कहा: मैंने अब्दुल्लाह (बिन मुबारक) को यह कहते हुए सुना: हमारे और लोगो के बीच फ़ैसला करने वाली चीज़, बयान की जाने वाली ख़बरों के पैर, यानी सनदें हैं (जिन पर रिवायत इस तरह खड़ी होती हैं जिस तरह जानदार अपने पैर पर खड़े होते हैं) ।

وقَالَ مُحَمَّدٌ :سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ إِبْرَاهِيمَ بْنَ عِيسَى الطَّالْقَانِيَّ قَالَ: قُلْتُ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ الْمُبَارَكِ، يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ:الْحَدِيثُ الَّذِي جَاءَ إِنَّ مِنَ الْبِرِّ بَعْدَ الْبِرِّ أَنْ تُصَلِّيَ لِأَبَوَيْكَ مَعَ صَلَاتِكَ، وَتَصُومَ لَهُمَا مَعَ صَوْمِكَ .قَالَ :فَقَالَ عَبْدُ اللهِ: يَا أَبَا إِسْحَاقَ، عَمَّنْ هَذَا؟ قَالَ :قُلْتُ لَهُ: هَذَا مِنْ حَدِيثِ شِهَابِ بْنِ خِرَاشٍ فَقَالَ: ثِقَةٌ، عَمَّنْ قَالَ؟ قُلْتُ :عَنِ الْحَجَّاجِ بْنِ دِينَارٍ، قَالَ :ثِقَةٌ، عَمَّنْ قَالَ؟ " قُلْتُ :قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ .قَالَ :يَا أَبَا إِسْحَاقَ، إِنَّ بَيْنَ الْحَجَّاجِ بْنِ دِينَارٍ وَبَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَفَاوِزَ تَنْقَطِعُ فِيهَا أَعْنَاقُ الْمَطِيِّ، وَلَكِنْ لَيْسَ فِي الصَّدَقَةِ اخْتِلَافٌ

मुहम्मद (बिन अब्दुल्लाह बिन कुहज़ाद) ने कहा: मैंने अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन ईसा तालक़ानी से सुना, कहा: मैंने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से कहा: अबू अब्दुर रहमान! वह हदीस कैसी है जो (इन अलफ़ाज़ में) आई है: "नेकी के बाद (दूसरी) नेकी यह है कि तुम अपनी नमाज़ के साथ अपने माँ बाप के लिए नमाज़ पढ़ो और अपने रोज़े के साथ अपने माँ बाप के लिए रोज़े रखो?" अब्दुल्लाह बिन मुबारक कहा: यह किस (की सनद) से है, मैंने कहा: यह शिहाब बिन ख़िराश की बयान की हुई हदीस है, उन्होंने कहा: सिक़ा है, फिर किस से? मैंने कहा: हज्जाज बिन दीनार से, कहा: सिक़ा फिर किस से? मैंने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया । कहने लगे: अबू इसहाक़! हज्जाज बिन दीनार और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच कठिन रास्ता हैं जिनको पार करते हुए ऊंटनियों की गर्दन कट कर गिर जाती हैं लेकिन सदक़ा (मय्यत के लिए फ़ायदामंद है इस) के बारे में कोई इख्तिलाफ़ नहीं ।

وَقَالَ مُحَمَّدٌ :سَمِعْتُ عَلِيَّ بْنَ شَقِيقٍ، يَقُولُ :سَمِعْتُ عَبْدَ اللهُ بْنَ الْمُبَارَكِ، يَقُولُ عَلَى رُءُوسِ النَّاسِ :

मुहम्मद ने कहा: मैंने अली बिन शक़ीक़ से सुना, कह रहे थे: मैंने अब्दुल्लाह बिन मुबारक को सबके सामने यह कहते

دَعُوا حَدِيثَ عَمْرِو بْنِ ثَابِتٍ فَإِنَّهُ كَانَ يَسُبَّ السَّلَفَ

सुना: अम्र बिन साबित की रिवायत की हुई हदीस छोड़ दो क्यूंकि वह सल्फ़ सालिहीन को गालियाँ दिया करता था।

[٣٣] وحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ النَّضْرِ بْنِ أَبِي النَّضْرِ، قَالَ :حَدَّثَنِي أَبُو النَّضْرِ هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا أَبُو عَقِيلٍ، صَاحِبُ بُهَيَّةَ،قَالَ :كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ الْقَاسِمِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، وَيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، فَقَالَ يَحْيَى لِلْقَاسِمِ :يَا أَبَا مُحَمَّدٍ إِنَّهُ قَبِيحٌ عَلَى مِثْلِكَ، عَظِيمٌ أَنْ تُسْأَلَ عَنْ شَيْءٍ مِنْ أَمْرِ هَذَا الدِّينِ، فَلَا يُوجَدَ عِنْدَكَ مِنْهُ عِلْمٌ، وَلَا فَرَجٌ - أَوْ عِلْمٌ، وَلَا مَخْرَجٌ - فَقَالَ لَهُ الْقَاسِمُ :وَعَمَّ ذَاكَ ؟، قَالَ :لِأَنَّكَ ابْنُ إِمَامَيْ هُدًى. ابْنُ أَبِي بَكْرٍ، وَعُمَرَ، قَالَ :يَقُولُ لَهُ الْقَاسِمُ: أَقْبَحُ مِنْ ذَاكَ عِنْدَ مَنْ عَقَلَ عَنِ اللهِ أَنْ أَقُولَ بِغَيْرِ عِلْمٍ، أَوْ آخُذَ عَنْ غَيْرِ ثِقَةٍ، قَالَ :فَسَكَتَ فَمَا أَجَابَهُ

[33] अबू नज़्र बिन क़ासिम ने हदीस बयान की, कहा: हमसे बुहय्या के मौला अबू अक़ील ने हदीस बयान की, कहा: मैं क़ासिम बिन उबैदुल्लाह और यहया बिन सईद के पास बैठा हुआ था कि यहया ने क़ासिम बिन उबैदुल्लाह से कहा: जनाब अबू मुहम्मद! आप जैसी शख्सियत के लिए यह बुराई है, बहुत बड़ी बात है कि आपसे इस दीन के किसी मामले के बारे में कुछ पूछा जाये और आपके पास इसके हवाले से न इल्म हो न कोई हल या यह अलफ़ाज़ कहे कि न इल्म हो न निकलने की कोई राह, तो क़ासिम ने उनसे कहा: किस वजह से? यहया ने कहा: क्यूंकि आप हिदायत के दो इमामों अबू बक्र और उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा के बेटे हैं। क़ासिम इस पर कहने लगे: जिस शख्स को अल्लाह की तरफ़ से अक़्ल मिली हो, उसके नज़दीक इससे भी बदतर बात यह है कि मैं इल्म के बिना कुछ कह दूं या उससे रिवायत करूं जो सिक़ा न हो। यह सुनकर यहया ख़ामोश हो गए और उन्हें कोई जवाब न दिया।

[٣٤] وحَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ الْحَكَمِ الْعَبْدِيُّ، قَالَ :سَمِعْتُ سُفْيَانَ بْنَ عُيَيْنَةَ، يَقُولُ :أَخْبَرُونِي عَنْ أَبِي عَقِيلٍ صَاحِبِ بُهَيَّةَ، أَنَّ أَبْنَاءً لِعَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، سَأَلُوهُ عَنْ شَيْءٍ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ فِيهِ عِلْمٌ، فَقَالَ لَهُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ :وَاللهِ إِنِّي لَأُعْظِمُ أَنْ يَكُونَ مِثْلُكَ، وَأَنْتَ ابْنُ إِمَامَيِ الْهُدَى - يَعْنِي عُمَرَ، وَابْنَ عُمَرَ - تُسْأَلُ عَنْ أَمْرٍ لَيْسَ عِنْدَكَ فِيهِ عِلْمٌ، فَقَالَ : أَعْظَمُ مِنْ ذَلِكَ وَاللهِ عِنْدَ اللهِ، وَعِنْدَ مَنْ عَقَلَ عَنِ اللهِ، أَنْ أَقُولَ بِغَيْرِ عِلْمٍ، أَوْ أُخْبِرَ عَنْ غَيْرِ ثِقَةٍ قَالَ: وَشَهِدَهُمَا أَبُو عَقِيلٍ يَحْيَى بْنُ الْمُتَوَكِّلِ حِينَ قَالَا ذَلِكَ.

[34] सूफ़ियान बिन उयैय्ना ने बयान किया कि मुझसे से बहुत से लोगो ने बुहय्या के मौला अबू अक़ील से सुन कर रिवायत की कि कुछ लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा के एक बेटे से कोई बात पूछी जिसके बारे में उनके इल्म में कुछ न था तो यहया बिन सईद ने उनसे कहा: मैं इसको बहुत बड़ी बात समझता हूँ कि आप जैसे इंसान से जबकि आप हिदायत के दो इमामों यानी उमर और इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा के बेटे हैं कोई बात पूछी जाये और उसके बारे में आपको कुछ इल्म न हो। उन्होंने कहा; अल्लाह की क़सम! अल्लाह के नज़दीक और और उस शख्स के नज़दीक जिसे अल्लाह ने अक़्ल दी इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं इल्म के बिना कुछ कहूं या किसी ऐसे शख्स से रिवायत करूं जो सिक़ा नहीं। सूफ़ियान ने कहा: अबू अक़ील यहया बिन मुतवक्किल भी उनके पास मौजूद थे जब उन्होंने यह बात की।

وَحَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ أَبُو حَفْصٍ، قَالَ :سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ، قَالَ :سَأَلْتُ سُفْيَانَ الثَّوْرِيَّ، وَشُعْبَةَ،

[35] यहया बिन सईद ने कहा: मैंने सूफ़ियान सौरी, शोबा, मालिक और इब्ने उयैय्ना से ऐसे आदमी के बारे में पूछा जो हदीस में पूरी तरह क़ाबिले ऐतमाद (सिक़ा) न हो, फिर

وَمَالِكًا، وَابْنَ عُيَيْنَةَ، عَنِ الرَّجُلِ لَا يَكُونُ ثَبْتًا فِي الْحَدِيثِ، فَيَأْتِينِي الرَّجُلُ، فَيَسْأَلُنِي عَنْهُ، قَالُوا : أَخْبِرْ عَنْهُ أَنَّهُ لَيْسَ بِثَبْتٍ

कोई आदमी आये और मुझसे उसके बारे में सवाल करे? तो उन सबने कहा: उसके बारे में बता दो कि वह पुरी तरह क़ाबिले ऐतमाद नहीं है ।

[٣٦] وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ :سَمِعْتُ النَّضْرَ، يَقُولُ :سُئِلَ ابْنُ عَوْنٍ، عَنْ حَدِيثٍ لِشَهْرٍ وَهُوَ قَائِمٌ عَلَى أُسْكُفَّةِ الْبَابِ، فَقَالَ : إِنَّ شَهْرًا نَزَكُوهُ، إِنَّ شَهْرًا نَزَكُوهُ.

[36] नज़्र कहते हैं कि इब्ने ऑन से शहर बिन हौशब की हदीस के बारे में सवाल किया गया, उस वक़्त वह अपनी दहलीज़ पर खड़े थे, वह कहने लगे: बेशक़ उन्होंने (मुहद्दीस्सीन) ने शहर की मलामत की है, उन्होंने शहर की मलामत की है ।

قَالَ مُسْلِمٌ رَحِمَهُ اللهُ: يَقُولُ: أَخَذَتْهُ أَلْسِنَةُ النَّاسِ تَكَلَّمُوا فِيهِ

इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा: लोगो कि ज़बानों ने उन्हें निशाना बनाया, उनके बारे में बातें कीं ।

[٣٧] وحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، قَالَ: قَالَ شُعْبَةُ: «وَقَدْ لَقِيتُ شَهْرًا فَلَمْ أَعْتَدَّ بِهِ»

[37] हमें शबाबा ने बताया, कहा: शोबा ने कहा: मैं शहर से मिला लेकिन (हदीस के रिवायत के हवाले से) मैंने उन्हें अहमियत नहीं दी ।

وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ قُهْزَاذَ، مِنْ أَهْلِ مَرْوَ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ: قُلْتُ لِسُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ: " إِنَّ عَبَّادَ بْنَ كَثِيرٍ مَنْ تَعْرِفُ حَالَهُ، وَإِذَا حَدَّثَ جَاءَ بِأَمْرٍ عَظِيمٍ، فَتَرَى أَنْ أَقُولَ لِلنَّاسِ: لَا تَأْخُذُوا عَنْهُ؟ " قَالَ سُفْيَانُ: بَلَى، قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَكُنْتُ إِذَا كُنْتُ فِي مَجْلِسٍ ذُكِرَ فِيهِ عَبَّادٌ، أَثْنَيْتُ عَلَيْهِ فِي دِينِهِ، وَأَقُولُ: لَا تَأْخُذُوا عَنْهُ

[38] अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा: मैंने सुफ़ियान सौरी से पूछा: बेशक़ अब्बाद बिन कसीर ऐसा है जिसका हाल आपको मालूम है, जब वह हदीस बयान करता है तो बड़ी बात करता है, क्या आपकी राय है कि मैं लोगो से कह दिया करूं: इससे (हदीस) न लो? सुफ़ियान कहने लगे: क्यूँ नहीं! अब्दुल्लाह ने कहा: फ़िर यह (मेरा तरीक़ा) हो गया कि जब में किसी (इल्मी) मजलिस में होता जहाँ अब्बाद का ज़िक्र होता तो मैं दीन के हवाले से उसकी तारीफ़ करता और साथ यह भी कहता: इससे (हदीस) न लो ।

وَقَالَ مُحَمَّدٌ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ، قَالَ: قَالَ أَبِي، قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ: انْتَهَيْتُ إِلَى شُعْبَةَ، فَقَالَ: هَذَا عَبَّادُ بْنُ كَثِيرٍ، فَاحْذَرُوهُ

अब्दुल्लाह बिन उस्मान ने बयान किया, कहा: मेरे वालिद ने कहा: अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा: मैं शोबा तक पहुंचा तो उन्होंने कहा: यह अब्बाद बिन कसीर है तुम लोग इससे (हदीस बयान करने में) एहतियात करो ।

[٣٩] وحَدَّثَنِي الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ، قَالَ: سَأَلْتُ مُعَلَّى الرَّازِيَّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعِيدٍ، الَّذِي رَوَى عَنْهُ عَبَّادٌ،

[39] फ़ज़्ल बिन सहल ने बताया, कहा: मैंने मुअल्ला राज़ी से मुहम्मद बिन सईद के बारे में, जिससे अब्बाद बिन कसीर ने रिवायत की, पूछा तो उन्होंने मुझे ईसा बिन युनुस

فَأَخْبَرَنِي عَنْ عِيسَى بْنِ يُونُسَ، قَالَ: كُنْتُ عَلَى بَابِهِ، وَسُفْيَانُ عِنْدَهُ، فَلَمَّا خَرَجَ سَأَلْتُهُ عَنْهُ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ كَذَّابٌ

के हवाले से बयान किया, कहा: मैं इसके दरवाज़े पर था, सुफ़ियान इसके पास मौजूद थे जब वह बाहर निकल गया तो मैंने इन (सुफ़ियान) से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि वह कज़्ज़ाब है ।

[٤٠] وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَتَّابٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَفَّانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الْقَطَّانِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمْ نَرَ الصَّالِحِينَ فِي شَيْءٍ أَكْذَبَ مِنْهُمْ فِي الْحَدِيثِ

[40] मुहम्मद बिन अबी अत्ताब ने कहा: मुझसे अफ्फ़ान ने मुहम्मद बिन याहया बिन सईद क़त्तान से हदीस बयान की, उन्होंने अपने वालिद से रिवायत की, कहा: हमने नेक लोग (सूफ़िया) को हदीस से बढ़ कर किसी और चीज़ में झूट बोलने वाला नहीं पाया ।

قَالَ ابْنُ أَبِي عَتَّابٍ: فَلَقِيتُ أَنَا مُحَمَّدَ بْنَ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الْقَطَّانَ، فَسَأَلْتُهُ عَنْهُ، فَقَالَ: عَنْ أَبِيهِ، لَمْ تَرَ أَهْلَ الْخَيْرِ فِي شَيْءٍ أَكْذَبَ مِنْهُمْ فِي الْحَدِيثِ

इब्ने अबी अत्ताब ने कहा: मैं मुहम्मद बिन यहया बिन सईद क़त्तान से मिला तो इस बारे में पूछा, उन्होंने अपने वालिद से रिवायत करते हुए कहा: तुम अहले ख़ैर (दुनिया से दूर रहने वालो मतलब ज़ुहुद वालो) को हदीस से ज़्यादा किसी और चीज़ में झूटा नहीं पाओगे ।

قَالَ مُسْلِمٌ: يَقُولُ: يَجْرِي الْكَذِبُ عَلَى لِسَانِهِمْ، وَلَا يَتَعَمَّدُونَ الْكَذِبَ

इमाम मुस्लिम ने कहा कि यहया बिन सईद ने फ़रमाया: उनकी ज़बान पर झूट जारी हो जाता है, वह जान बूझ कर झूट नहीं बोलते ।

[٤١] حَدَّثَنِي الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ، قَالَ :حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ :أَخْبَرَنِي خَلِيفَةُ بْنُ مُوسَى، قَالَ : دَخَلْتُ عَلَى غَالِبِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ فَجَعَلَ يُمْلِي عَلَيَّ، حَدَّثَنِي مَكْحُولٌ، حَدَّثَنِي مَكْحُولٌ، فَأَخَذَهُ الْبَوْلُ، فَقَامَ فَنَظَرْتُ فِي الْكُرَّاسَةِ، فَإِذَا فِيهَا حَدَّثَنِي أَبَانُ، عَنْ أَنَسٍ، وَأَبَانُ عَنْ فُلَانٍ، فَتَرَكْتُهُ، وَقُمْتُ

[41] ख़लीफ़ा बिन मूसा ने ख़बर दी, कहा: मैं ग़ालिब बिन उबैदुल्लाह के पास आया तो उसने मुझे लिखवाना शुरू किया: मकहूल ने मुझ से हदीस बयान की, मकहूल ने मुझ से हदीस बयान की, इसी दौरान पेशाब ने उसे मजबूर किया तो उठ गया, मैंने जो उसकी कॉपी देखी तो उसमे इस तरह था: मुझे अबान ने अनस से यह हदीस सुनाई, अबान ने फुलां से हदीस रिवायत की । इस पर मैंने उसे छोड़ दिया और उठ खड़ा हुआ ।

قَالَ :وَسَمِعْتُ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيَّ، يَقُولُ :رَأَيْتُ فِي كِتَابِ عَفَّانَ، حَدِيثَ هِشَامٍ أَبِي الْمِقْدَامِ، حَدِيثَ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ، قَالَ هِشَامٌ :حَدَّثَنِي رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ يَحْيَى بْنُ فُلَانٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ :قُلْتُ لِعَفَّانَ: إِنَّهُمْ يَقُولُونَ هِشَامٌ، سَمِعَهُ مِنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ، فَقَالَ: إِنَّمَا ابْتُلِيَ مِنْ قِبَلِ هَذَا الْحَدِيثِ، كَانَ

इमाम मुस्लिम ने कहा: और मैंने हसन बिन अली हुलवानी से सुना, कह रहे थे: मैंने अफ्फ़ान की किताब में अबू मिक़दाम हिशाम की वह रिवायत देखी (जो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की हदीस है) उसमे था: हिशाम ने कहा: मुझसे एक शख्स ने, जिसे यहया बिन फुलां कहा जाता था, मुहम्मद बिन कअब से हदीस बयान की, कहा: मैंने अफ्फ़ान से कहा: (अहले इल्म) कहते हैं: हिशाम ने यह हदीस मुहम्मद बिन कअब से सुनी थी, तो वह कहने लगे: वह (हिशाम) इसी हदीस की वजह से फ़ितने में पड़े । (पहले)

يَقُولُ :حَدَّثَنِي يَحْيَى، عَنْ مُحَمَّدٍ، ثُمَّ ادَّعَى بَعْدُ أَنَّهُ سَمِعَهُ مِنْ مُحَمَّدٍ

वह कहा करते थे: मुझे यहया ने मुहम्मद बिन कअब से रिवायत की, बाद में यह दावा कर दिया कि उन्होंने यह हदीस बिना किसी वास्ते से मुहम्मद से सुनी है ।

[٤٢] حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ قُهْزَاذَ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُثْمَانَ بْنِ جَبَلَةَ، يَقُولُ: قُلْتُ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ الْمُبَارَكِ: مَنْ هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي رَوَيْتَ عَنْهُ حَدِيثَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو يَوْمُ الْفِطْرِ يَوْمُ الْجَوَائِزِ؟ قَالَ: سُلَيْمَانُ بْنُ الْحَجَّاجِ انْظُرْ مَا وَضَعْتَ فِي يَدِكَ مِنْهُ

[42] अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन हबअला ने अबुल्लाह बिन मुबारक से कहा: यह कौन है जिससे आपने अब्दुल्लाह बिन अम्र की हदीस: "ईदुल फ़ित्र का दिन इनाम का दिन है" रिवायत की? कहा: सुलैमान बिन हज्जाज, उनमे से जो (हदीसे) तुमने अपने पास लिख राखी हैं (या मैंने तुम्हे उसकी जो हदीसे दी हैं) उनमे से अच्छी तरह गौर करना ।

قَالَ ابْنُ قُهْزَاذَ :وَسَمِعْتُ وَهْبَ بْنَ زَمْعَةَ، يَذْكُرُ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ، قَالَ :قَالَ عَبْدُ اللهِ يَعْنِي ابْنَ الْمُبَارَكِ: رَأَيْتُ رَوْحَ بْنَ غُطَيْفٍ صَاحِبَ الدَّمِ قَدْرِ الدِّرْهَمِ، وَجَلَسْتُ إِلَيْهِ مَجْلِسًا، فَجَعَلْتُ أَسْتَحْيِي مِنْ أَصْحَابِي أَنْ يَرَوْنِي جَالِسًا مَعَهُ كُرْهَ حَدِيثِهِ

इब्ने क़ुहज़ाद ने कहा: मैंने वहब बिन ज़मआ से सुना, वह सुफ़ियान बिन अब्दुल मालिक से रिवायत कर रहे थे, कहा: अब्दुल्लाह, यानी इब्ने मुबारक ने कहा: मैंने एक दिरहम के बराबर ख़ून वाली हदीस के रावी रौह बिन गुतैफ़ को देखा है। मैं उसके साथ एक मजलिस में बैठा तो मैं अपने साथियों से शर्म महसूस कर रहा था कि वह मुझे इससे हदीस बयान करने को नापसंदीदा होने के बावजूद इसके साथ बैठा देखा ।

[٤٣] حَدَّثَنِي ابْنُ قُهْزَاذَ، قَالَ: سَمِعْتُ وَهْبًا، يَقُولُ: عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ ابْنِ الْمُبَارَكِ، قَالَ: بَقِيَّةُ صَدُوقُ اللِّسَانِ، وَلَكِنَّهُ يَأْخُذُ عَمَّنْ أَقْبَلَ وَأَدْبَرَ

[43] अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा: बक़िय्या ज़बान के सच्चे हैं लेकिन वह हर आपने जाने वाले (इल्मे हदीस में महारत रखने वाले और न रखने वाले हर शख्स) से हदीस ले लेते हैं ।

[٤٤] حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ :حَدَّثَنِي الْحَارِثُ الْأَعْوَرُ الْهَمْدَانِيُّ، وَكَانَ كَذَّابًا

[44] जरीर ने मुगीरा से, उन्होंने शाबी से रिवायत की, कहा: मुझे हारिस आवर हमदानी ने हदीस सुनाई और वह कज़्ज़ाब था ।

[٤٥] حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَبْدُ اللهِ بْنُ بَرَّادٍ الْأَشْعَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ مُفَضَّلٍ، عَنْ مُغِيرَةَ، قَالَ :سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ، يَقُولُ:حَدَّثَنِي الْحَارِثُ الْأَعْوَرُ، وَهُوَ يَشْهَدُ أَنَّهُ أَحَدُ الْكَاذِبِينَ

[45] मुफज़्ज़ल ने मुगीरा से रिवायत की, कहा: मैंने शाबी को कहते हुए सुना: मुझसे हारिस आवर ने रिवायत बयान की और वह गवाही देते हैं कि वह (हारिस) झूटों में से एक था ।

[٤٦] حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ

[46] मुगीरा ने इब्राहीम से रिवायत की, कहा: अलक़मा ने कहा: मैंने दो साल में क़ुरान पढ़ा तो हारिस ने कहा: क़ुरान

مُغِيرَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ،قَالَ :قَالَ عَلْقَمَةُ» :قَرَأْتُ الْقُرْآنَ فِي سَنَتَيْنِ فَقَالَ الْحَارِثُ : الْقُرْآنُ هَيِّنٌ الْوَحْيُ أَشَدُّ

आसान है, वही इससे ज़्यादा मुश्किल है ।

[٤٧] وحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ يَعْنِي ابْنَ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، أَنَّ الْحَارِثَ، قَالَ: «تَعَلَّمْتُ الْقُرْآنَ فِي ثَلَاثِ سِنِينَ، وَالْوَحْيَ فِي سَنَتَيْنِ أَوْ قَالَ الْوَحْيَ فِي ثَلَاثِ سِنِينَ، والْقُرْآنَ فِي سَنَتَيْن

[47] आमश ने इब्राहीम से रिवायत की कि हारिस आवर ने कहा: मैंने क़ुरान तीन साल में सीखा और वही दो साल में या कहा: वही तीन साल में क़ुरान दो साल में ।

وحَدَّثَنِي حَجَّاجٌ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَحْمَدُ وَهُوَ ابْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، وَالْمُغِيرَةِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، أَنَّ الْحَارِثَ اتُّهِمَ

[48] मन्सूर और मुगीरा ने इब्राहीम से रिवायत की कि हारिस मुतहिम रावी है ।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ حَمْزَةَ الزَّيَّاتِ، قَالَ: سَمِعَ مُرَّةُ الْهَمْدَانِيُّ، مِنَ الْحَارِثِ شَيْئًا، فَقَالَ لَهُ: «اقْعُدْ بِالْبَابِ»، قَالَ: فَدَخَلَ مُرَّةُ، وَأَخَذَ سَيْفَهُ، قَالَ: وَأَحَسَّ الْحَارِثُ بِالشَّرِّ، فَذَهَبَ

[49] हमज़ा ज़ियात से रिवायत है, कहा: मुर्रा हमदानी ने हारिस से कोई बात सुनी तो उससे कहा: तुम दरवाज़े ही पर बैठो (अन्दर न आओ) फ़िर वह (घर में) दाख़िल हुए और अपनी तलवार उठाई तो हारिस ने बुरा अंजाम महसूस कर लिया और चल दिया ।

[٥٠] وحَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَعْنِي ابْنَ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ابْنِ عَوْنٍ، قَالَ: قَالَ لَنَا إِبْرَاهِيمُ: إِيَّاكُمْ وَالْمُغِيرَةَ بْنَ سَعِيدٍ، وَأَبَا عَبْدِ الرَّحِيمِ، فَإِنَّهُمَا كَذَّابَانِ

[50] इब्ने ऑन से रिवायत है, कहा: इब्राहीम (नख़ई) ने हमसे कहा: तुम लोग मुगीरा बिन सईद और अबू अब्दुर रहीम से बच कर रहो, वह कज़्ज़ाब हैं ।

[٥١] حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، قَالَ: كُنَّا نَأْتِي أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيَّ وَنَحْنُ غِلْمَةٌ أَيْفَاعٌ، فَكَانَ يَقُولُ لَنَا: «لَا تُجَالِسُوا الْقُصَّاصَ غَيْرَ أَبِي الْأَحْوَصِ، وَإِيَّاكُمْ وَشَقِيقًا، قَالَ: وَكَانَ شَقِيقٌ هَذَا يَرَى رَأْيَ الْخَوَارِجِ، وَلَيْسَ بِأَبِي وَائِلٍ

[51] हमें आसिम ने हदीस बयान की, कहा: हम बिल्कुल छोटे लड़के थे जो अबू अब्दुर रहमान सुलमी के पास पहुँचे थे, वह हमसे कहा करते थे: अबू अहवस के सिवा दुसरे क़िस्सा गो (क़िस्सा कहानी सुनाने वाले लोग) की मजलिसो में मत बैठो और शक़ीक़ से बच कर रहो । शक़ीक़ ख़वारिज का नुक़ता नज़र रखता था, यह अबू वाइल नहीं (बल्कि शक़ीक़ है)

[٥٢] حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو الرَّازِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ جَرِيرًا، يَقُولُ: «لَقِيتُ جَابِرَ بْنَ يَزِيدَ الْجُعْفِيَّ فَلَمْ أَكْتُبْ عَنْهُ، كَانَ يُؤْمِنُ بِالرَّجْعَةِ»

[52] जरीर कहते हैं: मैं जाबिर बिन यज़ीद जोअफ़ी से मिला तो मैंने इससे हदीस न लिखी, वह रजअत (वापस आना) पर ईमान रखता था।

[٥٣] حَدَّثَنَا الْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ، قَالَ: «حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ يَزِيدَ، قَبْلَ أَنْ يُحْدِثَ مَا أَحْدَثَ»

[53] मिसअर ने कहा: हमसे जाबिर बिन यज़ीद (जोअफ़ी) ने इन बिदअतों से पहले, जो उसने घड़ी हदीस बयान की।

[٥٤] وحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: «كَانَ النَّاسُ يَحْمِلُونَ عَنْ جَابِرٍ قَبْلَ أَنْ يُظْهِرَ مَا أَظْهَرَ، فَلَمَّا أَظْهَرَ مَا أَظْهَرَ اتَّهَمَهُ النَّاسُ فِي حَدِيثِهِ، وَتَرَكَهُ بَعْضُ النَّاسِ»، فَقِيلَ لَهُ: وَمَا أَظْهَرَ؟ قَالَ: «الْإِيمَانَ بِالرَّجْعَةِ»

[54] सुफ़ियान ने कहा: जाबिर ने जिस (अक़ीदे) का इज़हार किया उसके इज़हार से पहले लोग उससे हदीस लेते थे, जब उसने उसका इज़हार कर दिया तो लोगो ने उसे उसकी (बयान की हुई) हदीस के बारे में तआन किया (जरह की) और कुछ ने उसे छोड़ दिया। उनसे पूछा गया: उसने किस चीज़ का इज़हार किया था? कहा: रजअत पर ईमान का।

[٥٥] وحَدَّثَنَا حَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو يَحْيَى الْحِمَّانِيُّ، حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، وَأَخُوهُ، أَنَّهُمَا سَمِعَا الْجَرَّاحَ بْنَ مَلِيحٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرًا يَقُولُ: «عِنْدِي سَبْعُونَ أَلْفَ حَدِيثٍ عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُلُّهَا»

[55] जर्राह बिन मलीह कहते हैं: मैंने जाबिर बिन यज़ीद को यह कहते सुना: मेरे पास अबू जाफ़र (मुहम्मद बाक़र बिन अली बिन हुसैन बनी अली रज़ियल्लाहू अन्हुम) की सत्तर हज़ार हदीसें हैं जो सबकी सब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (रिवायत की गयी) हैं।

[٥٦] وحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، قَالَ: سَمِعْتُ زُهَيْرًا، يَقُولُ: قَالَ جَابِرٌ - أَوْ سَمِعْتُ جَابِرًا - يَقُولُ: «إِنَّ عِنْدِي لَخَمْسِينَ أَلْفَ حَدِيثٍ، مَا حَدَّثْتُ مِنْهَا بِشَيْءٍ»، قَالَ: ثُمَّ حَدَّثَ يَوْمًا بِحَدِيثٍ، فَقَالَ: «هَذَا مِنَ الْخَمْسِينَ أَلْفًا»

[56] ज़ुहैर कहते हैं: जाबिर ने कहा या मैंने जाबिर को यह कहते सुना: बेशक मेरे पास पचास हज़ार हदीसें (ऐसी) हैं जिन में से मैंने कोई हदीस बयान नहीं की, फ़िर एक दिन उसने एक हदीस बयान की और कहा: यह (उन) पचास हज़ार हदीसों में से (एक) हैं।

[٥٧] وحَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ خَالِدٍ الْيَشْكُرِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْوَلِيدِ، يَقُولُ: سَمِعْتُ سَلَّامَ بْنَ أَبِي مُطِيعٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرًا الْجُعْفِيَّ، يَقُولُ: «عِنْدِي خَمْسُونَ أَلْفَ حَدِيثٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»

[57] सल्लाम बिन अबी मुतीअ कहते हैं: मैंने जाबिर जोअफ़ी को यह कहते सुना: मेरे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की हुई पचास हज़ार हदीसें हैं।

[٥٨] وحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ :سَمِعْتُ رَجُلًا سَأَلَ جَابِرًا عَنْ

[58] सुफ़ियान ने कहा: मैंने एक आदमी से सुना, उसने जाबिर से अल्लाह का फ़रमान: {فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي

قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ {{فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللهُ لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ}}[يوسف: 80]، فَقَالَ جَابِرٌ» :لَمْ يَجِئْ تَأْوِيلُ هَذِهِ«، قَالَ سُفْيَانُ: وَكَذَبَ، فَقُلْنَا لِسُفْيَانَ: وَمَا أَرَادَ بِهَذَا؟ فَقَالَ: إِنَّ الرَّافِضَةَ تَقُولُ: إِنَّ عَلِيًّا فِي السَّحَابِ، فَلَا نَخْرُجُ مَعَ مَنْ خَرَجَ مِنْ وَلَدِهِ حَتَّى يُنَادِيَ مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ يُرِيدُ عَلِيًّا أَنَّهُ يُنَادِي اخْرُجُوا مَعَ فُلَانٍ، يَقُولُ جَابِرٌ» :فَذَا تَأْوِيلُ هَذِهِ الْآيَةِ، وَكَذَبَ، كَانَتْ فِي إِخْوَةِ يُوسُفَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

{أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللهُ لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ} "अब मैं इस ज़मीन से हरगिज़ न हिलूंगा जब तक कि मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए फ़ैसला कर दे और वह सब फ़ैसला करने वालों से बेहतर है "[यूसुफ़: 80] के बारे में सवाल किया, तो जाबिर ने कहा: इसकी तफ़सीर अभी ज़ाहिर नहीं हुई । सुफ़ियान ने कहा: और उसने यह झूट बोला तो हमने सुफ़ियान से कहा: उसकी मुराद इससे क्या थी? उन्होंने कहा: रवाफिज़ कहते हैं: हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु बादलों में हैं । उनकी औलाद में से जो कोई ख़ुरूज करेगा हम उसके साथ ख़ुरूज नहीं करेंगे यहाँ तक कि आसमान की तरफ़ से पुकारने वाला (उसकी मुराद अली से है) पुकारे । बेशक वही पुकारेगा कि फुलां के साथ मिल कर ख़ुरूज करो। जाबिर कहता था: यह इस आयत की तफ़सीर है और उसने झूट कहा । यह आयत हज़रत यूफुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों के बारे में नाज़िल हुई थी ।

[٥٩] وحَدَّثَنِي سَلَمَةُ، حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ» :سَمِعْتُ جَابِرًا، يُحَدِّثُ بِنَحْوٍ مِنْ ثَلَاثِينَ أَلْفَ حَدِيثٍ، مَا أَسْتَحِلُّ أَنْ أَذْكُرَ مِنْهَا شَيْئًا، وَأَنَّ لِي كَذَا وَكَذَا

[59] सुफ़ियान से रिवायत है, कहा: मैंने जाबिर को लगभग तीस हज़ार हदीसें बयान करते हुए सुना है । मैं उनमें से एक हदीस बयान करना भी हलाल नहीं समझता चाहे (उसके बदले) मेरे लिए इतना और इतना हो ।

قَالَ مُسْلِمٌ: وَسَمِعْتُ أَبَا غَسَّانَ مُحَمَّدَ بْنَ عَمْرٍو الرَّازِيَّ، قَالَ: سَأَلْتُ جَرِيرَ بْنَ عَبْدِ الْحَمِيدِ، فَقُلْتُ: الْحَارِثُ بْنُ حَصِيرَةَ لَقِيتَهُ؟ قَالَ: «نَعَمْ، شَيْخٌ طَوِيلُ السُّكُوتِ، يُصِرُّ عَلَى أَمْرٍ عَظِيمٍ»

इमाम मुस्लिम ने कहा: मैंने अबू ग़स्सान मुहम्मद बिन अम्र राज़ी से सुना, मैंने जरीर बिन अब्दुल हमीद से पूछा, मैंने कहा: (यह जो) हारिस बिन हसीरा है आप इससे मिले हैं? कहा: हाँ, लम्बी ख़ामोशी वाला बूढ़ा है । एक बहुत बड़ी बात पर ज़िद करता है ।

[٦٠] حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ :حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ:ذَكَرَ أَيُّوبُ رَجُلًا يَوْمًا، فَقَالَ» :لَمْ يَكُنْ بِمُسْتَقِيمِ اللِّسَانِ«، وَذَكَرَ آخَرَ، فَقَالَ» :هُوَ يَزِيدُ فِي الرَّقْمِ«

[60] अब्दुर रहमान बिन महदी ने हम्माद बिन ज़ैद से रिवायत की, कहा: अय्यूब ने एक दिन एक शख्स का ज़िक्र किया और कहा: वह बुरी ज़बान (झूटा, इल्ज़ाम लगाने वाला और बदज़बान) था और दुसरे का ज़िक्र किया तो कहा: वह रक़म (चीजों पर लिखी हुई क़ीमत) में इज़ाफा कर देता था ।

[٦١] حَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، قَالَ :قَالَ أَيُّوبُ : إِنَّ لِي

[61] सुलेमान बिन हर्ब ने कहा: हमें हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा: अय्यूब ने कहा: मेरा एक पड़ोसी है, फ़िर (दुनिया से दूर रहने में) उसकी फ़ज़ीलत का ज़िक्र किया,

جَارًا، ثُمَّ ذَكَرَ مِنْ فَضْلِهِ، وَلَوْ شَهِدَ عِنْدِي عَلَى تَمْرَتَيْنِ مَا رَأَيْتُ شَهَادَتَهُ جَائِزَةً

अगर वह मेरे सामने दो खजूरों के बारे में गवाही दे तो मैं (उसमें भी) उसकी शहादत क़ुबूल न करूं ।

[٦٢] وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَحَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: قَالَ مَعْمَرٌ: مَا رَأَيْتُ أَيُّوبَ اغْتَابَ أَحَدًا قَطُّ إِلَّا عَبْدَ الْكَرِيمِ يَعْنِي أَبَا أُمَيَّةَ، فَإِنَّهُ ذَكَرَهُ، فَقَالَ رَحِمَهُ اللَّهُ: كَانَ غَيْرَ ثِقَةٍ، لَقَدْ سَأَلَنِي عَنْ حَدِيثٍ لِعِكْرِمَةَ، ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ

[62] मअमर ने कहा: मैंने अय्यूब को कभी किसी की पीठ पीछे उसे बुरा कहते नहीं सुना, सिवाए अब्दुल करीम यानी अबू उमय्या के । उन्होंने इसका ज़िक्र किया तो कहा: अल्लाह उस पर रहम करे, सिक़ा नहीं है, उसने मुझसे इक्रिमा से रिवायत की गई एक हदीस के बारे में सवाल किया, फ़िर (लोगो से) कहा: मैंने इक्रिमा से सुना है ।

[٦٣] حَدَّثَنِي الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، قَالَ: قَدِمَ عَلَيْنَا أَبُو دَاوُدَ الْأَعْمَى، فَجَعَلَ يَقُولُ: حَدَّثَنَا الْبَرَاءُ، قَالَ: وَحَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ، فَذَكَرْنَا ذَلِكَ لِقَتَادَةَ، فَقَالَ: «كَذَبَ، مَا سَمِعَ مِنْهُمْ، إِنَّمَا كَانَ ذَلِكَ سَائِلًا يَتَكَفَّفُ النَّاسَ زَمَنَ طَاعُونِ الْجَارِفِ

[63] अफ्फ़ान बिन मुस्लिम ने कहा: हम्माम ने हमसे बयान किया, कहा: अबू दावूद आमा हमारे पास आया और यह कहना शुरू कर दिया: हमें बरा रज़ियल्लाहू अन्हु ने हदीस सुनाई और हमें ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहू अन्हु ने हदीस बयान की । हमने यह बात क़तादा को बताई, उन्होंने कहा: उसने झूट बोला । उसने उनसे सुना, वह तो एक मांगने वाला था, इन्सानों से ताऊन के वक़्त मांगता था ।

[٦٤] وحَدَّثَنِي حَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ، قَالَ: دَخَلَ أَبُو دَاوُدَ الْأَعْمَى عَلَى قَتَادَةَ، فَلَمَّا قَامَ، قَالُوا: إِنَّ هَذَا يَزْعُمُ أَنَّهُ لَقِيَ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ بَدْرِيًّا، فَقَالَ قَتَادَةُ: «هَذَا كَانَ سَائِلًا قَبْلَ الْجَارِفِ، لَا يَعْرِضُ فِي شَيْءٍ مِنْ هَذَا، وَلَا يَتَكَلَّمُ فِيهِ، فَوَاللَّهِ مَا حَدَّثَنَا الْحَسَنُ عَنْ بَدْرِيٍّ مُشَافَهَةً، وَلَا حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيِّبِ عَنْ بَدْرِيٍّ مُشَافَهَةً، إِلَّا عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ

[64] यज़ीद बिन हारुन ने कहा: हमें हम्माम ने ख़बर की कि अबू दावूद आमा, क़तादा के पास आया, जब वह खड़ा हुआ (और चला गया) तो लोगों ने कहा: इसे यह लगता है कि इसने अठ्ठारह बद्री सहाबा से मुलाक़ात की । इस पर क़तादा कहने लगे: (ताऊन की) बीमारी आम होने से पहले यह एक मांगने वाला था, इसका ऐसी (हदीस के इल्म) किसी चीज़ से कोई लेना देना नही था, वह इस बारे में बात तक न करता था । अल्लाह की क़सम! न हसन बसरी ने कभी किसी बद्री से बिना वास्ते हदीस हमें सुनाई और न सईद बिन मुसय्यब ने एक साद बिन मालिक रज़ियल्लाहू अन्हु के सिवा किसी और बद्री से बिना किसी वास्ते सुनी हुई कोई हदीस सुनाई ।

[٦٥] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ رَقَبَةَ، أَنَّ أَبَا جَعْفَرٍ الْهَاشِمِيَّ الْمَدَنِيَّ، كَانَ يَضَعُ أَحَادِيثَ كَلَامَ حَقٍّ، وَلَيْسَتْ مِنْ أَحَادِيثِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ يَرْوِيهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى

[65] जरीर ने रक़बा कूफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि से रिवायत की कि अबू जाफ़र हाशमी मदनी हदीसें ख़ुद से बनाया करता था, सच्चाई (या हिक्मत) के आधार पर बातें बयान करता था औ यह बातें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान में से न होता था लेकिन उसे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करता

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

था ।

[٦٦] حَدَّثَنَا الْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ سُفْيَانَ: وحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ يُونُسَ بْنِ عُبَيْدٍ، قَالَ: كَانَ عَمْرُو بْنُ عُبَيْدٍ يَكْذِبُ فِي الْحَدِيثِ

[66] अबू दावूद त्यालिसी ने शोबा से, उन्होंने युनुस बिन उबैद से रिवायत करते हुए बयान किया, (युनुस ने) कहा: अम्र बिन उबैद हदीस रिवायत करने में झूट बोला करता था।

حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ أَبُو حَفْصٍ، قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاذَ بْنَ مُعَاذٍ، يَقُولُ: قُلْتُ لِعَوْفِ بْنِ أَبِي جَمِيلَةَ: إِنَّ عَمْرَو بْنَ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا عَنِ الْحَسَنِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَاحَ فَلَيْسَ مِنَّا، قَالَ: كَذَبَ وَاللهِ عَمْرٌو، وَلَكِنَّهُ أَرَادَ أَنْ يَحُوزَهَا إِلَى قَوْلِهِ الْخَبِيثِ

[67] मुआज़ बिन मुआज़ कहते हैं: मैंने ऑफ बिन अबी जमीला से कहा: अम्र बिन उबैद ने हमें हज़रत हसन बसरी से (रिवायत करते हुए) यह हदीस सुनाई: "जिसने हम पर हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं ।" उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम अम्र ने (इस हदीस की रिवायत हसन बसरी कि तरफ़ मंसूब करने में) झूट बोला लेकिन वह चाहता है कि इस (सही हदीस) को अपनी झूटी बात से मिला दे ।

[٦٨] وحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، قَالَ: كَانَ رَجُلٌ قَدْ لَزِمَ أَيُّوبَ وَسَمِعَ مِنْهُ، فَفَقَدَهُ أَيُّوبُ، فَقَالُوا: يَا أَبَا بَكْرٍ إِنَّهُ قَدْ لَزِمَ عَمْرَو بْنَ عُبَيْدٍ، قَالَ حَمَّادٌ: فَبَيْنَا أَنَا يَوْمًا مَعَ أَيُّوبَ، وَقَدْ بَكَّرْنَا إِلَى السُّوقِ، فَاسْتَقْبَلَهُ الرَّجُلُ، فَسَلَّمَ عَلَيْهِ أَيُّوبُ، وَسَأَلَهُ، ثُمَّ قَالَ لَهُ أَيُّوبُ: «بَلَغَنِي أَنَّكَ لَزِمْتَ ذَاكَ الرَّجُلَ»، قَالَ حَمَّادٌ: سَمَّاهُ يَعْنِي عَمْرًا، قَالَ: نَعَمْ يَا أَبَا بَكْرٍ إِنَّهُ يَجِيئُنَا بِأَشْيَاءَ غَرَائِبَ، قَالَ: يَقُولُ لَهُ أَيُّوبُ: إِنَّمَا نَفِرُّ أَوْ نَفْرَقُ مِنْ تِلْكَ الْغَرَائِبِ وحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ زَيْدٍ يَعْنِي حَمَّادًا، قَالَ: قِيلَ لِأَيُّوبَ: إِنَّ عَمْرَو بْنَ عُبَيْدٍ رَوَى عَنِ الْحَسَنِ، قَالَ: لَا يُجْلَدُ السَّكْرَانُ مِنَ النَّبِيذِ، فَقَالَ: كَذَبَ، أَنَا سَمِعْتُ الْحَسَنَ، يَقُولُ: يُجْلَدُ السَّكْرَانُ مِنَ النَّبِيذِ

[68] उबैदुल्लाह बिन उमर क़वारीरी ने कहा: हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा: एक आदमी था, वह अय्यूब (की इल्मी मजलिस में मौजूद रहने) की कोशिश करता था और उसने उनसे (हदीस को) सुना था । अय्यूब ने उसे जब नहीं पाया तो उसके बारे में पूछा तो लोगों ने बताया, जनाब अबू बक्र (अय्यूब की कुनियत)! वह अम्र बिन उबैद के साथ हो गया है । हम्माद ने कहा: एक दिन मैं अय्यूब के साथ था, हम सुबह बाज़ार की तरफ़ गए तो उस आदमी ने अय्यूब का स्वागत किया । अय्यूब ने उसे सलाम कहा और हाल पूछा, फ़िर अय्यूब कहने लगे: मुझे यह बात पहुंची है कि तुम उस आदमी के साथ जुड़ गये हो । हम्माद ने कहा: उन्होंने उसका यानी अम्र का नाम लिया । वह कहने लगा: हाँ, जनाब अबू बक्र! वह ग़राइब (ऐसी बातें जिन्हें कोई नहीं जानता) हमारे सामने लाता है । कहा: अय्यूब उससे कहने लगा: हम उन्ही (अजीब) ग़रीब बातों से भागते हैं या डरते हैं (कि यह झूटी और मनघडंत होती हैं) ।

[69] सुलेमान बिन हर्ब ने कहा: हमसे इब्ने ज़ैद यानी हम्माद ने बयान किया, कहा: अय्यूब से कहा गया: अम्र बिन उबैद ने हज़रत हसन बसरी से रिवायत बयान की है (कि उन्होंने) कहा: जिसे नबीज़ से नशा हो जाये उसे कोड़े न मारे जायें । तो उन्होंने (अय्यूब) ने कहा: उसने झूट बोला, मैंने हसन से सुना, वह कहते थे: जिसे नबीज़ से नशा हो जाये उसे कोड़े मारे जायें ।

[٦٩] وحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ زَيْدٍ يَعْنِي حَمَّادًا، قَالَ: قِيلَ لِأَيُّوبَ: إِنَّ عَمْرَو بْنَ عُبَيْدٍ رَوَى عَنِ الْحَسَنِ، قَالَ: لَا يُجْلَدُ السَّكْرَانُ مِنَ النَّبِيذِ، فَقَالَ: كَذَبَ، أَنَا سَمِعْتُ الْحَسَنَ، يَقُولُ» :يُجْلَدُ السَّكْرَانُ مِنَ النَّبِيذِ

[70] सल्लाम बिन अबी मुतीअ कहते हैं: जनाब अय्यूब को यह ख़बर पहुची कि मैं अम्र बिन उबैद के पास दर्स में जाता हूँ तो एक दिन वह मेरे पास आये और कहा: तुमने ग़ौर किया, एक ऐसा आदमी जिसके दीन पर तुम्हें ऐतबार न हो, तुम उसकी हदीस पर कैसे भरोसा करोगे!

[٧٠] وحَدَّثَنِي حَجَّاجٌ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ :سَمِعْتُ سَلَّامَ بْنَ أَبِي مُطِيعٍ، يَقُولُ :بَلَغَ أَيُّوبَ أَنِّي آتِي عَمْرًا فَأَقْبَلَ عَلَيَّ يَوْمًا، فَقَالَ : أَرَأَيْتَ رَجُلًا لَا تَأْمَنُهُ عَلَى دِينِهِ، كَيْفَ تَأْمَنُهُ عَلَى الْحَدِيثِ ؟

[71] सुफ़ियान ने बयान किया, कहा: मैंने अबू मूसा (इसराईल बिन मूसा बसरी) से सुना, कह रहे थे: हमें अम्र बिन उबैद ने बिदअत का शिकार होने से पहले हदीस सुनाई।

[٧١] وحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ :سَمِعْتُ أَبَا مُوسَى، يَقُولُ : حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عُبَيْدٍ قَبْلَ أَنْ يُحْدِثَ

[72] मुआज़ अमबरी ने कहा: मैंने वासित के क़ाज़ी अबू शैबा के बारे में पूछने के लिए शोबा की तरफ़ लिखा तो उन्होंने जवाब में मेरी तरफ़ लिख भेजा: उससे कोई चीज़ रिवायत न करो और मेरा ख़त फाड़ दो ।

[٧٢] حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ :كَتَبْتُ إِلَى شُعْبَةَ أَسْأَلُهُ عَنْ أَبِي شَيْبَةَ قَاضِي وَاسِطَ، فَكَتَبَ إِلَيَّ: لَا تَكْتُبْ عَنْهُ شَيْئًا وَمَزِّقْ كِتَابِ

[73] अफ्फ़ान ने कहा: मैंने हम्माद बिन सलमा को सालेह मुर्री के वास्ते से एक हदीस सुनाई जो उसने साबित से रिवायत की तो उन्होंने (हम्माद) ने कहा: उसने झूट बोला । (इसी तरह) मैंने हम्माम को सालेह मुर्री से एक हदीस सुनाई तो उन्होंने भी कहा: उसने झूट बोला ।

[٧٣] وحَدَّثَنَا الْحُلْوَانِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَفَّانَ، قَالَ: حَدَّثْتُ حَمَّادَ بْنَ سَلَمَةَ، عَنْ صَالِحٍ الْمُرِّيِّ بِحَدِيثٍ عَنْ ثَابِتٍ، فَقَالَ: كَذَبَ وَحَدَّثْتُ هَمَّامًا، عَنْ صَالِحٍ الْمُرِّيِّ، بِحَدِيثٍ، فَقَالَ» :كَذَبَ«

[74] अबू दवूद ने बयान किया, कहा: शोबा ने मुझसे कहा: जरीर बिन हाज़िम के पास जाओ और उससे कहो: तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम हसन बिन उमारा से (हदीस) रिवायत करो क्यूंकि वह झूट बोलता है । अबू दावूद ने कहा: मैंने शोबा से कहा: वह कैसे? तो उन्होंने कहा: उसने हमें हकम से (रिवायत की हुई) हदीसें सुनाई जिनकी हमने कोई

[٧٤] وحَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ :قَالَ لِي شُعْبَةُ: ائْتِ جَرِيرَ بْنَ حَازِمٍ، فَقُلْ لَهُ : لَا يَحِلُّ لَكَ أَنْ تَرْوِيَ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عُمَارَةَ فَإِنَّهُ يَكْذِبُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ :قُلْتُ لِشُعْبَةَ: وَكَيْفَ ذَاكَ ؟

فَقَالَ : حَدَّثَنَا عَنِ الْحَكَمِ بِأَشْيَاءَ لَمْ أَجِدْ لَهَا أَصْلًا، قَالَ :قُلْتُ لَهُ: بِأَيِّ شَيْءٍ؟ قَالَ :قُلْتُ لِلْحَكَمِ: أَصَلَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ؟فَقَالَ :لَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ الْحَسَنُ بْنُ عُمَارَةَ :عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ مِقْسَمٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى عَلَيْهِمْ وَدَفَنَهُمْ، قُلْتُ لِلْحَكَمِ :مَا تَقُولُ فِي أَوْلَادِ الزِّنَا، قَالَ :يُصَلَّى عَلَيْهِمْ، قُلْتُ :مِنْ حَدِيثِ مَنْ يُرْوَى ؟قَالَ :يُرْوَى عَنِ الْحَسَنِ الْبَصْرِيِّ، فَقَالَ الْحَسَنُ بْنُ عُمَارَةَ :حَدَّثَنَا الْحَكَمُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ الْجَزَّارِ، عَنْ عَلِيٍّ

असल न पाई । मैंने कहा: क्या चीज़ रिवायत की? कहा: मैंने हकम से कहा: क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उहुद के शहीदों की जनाज़े की नमाज़ अदा की थी? तो उन्होंने जवाब दिया: आपने उनकी जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी (जबकि) हसन बिन उमारा ने हकम ही से मिक़सम के हवाले से इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा से यह रिवायत बयान की कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और उन्हें दफ़न किया । (इसी तरह) मैंने हकम से पूछा: आप ज़िना की औलाद के बारे में क्या कहते हैं? कहा: उनका जनाज़ा पढ़ा जायेगा । मैंने पूछा: यह रिवायत किसके हवाले से बयान की जाती है, कहा: हसन बसरी से (जबकि) हसन बिन उमारा ने कहा: हमसे हकम ने यहया बिन जज़्ज़ार के हवाले से यह रिवायत हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु से बयान की ।

[٧٥] وحَدَّثَنَا الْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ يَزِيدَ بْنَ هَارُونَ، وَذَكَرَ زِيَادَ بْنَ مَيْمُونٍ، فَقَالَ : حَلَفْتُ أَلَّا أَرْوِيَ عَنْهُ شَيْئًا، وَلَا عَنْ خَالِدِ بْنِ مَحْدُوجٍ وَقَالَ :لَقِيتُ زِيَادَ بْنَ مَيْمُونٍ، فَسَأَلْتُهُ عَنْ حَدِيثٍ، فَحَدَّثَنِي بِهِ عَنْ بَكْرٍ الْمُزَنِيِّ، ثُمَّ عُدْتُ إِلَيْهِ، فَحَدَّثَنِي بِهِ عَنْ مُوَرِّقٍ، ثُمَّ عُدْتُ إِلَيْهِ، فَحَدَّثَنِي بِهِ عَنِ الْحَسَنِ، وَكَانَ يَنْسُبُهُمَا إِلَى الْكَذِبِ

[75] हसन हुलवानी ने कहा: मैंने यज़ीद बिन हारुन से सुना, उन्होंने ज़्याद बिन मैमून का ज़िक्र करते हुए कहा: मैंने हलफ़ उठाया है कि मैं इससे और ख़ालिद बिन महदूज से कभी रिवायत न करूंगा (और कहा:) मैं ज़्याद बिन मैमून से मिला, उससे एक हदीस सुनाने को कहा तो उसने मुझे वह हदीस बक्र मुज़अनी से रिवायत करके सुनाई, फिर (कुछ अरसे बाद) मैं दोबारा उसके पास गया तो उसने वही हदीस मुवर्रिक से बयान की, फिर एक बार और उसके पास गया तो उसने वही हदीस हसन बसरी से सुनाई । वह (यज़ीद बिन हारून) इन दोनों (ज़्याद बिन मैमून और ख़ालिद बिन महदूज़) को झूट की तरफ़ मंसूब करते थे ।

قَالَ الْحُلْوَانِيُّ :سَمِعْتُ عَبْدَ الصَّمَدِ، وَذَكَرْتُ عِنْدَهُ زِيَادَ بْنَ مَيْمُونٍ فَنَسَبَهُ إِلَى الْكَذِبِ

हुलवानी ने कहा: मैंने अब्दुस समद से हदीस सुनी और उनके सामने ज़्याद बिन मैमून का ज़िक्र किया तो उन्होंने उसकी निस्बत झूट की तरफ़ की ।

[٧٦] وحَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ :قُلْتُ لِأَبِي دَاوُدَ الطَّيَالِسِيِّ: قَدْ أَكْثَرْتَ عَنْ عَبَّادِ بْنِ مَنْصُورٍ، فَمَا لَكَ لَمْ تَسْمَعْ مِنْهُ حَدِيثَ الْعَطَّارَةِ الَّذِي رَوَى لَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ؟ قَالَ لِيَ :اسْكُتْ، فَأَنَا لَقِيتُ زِيَادَ

[76] महमूद बिन ग़यलान ने कहा: मैंने अबू दावूद त्यालिसी से कहा: आपने अब्बाद बिन मंसूर से बहुत ज़्यादा रिवायतें ली हैं, फिर क्या हुआ कि आपने अत्तारा वाली रिवायत जो नज़्र बिन शुमैल ने हमारे सामने बयान की, उनसे नहीं सुनी? उन्होंने मुझसे कहा: ख़ामोश रहो, मैं और अब्दुर रहमान बिन महदी ज़्याद बिन मैमून से मिले और उससे

بْنَ مَيْمُونٍ، وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ مَهْدِيٍّ، فَسَأَلْنَاهُ، فَقُلْنَا لَهُ: هَذِهِ الْأَحَادِيثُ الَّتِي تَرْوِيهَا عَنْ أَنَسٍ؟ فَقَالَ: أَرَأَيْتُمَا رَجُلًا يُذْنِبُ فَيَتُوبُ، أَلَيْسَ يَتُوبُ اللهُ عَلَيْهِ؟ قَالَ: قُلْنَا: نَعَمْ، قَالَ: مَا سَمِعْتُ مِنْ أَنَسٍ مِنْ ذَا قَلِيلًا وَلَا كَثِيرًا، إِنْ كَانَ لَا يَعْلَمُ النَّاسُ فَأَنْتُمَا لَا تَعْلَمَانِ أَنِّي لَمْ أَلْقَ أَنَسًا ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ" : فَبَلَغَنَا بَعْدُ أَنَّهُ يَرْوِي، فَأَتَيْنَاهُ أَنَا وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ، فَقَالَ: أَتُوبُ، ثُمَّ كَانَ بَعْدُ يُحَدِّثُ فَتَرَكْنَاهُ

पूछते हुए कहा: यह हदीसें जो तुम हज़रत अनस रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत करते हो (क्या हैं?) तो वह कहने लगा: तुम दोनों देखो कि एक आदमी गुनाह करता है, फिर तौबा कर लेता है तो क्या अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल नहीं करता! हमने कहा: हाँ! उसने कहा: मैंने उन (हदीसों) में से अनस रज़ियल्लाहू अन्हु से कुछ नहीं सुना, न कम न ज़्यादा, अगर लोग नहीं जानते तो (क्या) तुम दोनों भी नहीं जानते कि मैं अनस रज़ियल्लाहू अन्हु से नहीं मिला।

قَالَ أَبُو دَاوُدَ :فَبَلَغَنَا بَعْدُ أَنَّهُ يَرْوِي، فَأَتَيْنَاهُ أَنَا وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ، فَقَالَ :أَتُوبُ، ثُمَّ كَانَ بَعْدُ يُحَدِّثُ فَتَرَكْنَاهُ

अबू दावूद ने कहा: फिर हमें यह ख़बर पहुंची कि वह (वही) रिवायतें बयान करता है तो मैं और अब्दुर रहमान उसके पास आये तो वह कहने लगा: मैं तौबा करता हूँ, फिर उसके बाद भी वह वही हदीसें बयान करता था तो हमने उसे (उसके हाल पर) छोड़ दिया।

[٧٧] حَدَّثَنَا حَسَنٌ الْحُلْوَانِي ، قَالَ : سَمِعْتُ شَبَابَةَ ، قَالَ : كَانَ عَبْدُ الْقُدُّوسِ يُحَدِّثُنَا ، فَيَقُولُ : سُوَيْدُ بْنُ عَقَلَةَ : قَالَ شَبَابَةُ : وَسَمِعْتُ عَبْدَ الْقُدُّوسِ ، يَقُولُ : نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ يُتَّخَذَ الرَّوْحُ عَرْضًا ، قَالَ : فَقِيلَ لَهُ : أَيُّ شَيْءٍ هَذَا ! قَالَ : يَعْنِي تُتَّخَذُ كُوَّةٌ فِي حَائِطٍ ، لِيَدْخُلَ عَلَيْهِ الرَّوْحُ

[77] हसन हुलवानी ने बयान किया, कहा: मैंने शबाबा से सुना (कहा: अब्दुल क़ुद्दूस हमारे सामने हदीस बयान करता था और कहता था: सुवैद बिन अक़अला) शबाबा ने कहा: मैंने अब्दुल क़ुद्दूस से सुना, कहता था: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "रौह को अरज़" बनाने से मना फ़रमाया है, उससे कहा गया: इसका क्या मतलब है? तो उसने कहा: मतलब यह है कि दीवार में सुराख़ रखा जाये ताकि उसमे हवा दाख़िल हो।

قَال مُسْلِمٌ : وسَمِعْتُ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيَّ ، يَقُولُ : سَمِعْتُ حَمَّادَ بْنَ زَيْدٍ ، يَقُولُ لِرَجُلٍ بَعْدَ مَا جَلَسَ مَهْدِيُّ بْنُ هِلَالٍ بِأَيَّامٍ : مَا هَذِهِ الْعَيْنُ الْمَالِحَةُ الَّتِي نَبَعَتْ قِبَلَكُمْ ؟ قَالَ : نَعَمْ يَا أَبَا إِسْمَاعِيل

इमाम मुस्लिम ने कहा: मैंने उबैदुल्लाह बिन उमर क़वारीरी से सुना, कह रहे थे: मैंने हम्माद बिन ज़ैद से सुना, वह (महदी बिन हिलाल के इल्मी मजलिस करने के कुछ दिन बाद) एक आदमी से कह रहे थे: यह नमकीन चश्मा क्या है जो आपकी तरफ़ से फूटा है? उसने कहा: हाँ! ऐ अबू इस्माईल! (आपकी बात ठीक है)।

फ़ायदा: अब्दुल क़ुद्दूस का यह हाल था कि उसे सुवैद बिन ग़फ़अला का नाम तक याद न था वह सुवैद बिन ग़फ़अला के बजाये सुवैद बिन अक़अला पढ़ता था जिस नाम का कोई रावी नहीं, लिखे तो गलत पढ़ता था, किसी से सुना नहीं था, या सुना था और भुला दिया था। यह सनद का हाल था। मतन का हाल यह था कि हदीस के अलफ़ाज़ لَا تَتَّخِذُواالرُّوحَ غَرَضًا "किसी रूह वाले को तीर चलाने के लिए निशाना न बनाओ" को الرَّوْحُ عَرْضًا (हवा को चौड़ाई में न लो, जो एक फ़िज़ूल बात है) कहता था। यह उसके

हदीस बयान करने में लापरवाही की दलील है । इस हदीस के साथ ही एक और मिसाल इमाम मुस्लिम ने महदी बिन हिलाल की दी । वह बसरा का रहने वाला था । क़द्रिया के दावत देने वालो में से था । सनद और मतन दोनों में झूट बोलता और हदीसें गढ़ता था । हम्माद बिन ज़ैद ने फ़िज़ूल रिवायते बयान करने वाले को नमकीन चशमे जैसा कहा है क्यूंकि वह हदीस तो बयान करता है लेकिन वह ऐसी हदीस नहीं होतीं जिनसे फ़ायदा उठाया जा सके ।

[٧٨] وحَدَّثَنَا الْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَفَّانَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عَوَانَةَ، قَالَ» :مَا بَلَغَنِي عَنِ الْحَسَنِ حَدِيثٌ إِلَّا أَتَيْتُ بِهِ أَبَانَ بْنَ أَبِي عَيَّاشٍ، فَقَرَأَهُ عَلَيَّ

[78] अफ़्फ़ान ने कहा: मैंने अबू अवाना से सुना, कहा: मुझे जो भी हदीस हसन बसरी से पहुंची तो मैं उसे अबान बिन अबी अय्याश के पास ले गया तो उसने उसे मेरे सामने पढ़ दी ।

[٧٩] وحَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، قَالَ» :سَمِعْتُ أَنَا وَحَمْزَةُ الزَّيَّاتُ مِنْ أَبَانَ بْنِ أَبِي عَيَّاشٍ نَحْوًا مِنْ أَلْفِ حَدِيثٍ

[79] अली बिन मुसहिर ने बयान किया, कहा: मैंने और हमज़ा ज़य्यात ने अबान बिन अबी अय्याश से लगभग एक हज़ार हदीसें सुनीं ।

قَالَ عَلِيٌّ :فَلَقِيتُ حَمْزَةَ، فَأَخْبَرَنِي» أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَنَامِ، فَعَرَضَ عَلَيْهِ مَا سَمِعَ مِنْ أَبَانَ، فَمَا عَرَفَ مِنْهَا إِلَّا شَيْئًا يَسِيرًا خَمْسَةً أَوْ سِتَّةً

अली ने कहा: फिर (कुछ दिनों के बाद) मैं हमज़ा से मिला तो उसने मुझे बताया कि उसने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा तो वह हदीसें जो अबान से सुनी थीं आपकी ख़िदमत में पेश कीं । आपने उनमें बहुत मामूली हिस्से, पांच या छः हदीसों के सिवा किसी को न पहचाना ।

[٨٠] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ عَدِيٍّ، قَالَ :قَالَ لِي أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ» :اكْتُبْ عَنْ بَقِيَّةَ، مَا رَوَى عَنِ الْمَعْرُوفِينَ، وَلَا تَكْتُبْ عَنْهُ مَا رَوَى عَنْ غَيْرِ الْمَعْرُوفِينَ، وَلَا تَكْتُبْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ عَيَّاشٍ، مَا رَوَى عَنِ الْمَعْرُوفِينَ، وَلَا عَنْ غَيْرِهِمْ

[80] ज़करिय्या बिन अदी ने कहा: मुझसे अबू इसहाक़ फ़ज़ारी ने कहा: बक़िय्या से वही हदीसे लिखो जो उसने जाने पहचाने लोगो से रिवायत की हैं, वह न लिखो जो उसने ऐसे लोगो से बयान की हैं जो (हदीस में) जाने नहीं जाते हैं और इस्माईल बिन अय्याश से (भी) न लिखो जो उसने जाने पहचाने लोगो से रिवायत कीं या जो उसने ऐसे लोगो से बयान की है जो (हदीस में) जाने नहीं जाते हैं ।

[٨١] حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ بَعْضَ أَصْحَابِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ» :نِعْمَ الرَّجُلُ بَقِيَّةُ لَوْلَا أَنَّهُ كَانَ يُكَنِّي الْأَسَامِيَ، وَيُسَمِّي الْكُنَى، كَانَ دَهْرًا يُحَدِّثُنَا عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْوُحَاظِيِّ فَنَظَرْنَا فَإِذَا هُوَ عَبْدُ الْقُدُّوسِ

[81] इसहाक़ बिन इब्राहीम हन्ज़ली ने बयान किया, कहा: मैंने अब्दुल्लाह (बिन मुबारक) के साथियों में से एक से सुना, कहा: इब्ने मुबारक ने फ़रमाया: बक़िय्या अच्छा आदमी है अगर यह न होता कि वह नामों को कुनियतों से बदल देता है और कुनियतों को नामों से । वह एक ज़माने तक हमें अबू सईद वुहाज़ी से रिवायतें सुनाता रहा, हमने अच्छी तरह ग़ौर किया तो वह अब्दुल क़ुद्दूस निकला ।

[٨٢] وحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ يُوسُفَ الْأَزْدِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّزَّاقِ، يَقُولُ: مَا رَأَيْتُ ابْنَ الْمُبَارَكِ يُفْصِحُ بِقَوْلِهِ كَذَّابٌ إِلَّا لِعَبْدِ الْقُدُّوسِ، فَإِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ لَهُ: كَذَّابٌ

[82] अब्दुल रज़्ज़ाक कहते हैं: मैंने इब्ने मुबारक को (ऐसा करते) नहीं देखा कि वह खुल कर अपनी यह बात कह दें कि फुलां झूटा है सिवाय अब्दुल क़ुद्दूस के। मैंने उन्हें ख़ुद यह कहते सुना कि वह झूटा है।

[٨٣] وحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، قَالَ :سَمِعْتُ أَبَا نُعَيْمٍ، وَذَكَرَ الْمُعَلَّى بْنَ عُرْفَانَ، فَقَالَ :قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو وَائِلٍ،قَالَ :خَرَجَ عَلَيْنَا ابْنُ مَسْعُودٍ بِصِفِّينَ فَقَالَ أَبُو نُعَيْمٍ» :أَتُرَاهُ بُعِثَ بَعْدَ الْمَوْتِ؟

[83] अब्दुल्लाह बिन अब्दुर रहमान दारमी ने मुझसे बयान किया, कहा: मैंने अबू नुऐम से सुना (और उन्होंने मुअल्ला बिन इरफ़ान का ज़िक्र किया) और कहा: उसने कहा: हमसे अबू वाइल ने बयान किया, कहा: सिफ्फ़ीन में इब्ने मसूद हमारे सामने निकले तो अबू नुऐम ने कहा: इनके बारे में तुम्हारी राय है कि वह मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा हो गए थे?

फ़ायदा: अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु सिफ्फ़ीन की जंग से बहुत पहले 32 हिजरी में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहू अन्हु के दौर में इन्तिक़ाल कर गये थे। ऐसी गलतियों से रावियों का झूट पकड़ा जाता है।

[٨٤] حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، وَحَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، كِلَاهُمَا عَنْ عَفَّانَ بْنِ مُسْلِمٍ، قَالَ :كُنَّا عِنْدَ إِسْمَاعِيلَ ابْنِ عُلَيَّةَ، فَحَدَّثَ رَجُلٌ عَنْ رَجُلٍ، فَقُلْتُ :إِنَّ هَذَا لَيْسَ بِثَبْتٍ، قَالَ :فَقَالَ الرَّجُلُ: اغْتَبْتَهُ، قَالَ إِسْمَاعِيلُ» :مَا اغْتَابَهُ، وَلَكِنَّهُ حَكَمَ أَنَّهُ لَيْسَ بِثَبْتٍ

[84] अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम से रिवायत है, कहा: हम इस्माईल बिन उलय्या के पास थे तो एक आदमी ने एक दुसरे आदमी से रिवायत (बयान) की। मैंने कहा: वह मज़बूत (सिक़ा के बराबर) नहीं, तो उस आदमी ने कहा: तुमने उसकी ग़ीबत की है। इस्माईल कहने लगे: उन्होंने उसकी ग़ीबत नहीं की बल्कि हुक्म बयान किया है कि वह सब्त (सिक़ा) नहीं है।

[٨٥] وحَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ، قَالَ :سَأَلْتُ مَالِكَ بْنَ أَنَسٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الَّذِي يَرْوِي عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيِّبِ، فَقَالَ» :لَيْسَ بِثِقَةٍ«، وَسَأَلْتُهُ عَنْ صَالِحٍ، مَوْلَى التَّوْأَمَةِ، فَقَالَ» :لَيْسَ بِثِقَةٍ«، وَسَأَلْتُهُ عَنْ أَبِي الْحُوَيْرِثِ، فَقَالَ» :لَيْسَ بِثِقَةٍ«، وَسَأَلْتُهُ عَنْ شُعْبَةَ الَّذِي رَوَى عَنْهُ ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، فَقَالَ» :لَيْسَ بِثِقَةٍ«، وَسَأَلْتُهُ عَنْ حَرَامِ بْنِ عُثْمَانَ، فَقَالَ» :لَيْسَ بِثِقَةٍ«، وَسَأَلْتُ مَالِكًا عَنْ هَؤُلَاءِ الْخَمْسَةِ، فَقَالَ» :لَيْسُوا بِثِقَةٍ

[85] बिश्र बिन उमर ने हमसे बयान किया, कहा: मैंने इमाम मालिक बिन अनस से मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान के बारे में पूछा जो सईद बिन मुसय्यब से हदीसें रिवायत करता है तो उन्होंने कहा: वह सिक़ा नहीं। मैंने मालिक बिन अनस से अबू हुवैरिस के बारे सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया: वह सिक़ा नहीं। (फिर) मैंने उनसे उस शोबा के बारे में सवाल किया जिससे इब्ने अबी ज़िअब रिवायत करते हैं तो फ़रमाया: वह सिक़ा नहीं। मैंने उनसे सालिह मौला तौअमा के बारे में सवाल किया तो कहा: सिक़ा नहीं। मैंने उनसे हराम बिन उस्मान के बारे में पूछा तो फ़रमाया: सिक़ा नहीं। मैंने इमाम मालिक से इन पाँचों के बारे में पूछा, उन्होंने फ़रमाया: यह सब हदीस के बयान करने में सिक़ा नहीं। मैंने उनसे एक और शख्स के बारे में पूछा

ي حَدِيثِهِمْ«، وَسَأَلْتُهُ عَنْ رَجُلٍ آخَرَ نَسِيتُ اسْمَهُ، فَقَالَ» :هَلْ رَأَيْتَهُ فِي كُتُبِي؟ «قُلْتُ: لَا، قَالَ» :لَوْ كَانَ ثِقَةً لَرَأَيْتَهُ فِي كُتُبِي

जिसका (अब) मैं नाम भूल गया हूँ तो उन्होंने कहा: क्या तुमने मेरी किताबों में इसका नाम देखा है? मैंने कहा: नहीं। फ़रमाया: अगर सिक़ा होता तो तुम इसका ज़िक्र मेरी किताबों में देखते।

[٨٦] وحَدَّثَنِي الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ، قَالَ :حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ،» عَنْ شُرَحْبِيلَ بْنِ سَعْدٍ وَكَانَ مُتَّهَمًا

[86] हमसे हज्जाज ने बयान किया, कहा: हमसे इब्ने अबी ज़िअब ने शुरहबील बिन साद के हवाले से हदीस बयान की और वह मुतहम था।

[٨٧] وحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ قُهْزَاذَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ الطَّالْقَانِيَّ، يَقُولُ: سَمِعْتُ ابْنَ الْمُبَارَكِ، يَقُولُ: «لَوْ خُيِّرْتُ بَيْنَ أَنْ أَدْخُلَ الْجَنَّةَ، وَبَيْنَ أَنْ أَلْقَى عَبْدَ اللهِ بْنَ مُحَرَّرٍ لَاخْتَرْتُ أَنْ أَلْقَاهُ، ثُمَّ أَدْخُلَ الْجَنَّةَ، فَلَمَّا رَأَيْتُهُ كَانَتْ بَعْرَةٌ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْهُ

[87] अबू इस्हाक तालिक़ानी कहते हैं: मैंने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से सुना, कह रहे थे: (एक समय था) अगर मुझे जन्नत में जाने या अब्दुल्लाह बिन मुर्हरर से मिलने मौक़ा मिलता तो मैं इससे पहले मिलता और फ़िर जन्नत में जाता, फ़िर जब मैंने इसे देख लिया तो इसके मुक़ाबले में एक मेंगनी भी मुझे ज़्यादा महबूब थी।

[٨٨] وحَدَّثَنِي الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ، حَدَّثَنَا وَلِيدُ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: قَالَ عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ زَيْدٌ يَعْنِي ابْنَ أَبِي أُنَيْسَةَ: «لَا تَأْخُذُوا عَنْ أَخِي

[88] वलीद बिन सलिह ने बयान किया, कहा: उबैदुल्लाह बिन अम्र ने कहा: ज़ैद, यानी इब्ने अबी उनैसा ने कहा: मेरे भाई (यहया बिन अबी उनैसा) से रिवायत न लो।

[٨٩] حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ السَّلَامِ الْوَابِصِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ الرَّقِّيُّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: «كَانَ يَحْيَى بْنُ أَبِي أُنَيْسَةَ كَذَّابًا

[89] अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने उबैदुल्लाह बिन अम्र के हवाले से बयान किया, कहा: यहया बिन अबी उनैसा झूटा था।

[٩٠] حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ: ذُكِرَ فَرْقَدٌ عِنْدَ أَيُّوبَ، فَقَالَ: «إِنَّ فَرْقَدًا لَيْسَ صَاحِبَ حَدِيثٍ

[90] हम्माद बिन ज़ैद से रिवायत है, कहा: अय्यूब के सामने फ़रक़द का ज़िक्र किया गया तो उन्होंने कहा: फ़रक़द हदीस (की महारत रखने) वाला नहीं।

फ़ायदा: फ़रक़द बिन याक़ूब बहुत बड़े मुजाहिद और बहुत बड़े ज़ाहिद और नेक थे लेकिन बहुत ज़्यादा सीधे सादे और हदीस के फ़न को नहीं जानते थे। नेक लोग जो हदीस के फ़न को न जानते हो, उनकी वजह से लोगों को ज़्यादा धोका लगता है। वह उनकी नेकी पर भरोसा करते हुए उनकी गलत ख़बर को क़ुबूल कर लेते हैं। मुहद्दिस्सीन ने हदीस की हिफाज़त के लिए बहुत ही अच्छा तरीक़े को अपनाया। उन्होंने कोई भी कमी के बिना ज़ईफ़ हदीसों की राह को बंद किया। इस बारे में सगे भाई ने भाई तक को नहीं बख्शा।

[٩١] وحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بِشْرٍ الْعَبْدِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ الْقَطَّانَ، ذُكِرَ عِنْدَهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ اللَّيْثِيُّ فَضَعَّفَهُ جِدًّا، فَقِيلَ لِيَحْيَى: أَضْعَفُ مِنْ يَعْقُوبَ بْنِ عَطَاءٍ؟ قَالَ: «نَعَمْ»، ثُمَّ قَالَ: «مَا كُنْتُ أَرَى أَنَّ أَحَدًا يَرْوِي عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ

[91] मुझसे अब्दुर रहमान बिन बिश्र अब्दी ने बयान किया, कहा: मैंने यहया बिन सईद क़त्तान से सुना, जब उनके सामने मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर लैसी का ज़िक्र किया गया तो उन्होंने उसे बहुत ज़्यादा ज़ईफ़ क़रार दिया। इमाम यहया से कहा गया: (क्या) यह याक़ूब बिन अता से भी ज़्यादा ज़ईफ़ है? कहा: हाँ! फ़िर कहा: मैं नहीं समझता कि कोई एक इन्सान भी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर से रिवायत कर सकता है।

[٩٢] حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ الْحَكَمِ، قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ الْقَطَّانَ، ضَعَّفَ حَكِيمَ بْنَ جُبَيْرٍ، وَعَبْدَ الْأَعْلَى، وَضَعَّفَ يَحْيَى بْنَ مُوسَى بْنَ دِينَارٍ قَالَ: «حَدِيثُهُ رِيحٌ». وَضَعَّفَ مُوسَى بْنَ دِهْقَانَ، وَعِيسَى بْنَ أَبِي عِيسَى الْمَدَنِيَّ قَالَ: وَسَمِعْتُ الْحَسَنَ بْنَ عِيسَى، يَقُولُ: قَالَ لِي ابْنُ الْمُبَارَكِ: «إِذَا قَدِمْتَ عَلَى جَرِيرٍ فَاكْتُبْ عِلْمَهُ كُلَّهُ إِلَّا حَدِيثَ ثَلَاثَةٍ، لَا تَكْتُبْ حَدِيثَ عُبَيْدَةَ بْنِ مُعَتِّبٍ، وَالسَّرِيِّ بْنِ إِسْمَاعِيلَ، وَمُحَمَّدِ بْنِ سَالِمٍ

[92] बिश्र बिन हकम ने बयान किया, कहा: मैंने यहया बिन सईद क़त्तान से सुना, उन्होंने हकीम बिन जुबैर और अब्दुल आला को ज़ईफ़ क़रार दिया (और) कहा: उसकी (बयान की हुई) हदीस हवा (जैसी) है और मूसा बिन दिहक़ान और ईसा बिन अबी ईसा मदनी को (भी) ज़ईफ़ क़रार दिया। कहा: और मैंने हसन बिन ईसा से सुना, कह रहे थे: मुझसे इब्ने मुबारक ने फ़रमाया: तुम जब जरीर के पास पहुँचो तो तीन (रावियों) की हदीसों के सिवा उसका सारा इल्म लिख लेना। उबैदा बिन मुअत्तिब , सर्री बिन इस्माईल और मुहम्मद बिन सालिम की हदीस इससे न लिखना।

قَالَ مُسْلِمٌ ":وَأَشْبَاهُ مَا ذَكَرْنَا مِنْ كَلَامِ أَهْلِ الْعِلْمِ فِي مُتَّهَمِي رُوَاةِ الْحَدِيثِ، وَإِخْبَارِهِمْ عَنْ مَعَايِبِهِمْ كَثِيرٌ، يَطُولُ الْكِتَابُ بِذِكْرِهِ عَلَى اسْتِقْصَائِهِ، وَفِيمَا ذَكَرْنَا كِفَايَةٌ لِمَنْ تَفَهَّمَ وَعَقَلَ مَذْهَبَ الْقَوْمِ فِيمَا قَالُوا مِنْ ذَلِكَ وَبَيَّنُوا

इमाम मुस्लिम कहते हैं: हमने हदीस के मुतहम रावियों के बारे में अहले इल्म के कलाम और (हदीस के फ़न में) उनकी कमियों की ख़बर देने के हवाले से जो बयान किया है उसके उदाहरण बहुत ज़्यादा हैं। अगर उन सबका ज़िक्र किया जाये तो किताब बहुत बड़ी हो जाएगी। जो शख्स समझ से काम लेते हुए मुहद्दिस्सीन की बातों और उनकी तरफ़ से की गयी व्याख्या की रौशनी में उनके तरीक़े को समझने की कोशिश करे उसके लिए इतना (ही) काफ़ी है जितना हमने ज़िक्र कर दिया।

وَإِنَّمَا أَلْزَمُوا أَنْفُسَهُمُ الْكَشْفَ عَنْ مَعَايِبِ رُوَاةِ الْحَدِيثِ، وَنَاقِلِي الْأَخْبَارِ، وَأَفْتَوْا بِذَلِكَ حِينَ سُئِلُوا لِمَا فِيهِ مِنْ عَظِيمِ الْخَطَرِ، إِذِ الْأَخْبَارُ فِي أَمْرِ الدِّينِ

इन लोगो (मुहद्दिस्सीन) ने अपने लिए हदीस के रावियों और अख़बार (और आसार) को नक़ल करने वालो की कमियों को बताने को ज़रूरी समझा और जब इनसे पूछा गया तो इसके हक़ में फ़तवे दिए क्यूंकि हदीस की हिफाज़त

إِنَّمَا تَأْتِي بِتَحْلِيلٍ، أَوْ تَحْرِيمٍ، أَوْ أَمْرٍ، أَوْ نَهْيٍ، أَوْ تَرْغِيبٍ، أَوْ تَرْهِيبٍ، فَإِذَا كَانَ الرَّاوِي لَهَا لَيْسَ بِمَعْدِنٍ لِلصِّدْقِ وَالْأَمَانَةِ، ثُمَّ أَقْدَمَ عَلَى الرِّوَايَةِ عَنْهُ مَنْ قَدْ عَرَفَهُ، وَلَمْ يُبَيِّنْ مَا فِيهِ لِغَيْرِهِ مِمَّنْ جَهِلَ مَعْرِفَتَهُ كَانَ آثِمًا بِفِعْلِهِ ذَلِكَ، غَاشًّا لِعَوَامِّ الْمُسْلِمِينَ، إِذْ لَا يُؤْمَنُ عَلَى بَعْضِ مَنْ سَمِعَ تِلْكَ الْأَخْبَارَ أَنْ يَسْتَعْمِلَهَا، أَوْ يَسْتَعْمِلَ بَعْضَهَا وَلَعَلَّهَا، أَوْ أَكْثَرَهَا أَكَاذِيبُ لَا أَصْلَ لَهَا، مَعَ أَنَّ الْأَخْبَارَ الصِّحَاحَ مِنْ رِوَايَةِ الثِّقَاتِ وَأَهْلِ الْقَنَاعَةِ أَكْثَرُ مِنْ أَنْ يُضْطَرَّ إِلَى نَقْلِ مَنْ لَيْسَ بِثِقَةٍ وَلَا مَقْنَعٍ

बहुत अहम है । ख़बरे (हदीसें) दीन के मामले में हलाल करने के लिए होती हैं या हराम करने के लिए, हुक्म देने के लिए होती हैं या रोकने के लिए, किसी चीज़ का शौक़ दिलाने के लिए होती हैं या किसी चीज़ से डराने के लिए । इसलिए जब उनका रिवायत करने वाला बुनयादी और हक़ीकी तौर पर सच्चा और अमानतदार न हो, फिर इससे ऐसा आदमी रिवायत करे जो इसके बारे में (ख़ुद तो सबकुछ) जानता हो लेकिन दूसरे के सामने जो इसको नहीं जानता, उसे न बताये तो इस अमल की वजह से वह गुनाहगार होगा और आम मुसलमानों को धोका देने वाला होगा । इसकी वजह यह है कि इन (ख़बरो और हदीसों) को सुनने वाले कुछ लोग इस बात से न बच सकेंगे कि वह इन (ख़बरों और हदीसों) या इनके कुछ हिस्सों पर अमल कर लें, हालांकि मुमकिन है कि यह (रिवायते) या इनका ज़्यादातर हिस्सा झूट पर आधारित था जिनकी कोई बुनयाद न थी जबकि (दूसरी तरफ़ यह एक सच्चाई है कि) सिक़ा और भरोसे वाले रावियों की रिवायत की हुई सहीह हदीसें इतनी ज़्यादा मौजूद हैं कि (किसी को) ऐसे रावी जो सिक़ा नहीं है और न भरोसे के लायक़ हैं उनकी तरह देखने की ज़रुरत नहीं पड़ती ।

وَلَا أَحْسِبُ كَثِيرًا مِمَّنْ يُعَرِّجُ مِنَ النَّاسِ عَلَى مَا وَصَفْنَا مِنْ هَذِهِ الْأَحَادِيثِ الضِّعَافِ، وَالْأَسَانِيدِ الْمَجْهُولَةِ وَيَعْتَدُّ بِرِوَايَتِهَا بَعْدَ مَعْرِفَتِهِ بِمَا فِيهَا مِنَ التَّوَهُّنِ وَالضَّعْفِ، إِلَّا أَنَّ الَّذِي يَحْمِلُهُ عَلَى رِوَايَتِهَا وَالِاعْتِدَادِ بِهَا إِرَادَةُ التَّكَثُّرِ بِذَلِكَ عِنْدَ الْعَوَامِّ، وَلِأَنْ يُقَالَ :مَا أَكْثَرَ مَا جَمَعَ فُلَانٌ مِنَ الْحَدِيثِ، وَأَلَّفَ مِنَ الْعَدَدِ

जिन ज़ईफ़ हदीसों और मजहूल सनदों के बारे में हमने तफ़सील से बयान किया है उनके अम्बार लगाने उनकी कमी और कमज़ोरी जानने के बावजूद उन्हें बयान करेने वालों के बारे में मैं इसके सिवा और कुछ नहीं समझता कि जो चीज़ उन्हें इन (कमज़ोर हदीसों) की रिवायत और उन्हें बयान करने उकसा रही है वह आम लोगों के सामने ज़्यादा हदीसे बयान करने की ख़्वाहिश है और यह बात कि कहा जा सके कि (देखो!) फुलां ने कितनी हदीसें जमा कर ली हैं और कितनी ज़्यादा तादात में हदीसे लिख ली हैं ।

وَمَنْ ذَهَبَ فِي الْعِلْمِ هَذَا الْمَذْهَبَ، وَسَلَكَ هَذَا الطَّرِيقَ فَلَا نَصِيبَ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ بِأَنْ يُسَمَّى جَاهِلًا أَوْلَى مِنْ أَنْ يُنْسَبَ إِلَى عِلْمٍ

जो शख्स इल्म में इस तरीक़े पर चलता है और यह राह अपनाता है तो (उसका दरअसल) इस (इल्म) में कोई हिस्सा नहीं । ऐसे शख्स को जाहिल का नाम देना उसकी तरफ़ इल्म की निस्बत करने से बेहतर है ।

باب صِحَّةِ الاِحْتِجَاجِ بِالْحَدِيثِ الْمُعَنْعَنِ إِذَا أَمْكَنَ لِقَاءُ وَلَمْ يَكُنْ فِيهِمْ مُدَلِّسٌ

बाब 6 : शब्द 'अन' के साथ रिवायत की हुई हदीस हुज्जत है लेकिन इस शर्त के साथ कि रावियों की मुलाक़ात मुमकिन हो और उनमें से कोई रावी मुदल्लिस न हो

وَقَدْ تَكَلَّمَ بَعْضُ مُنْتَحِلِي الْحَدِيثِ مِنْ أَهْلِ عَصْرِنَا فِي تَصْحِيحِ الْأَسَانِيدِ وَتَسْقِيمِهَا بِقَوْلٍ لَوْ ضَرَبْنَا عَنْ حِكَايَتِهِ، وَذِكْرِ فَسَادِهِ صَفْحًا لَكَانَ رَأْيًا مَتِينًا، وَمَذْهَبًا صَحِيحًا،إِذِ الْإِعْرَاضُ عَنِ الْقَوْلِ الْمُطَّرَحِ أَحْرَى لِإِمَاتَتِهِ، وَإِخْمَالِ ذِكْرِ قَائِلِهِ، وَأَجْدَرُ أَنْ لَا يَكُونَ ذَلِكَ تَنْبِيهًا لِلْجُهَّالِ عَلَيْهِ، غَيْرَ أَنَّا لَمَّا تَخَوَّفْنَا مِنْ شُرُورِ الْعَوَاقِبِ، وَاغْتِرَارِ الْجَهَلَةِ بِمُحْدَثَاتِ الْأُمُورِ، وَإِسْرَاعِهِمْ إِلَى اعْتِقَادِ خَطَأِ الْمُخْطِئِينَ، وَالْأَقْوَالِ السَّاقِطَةِ عِنْدَ الْعُلَمَاءِ، رَأَيْنَا الْكَشْفَ عَنْ فَسَادِ قَوْلِهِ وَرَدَّ مَقَالَتِهِ بِقَدْرِ مَا يَلِيقُ بِهَا مِنَ الرَّدِّ، أَجْدَى عَلَى الْأَنَامِ، وَأَحْمَدَ لِلْعَاقِبَةِ إِنْ شَاءَ اللهُ

हदीस के इल्म से ताल्लुक रखने का दावा करने वाले हमारे ज़माने के एक साहब ने सनदो को सही और ज़ईफ़ ठहराने के मामले में ऐसी बातें कहीं हैं कि अगर हम उन्हें नक़ल करने और उनके गलत होने के ज़िक्र को नज़रअंदाज़ कर दें तो यह एक मज़बूत राय और सही मौक़िफ़ होगा। वजह यह है कि जो बात क़ुबूल करने के लायक़ न हो तो उस बात पर बिलकुल भी ध्यान न देना उस राय को उसकी मौत के हवाले कर देने और उसके कहने वाले की गुमनामी के लिए ज़्यादा मुनासिब और फ़ायदेमंद है कि (उसका ज़िक्र करना) जाहिलों को उसकी तरफ़ मुतावज्जो करने की वजह न बने। इसके ख़िलाफ़ जब हमें इस बात का ख़याल आया कि इसके नतीजे बुरे हो सकते हैं, (सच्चाई को) न जानने वाले लोग नयी निकली गयी बातों के धोके में आ सकते हैं और वह जल्दबाज़ी में गलत बातें करने वालो की गलतियों और ऐसी बातो से प्रभावित हो सकते हैं जो अहले इल्म के नज़दीक भरोसे के लायक़ नहीं तो हमने यह राय अपनाई कि ऐसे इंसान की बात की ख़राबी को बताया जाये और उसका इतना रद्द जितने की ज़रुरत है लोगो के लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद और नतीजे के लिहाज़ से ज़्यादा बेहतर होगी , इन शा अल्लाह।

وَزَعَمَ الْقَائِلُ الَّذِي افْتَتَحْنَا الْكَلَامَ عَلَى الْحِكَايَةِ عَنْ قَوْلِهِ، وَالْإِخْبَارِ عَنْ سُوءِ رَوِيَّتِهِ، أَنَّ كُلَّ إِسْنَادٍ لِحَدِيثٍ فِيهِ فُلَانٌ عَنْ فُلَانٍ، وَقَدِ احَاطَ الْعِلْمُ بِأَنَّهُمَا قَدْ كَانَا فِي عَصْرٍ وَاحِدٍ، وَجَائِزٌ أَنْ يَكُونَ الْحَدِيثُ الَّذِي رَوَى الرَّاوِي عَمَّنْ رَوَى عَنْهُ قَدْ سَمِعَهُ مِنْهُ وَشَافَهَهُ بِهِ غَيْرَ أَنَّهُ لَا نَعْلَمُ لَهُ مِنْهُ سَمَاعًا، وَلَمْ نَجِدْ فِي شَيْءٍ مِنَ الرِّوَايَاتِ أَنَّهُمَا الْتَقَيَا قَطُّ، أَوْ تَشَافَهَا بِحَدِيثٍ، أَنَّ الْحُجَّةَ لَا تَقُومُ عِنْدَهُ بِكُلِّ خَبَرٍ جَاءَ هَذَا

इन साहब की बात, जिनकी बात लिख कर के और जिनके गलत नुक़्ते नज़र की ख़बर दे कर हमने बात की शुरआत की , ख़याल यह है कि हदीस की हर सनद जिस में फुलां अन फुलां कह कर रिवायत (कि गयी) है और यह बात (भी) इल्म में आ चुकी है कि दोनों एक ही ज़माने में थे और इस बात का (भी पूरी) उम्मीद है कि रिवायत करने वाले ने जिससे रिवायत की उससे सुनी होगी और उससे आपने सामने मुलाक़ात की होगी लेकिन हम (पुरे यक़ीन के साथ) नहीं जानते कि उसने (वाक़ई इस रिवायत को) उससे सुना था और किसी रिवायत में हमें यह भी नहीं मिला कि वह (दोनों वाक़ई) कभी आपस में मिले थे या एक दुसरे से हदीस सुनी सुनाई थी तो ऐसी हालत में पहुँचने वाली

الْمَجِيءَ حَتَّى يَكُونَ عِنْدَهُ الْعِلْمُ بِأَنَّهُمَا قَدِ اجْتَمَعَا مِنْ دَهْرِهِمَا مَرَّةً فَصَاعِدًا، أَوْ تَشَافَهَا بِالْحَدِيثِ بَيْنَهُمَا، أَوْ يَرِدَ خَبَرٌ فِيهِ بَيَانُ اجْتِمَاعِهِمَا وَتَلَاقِيهِمَا مَرَّةً مِنْ دَهْرِهِمَا فَمَا فَوْقَهَا، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ عِلْمُ ذَلِكَ، وَلَمْ تَأْتِ رِوَايَةٌ تُخْبِرُ أَنَّ هَذَا الرَّاوِيَ عَنْ صَاحِبِهِ قَدْ لَقِيَهُ مَرَّةً، وَسَمِعَ مِنْهُ شَيْئًا لَمْ يَكُنْ فِي نَقْلِهِ الْخَبَرَ عَمَّنْ رَوَى عَنْهُ ذَلِكَ وَالْأَمْرُ كَمَا وَصَفْنَا حُجَّةٌ، وَكَانَ الْخَبَرُ عِنْدَهُ مَوْقُوفًا حَتَّى يَرِدَ عَلَيْهِ سَمَاعُهُ مِنْهُ لِشَيْءٍ مِنَ الْحَدِيثِ، قَلَّ أَوْ كَثُرَ فِي رِوَايَةٍ مِثْلِ مَا وَرَدَ

रिवायत से उसके लिए हुज्जत क़ायम नहीं होगी जब तक कि उसके इल्म में आ जाये कि वह दोनों अपनी ज़िन्दगी में एक या ज़्यादा बार आपस में मिले या दोनों ने आपने सामने एक दुसरे से हदीस सुनी और सुनाई या (फिर कोई ऐसी) ख़बर मिल जाये जिसमें पूरी ज़िन्दगी में एक या ज़्यादा बार दोनों के एक जगह होने या आपस में मिलने का ज़िक्र हो। अगर उसे इस बात का इल्म न हो और कोई सही रिवायत इस बात की ख़बर देने वाली (इस तक) न पहुंची हो कि यह रावी अपने साहब (उस्ताद) से (कम से कम) एक बार मिला था और उससे कुछ सुना था, तो वह उस शख्स से, जिससे उसने रिवायत की, ख़बर नक़ल करने में हुज्जत न होगा जबकि मामला इसी तरह हो जिस तरह हमने बयान किया है। (यह) हदीस इस रिवायत करने वाले तक मौक़ूफ़ होगी जब तक कि उसके पास रावी के (अपने) उस्ताद से रिवायत में समां (सुनना), कम हो या ज़्यादा, की ख़बर न पहुँच जाये, जिस तरह बयान हो चूका।

وَهَذَا الْقَوْلُ يَرْحَمُكَ اللهُ فِي الطَّعْنِ فِي الْأَسَانِيدِ قَوْلٌ مُخْتَرَعٌ، مُسْتَحْدَثٌ غَيْرُ مَسْبُوقٍ صَاحِبِهِ إِلَيْهِ، وَلَا مُسَاعِدَ لَهُ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ عَلَيْهِ، وَذَلِكَ أَنَّ الْقَوْلَ الشَّائِعَ الْمُتَّفَقَ عَلَيْهِ بَيْنَ أَهْلِ الْعِلْمِ بِالْأَخْبَارِ وَالرِّوَايَاتِ قَدِيمًا وَحَدِيثًا، أَنَّ كُلَّ رَجُلٍ ثِقَةٍ رَوَى عَنْ مِثْلِهِ حَدِيثًا، وَجَائِزٌ مُمْكِنٌ لَهُ لِقَاؤُهُ وَالسَّمَاعُ مِنْهُ لِكَوْنِهِمَا جَمِيعًا كَانَا فِي عَصْرٍ وَاحِدٍ، وَإِنْ لَمْ يَأْتِ فِي خَبَرٍ قَطُّ أَنَّهُمَا اجْتَمَعَا وَلَا تَشَافَهَا بِكَلَامٍ فَالرِّوَايَةُ ثَابِتَةٌ، وَالْحُجَّةُ بِهَا لَازِمَةٌ، إِلَّا أَنَّ يَكُونَ هُنَاكَ دَلَالَةٌ بَيِّنَةٌ أَنَّ هَذَا الرَّاوِي لَمْ يَلْقَ مَنْ رَوَى عَنْهُ، أَوْ لَمْ يَسْمَعْ مِنْهُ شَيْئًا، فَأَمَّا وَالْأَمْرُ مُبْهَمٌ عَلَى الْإِمْكَانِ الَّذِي فَسَّرْنَا، فَالرِّوَايَةُ عَلَى السَّمَاعِ أَبَدًا حَتَّى تَكُونَ الدَّلَالَةُ الَّتِي بَيَّنَّا

सनदो में ऐतराज़ के बारे में यह बात (अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए) एक मन घड़न्त और नयी बात है। इसके कहने वाले से पहले यह बात नहीं कही गयी, अहले इल्म में से इसकी ताईद नहीं की गयी। मामला यह है कि ख़बरों और रिवायतों के माहिर पुराने और नए अहले इल्म के बीच मशहूर बात यही है कि हर सिक़ा इंसान जिसने अपने जैसे सिक़ा से रिवायत की जिनका आपस में मिलना और एक दुसरे से सुनना मुमकिन था और वह इस वजह से कि दोनों एक ही ज़माने में थे, चाहे हम तक इसकी यक़ीनी ख़बर न पहुंची हो कि वह मिले थे और आपने सामने बात की थी तो (इनकी) रिवायत साबित होगी, हुज्जत मानते हुए इससे इस्तदलाल करना ज़रूरी होगा, सिवाए इसके कि ऐसी कोई खुली दलील मौजूद हो कि रिवायत करने वाला उससे नहीं मिला जिससे उसने रिवायत की है या इससे कोई हदीस नहीं सुनी लेकिन इस इमकान के मुताबिक़ जिसकी वज़ाहत हमने की, रिवायत हमेशा समां पर आधारित होगी, सिवाए इसके कि (न मिलने की) ऐसी दलील मिल जाये जिसकी हमने वज़ाहत की।

فَيُقَالُ لِمُخْتَرِعِ هَذَا الْقَوْلِ الَّذِي وَصَفْنَا مَقَالَتَهُ، أَوْ لِلذَّابِّ عَنْهُ :قَدْ أَعْطَيْتَ فِي جُمْلَةِ قَوْلِكَ أَنَّ خَبَرَ الْوَاحِدِ الثِّقَةِ عَنِ الْوَاحِدِ الثِّقَةِ حُجَّةٌ يَلْزَمُ بِهِ الْعَمَلُ، ثُمَّ أَدْخَلْتَ فِيهِ الشَّرْطَ بَعْدُ،فَقُلْتَ :حَتَّى نَعْلَمَ أَنَّهُمَا قَدْ كَانَا الْتَقَيَا مَرَّةً فَصَاعِدًا، أَوْ سَمِعَ مِنْهُ شَيْئًا، فَهَلْ تَجِدُ هَذَا الشَّرْطَ الَّذِي اشْتَرَطْتَهُ عَنْ أَحَدٍ يَلْزَمُ قَوْلُهُ؟ وَإِلَّا فَهَلُمَّ دَلِيلًا عَلَى مَا زَعَمْتَ

जिस बात को हमने नक़ल किया है उस बात को एजाद करने वाले या उसका बचाओ करने वाले से यह कहा जायेगा कि आपने भी मजमुई तौर पर यह मान लिया कि अकेले सिक़ा की (दुसरे) अकेले सिक़ा से रिवायत हुज्जत है जिस पर अमल करना ज़रूरी है, इसके बाद इस बात में आपने यह शर्त लगा दी और कहा कि यह उस वक़्त होगा जब मालूम हो जाये कि वह दोनों एक या ज़्यादा बार मिले थे और इस (रिवायत करने वाले) ने इससे कुछ सुना था तो क्या यह शर्त जो आपने लगाई है, किसी ऐसी हस्ती की तरफ़ से मिलती है जिसकी बात (मानना) ज़रूरी हो? अगर नहीं तो अपने ख़याल के बारे में दलील लाइए।

فَإِنِ ادَّعَى قَوْلَ أَحَدٍ مِنْ عُلَمَاءِ السَّلَفِ بِمَا زَعَمَ مِنْ إِدْخَالِ الشَّرِيطَةِ فِي تَثْبِيتِ الْخَبَرِ، طُولِبَ بِهِ، وَلَنْ يَجِدَ هُوَ وَلَا غَيْرُهُ إِلَى إِيجَادِهِ سَبِيلًا، وَإِنْ هُوَ ادَّعَى فِيمَا زَعَمَ دَلِيلًا يَحْتَجُّ بِهِ، قِيلَ :وَمَا ذَاكَ الدَّلِيلُ؟ فَإِنْ قَالَ :قُلْتُهُ لِأَنِّي وَجَدْتُ رُوَاةَ الْأَخْبَارِ قَدِيمًا وَحَدِيثًا يَرْوِي أَحَدُهُمْ عَنِ الْآخَرِ الْحَدِيثَ، وَلَمَّا يُعَايِنْهُ وَلَا سَمِعَ مِنْهُ شَيْئًا قَطُّ، فَلَمَّا رَأَيْتُهُمْ اسْتَجَازُوا رِوَايَةَ الْحَدِيثِ بَيْنَهُمْ هَكَذَا عَلَى الْإِرْسَالِ مِنْ غَيْرِ سَمَاعٍ، وَالْمُرْسَلُ مِنَ الرِّوَايَاتِ فِي أَصْلِ قَوْلِنَا، وَقَوْلِ أَهْلِ الْعِلْمِ بِالْأَخْبَارِ لَيْسَ بِحُجَّةٍ احْتَجْتُ لِمَا وَصَفْتُ مِنَ الْعِلَّةِ إِلَى الْبَحْثِ عَنْ سَمَاعِ رَاوِي كُلِّ خَبَرٍ عَنْ رَاوِيهِ، فَإِذَا أَنَا هَجَمْتُ عَلَى سَمَاعِهِ مِنْهُ لِأَدْنَى شَيْءٍ ثَبَتَ عِنْدِي بِذَلِكَ جَمِيعُ مَا يَرْوِي عَنْهُ بَعْدُ، فَإِنْ عَزَبَ عَنِّي مَعْرِفَةُ ذَلِكَ أَوْقَفْتُ الْخَبَرَ، وَلَمْ يَكُنْ عِنْدِي مَوْضِعَ حُجَّةٍ لِإِمْكَانِ الْإِرْسَالِ فِيهِ

अगर वह ख़बर (हदीस या असर) के सबूत के लिए अपने ख़याल के मुताबिक़ शर्त लगाने के बारे में उलमा ए सल्फ़ में से किसी के क़ौल का दावा करें तो उनसे यह क़ौल (पेश करने) के लिए बोला जायेगा। वह या कोई दूसरा ऐसा क़ौल पेश करने का कोई रास्ता नहीं निकाल सकेगा और अगर वह अपने ख़याल के हक़ में किसी दलील का दावा करें जिससे उन्होंने हुज्जत पकड़ी है तो (उनसे) कहा जायेगा: वह दलील क्या है? अगर वह कहें: मैं यह इसलिए कहता हूँ कि मैंने पहले और आजके ज़माने में अख़बार (और हदीसें) रिवायत करने वालों को देखा है कि उनमें कोई रावी दुसरे से उसे देखे या कभी उससे सुने बिना रिवायत करता है, इसलिए जब मैंने देखा कि इन लोगों ने समां के बिना इरसाल की शक्ल में एक दुसरे से हदीस रिवायत करने को जायज़ क़रार दे रखा है और रिवायतों में से (ऐसी) मुर्सल रिवायतें हमारे और अहले इल्म के बुनयादी क़ौल के मुताबिक़ हुज्जत नहीं, तो इससे मैंने इस इल्लत (कमज़ोरी) की वजह से, जो मैंने बयान की, यह नतीजा निकाला है कि हर रिवायत करने वाले का उससे समां ढूँढा जायेगा जिससे वह रिवायत करता है। अगर मैं उसके उस (उस्ताद) से किसी कम से कम के समां (के सबूत) को पाने में कामयाब हो जाऊं तो इसके बाद मेरे नज़दीक उसकी उस (अपने उस्ताद) से की गयी सारी रिवायते साबित हो जायेंगी। अगर इसकी जानकारी मुझे न मिल सकी तो मैं इस ख़बर (को क़ुबूल करने) से रुक जाऊँगा और इरसाल के इमकान की वजह से यह (रिवायत) मेरे लिए हुज्जत के क़ाबिल न होगी।

فَيُقَالُ لَهُ :فَإِنْ كَانَتِ الْعِلَّةُ فِي تَضْعِيفِكَ الْخَبَرَ، وَتَرْكِكَ الِاحْتِجَاجَ بِهِ إِمْكَانَ الْإِرْسَالِ فِيهِ، لَزِمَكَ أَنْ لَا تُثْبِتَ إِسْنَادًا مُعَنْعَنًا حَتَّى تَرَى فِيهِ السَّمَاعَ مِنْ أَوَّلِهِ إِلَى آخِرِهِ

तो (इसके जवाब में) इससे यह कहा जायेगा: अगर आपकी तरफ़ से (ऐसी) रिवायत को ज़ईफ़ कहने और इसको बतौर हुज्जत क़ुबूल न करने की इल्लत (यह है कि) इसमें इरसाल का इमकान है तो फिर आप पर ज़रूरी है कि आप शब्द 'अन' से बयान की हुई (कसी भी) सनद को शुरू से आख़िर तक समां (का सबूत) देखे बिना साबित शुदा क़रार न दें।

وَذَلِكَ أَنَّ الْحَدِيثَ الْوَارِدَ عَلَيْنَا بِإِسْنَادِ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ فَبِيَقِينٍ نَعْلَمُ أَنَّ هِشَامًا قَدْ سَمِعَ مِنْ أَبِيهِ، وَأَنَّ أَبَاهُ قَدْ سَمِعَ مِنْ عَائِشَةَ، كَمَا نَعْلَمُ أَنَّ عَائِشَةَ قَدْ سَمِعَتْ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَدْ يَجُوزُ إِذَا لَمْ يَقُلْ هِشَامٌ فِي رِوَايَةٍ يَرْوِيهَا عَنْ أَبِيهِ :سَمِعْتُ، أَوْ أَخْبَرَنِي، أَنْ يَكُونَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَبِيهِ فِي تِلْكَ الرِّوَايَةِ إِنْسَانٌ آخَرُ، أَخْبَرَهُ بِهَا عَنْ أَبِيهِ، وَلَمْ يَسْمَعْهَا هُوَ مِنْ أَبِيهِ، لَمَّا أَحَبَّ أَنْ يَرْوِيهَا مُرْسَلًا، وَلَا يُسْنِدَهَا إِلَى مَنْ سَمِعَهَا مِنْهُ، وَكَمَا يُمْكِنُ ذَلِكَ فِي هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، فَهُوَ أَيْضًا مُمْكِنٌ فِي أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، وَكَذَلِكَ كُلُّ إِسْنَادٍ لِحَدِيثٍ لَيْسَ فِيهِ ذِكْرُ سَمَاعِ بَعْضِهِمْ مِنْ بَعْضٍ

और वह इस तरह है कि हमारे सामने जो हदीस हिशाम बिन उर्वा की अपनी वालिद से (और उनकी हज़रत) आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से आये तो उसके बारे में हम यक़ीन से जानते हैं कि हिशाम ने अपने वालिद से (हदीसो का) समां किया और यह कि उनके वालिद ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से हदीसें सुनीं जिस तरह यह भी हमें मालूम है कि हज़रत आयशा रज़ियाल्लाहू अन्हा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, और यह भी हो सकता है (ख़ासकर उस वक़्त) जब हिशाम ने (अपने वालिद से बयान की गयी रिवायत में) "मैंने सुना" या "उन्होंने मुझे ख़बर दी" (के शब्द) न कहे हों कि उसके और उसके वालिद के बीच कोई और इंसान (रावी की हैसियत से) मौजूद हो जिसने उसके वालिद से (सुन कर) उसे ख़बर दी हो और उसने ख़ुद रिवायत अपने वालिद से न सुनी हो। (ऐसा उस वक़्त हुआ हो) जब उस (हिशाम) ने उसे मुर्सल (ही) रिवायत करने पसंद किया हो और उसका इशारा उस शख़्स की तरफ़ न किया हो जिससे (असल में) उसने रिवायत सुनी थी और जैसे यह हिशाम की अपने वालिद से रिवायत में मुमकिन है इसी तरह इसके वालिद की हज़रत आयशा रज़ियल्ल्हू अन्हा से रिवायत में भी (ऐसा) मुमकिन है, इसी तरह हर ऐसी हदीस की सनद में जहाँ एक के दुसरे से समां का ज़िक्र न हो (यह गुंजाईश मौजूद रहती है)

وَإِنْ كَانَ قَدْ عُرِفَ فِي الْجُمْلَةِ أَنَّ كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ قَدْ سَمِعَ مِنْ صَاحِبِهِ سَمَاعًا كَثِيرًا، فَجَائِزٌ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ أَنَّ يَنْزِلَ فِي بَعْضِ الرِّوَايَةِ، فَيَسْمَعَ مِنْ غَيْرِهِ عَنْهُ بَعْضَ أَحَادِيثِهِ، ثُمَّ يُرْسِلَهُ عَنْهُ أَحْيَانًا، وَلَا يُسَمِّي مَنْ سَمِعَ مِنْهُ، وَيَنْشَطَ أَحْيَانًا فَيُسَمِّيَ الَّذِي حَمَلَ عَنْهُ الْحَدِيثَ وَيَتْرُكَ الْإِرْسَالَ

जब सामान्य रूप से यह बात मालूम हो कि हर एक ने अपने अपने उस्ताद से बहुत (सी हदीसों का) समां किया है तो हर रावी यह कर सकता है कि कुछ रिवायतें उसने नाज़िल (ज़्यादा वासतों वाली) सनद से हासिल की हों और उसी (उस्ताद) की कुछ हदीसें उसने (बिना किसी के वास्ते से सुनने के बजाये) किसी दुसरे के वास्ते से सुनी हो, फिर कभी उनमें इरसाल (कोई बीच के वास्ते का ज़िक्र न करना) से काम ले और जिससे (असल में) रिवायत सुनी उसका

नाम न ले और कभी जिससे हदीस सुनी उसका नाम ज़िक्र कर दे और इरसाल को छोड़ दे ।

وَمَا قُلْنَا مِنْ هَذَا مَوْجُودٌ فِي الْحَدِيثِ مُسْتَفِيضٌ، مِنْ فِعْلِ ثِقَاتِ الْمُحَدِّثِينَ وَأَئِمَّةِ أَهْلِ الْعِلْمِ

हमने जो कुछ कहा है यह हदीस में मौजूद है । बहुत से सिक़ा मुहद्दिस्सीन और अहले इल्म कि तरफ़ से यह अमल लगातार होता आ रहा है ।

وَسَنَذْكُرُ مِنْ رِوَايَاتِهِمْ عَلَى الْجِهَةِ الَّتِي ذَكَرْنَا عَدَدًا يُسْتَدَلُّ بِهَا عَلَى أَكْثَرَ مِنْهَا إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

अब हम उन (लोगो) का ज़िक्र किये हुए तरीक़े की कुछ रिवायतों का ज़िक्र करेंगे जिनके ज़रिये से इन शा अल्लाह उनसे ज़्यादा रिवायतों के लिए नतीजा निकाला जा सकेगा ।

فَمِنْ ذَلِكَ أَنَّ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيَّ، وَابْنَ الْمُبَارَكِ، وَوَكِيعًا، وَابْنَ نُمَيْرٍ، وَجَمَاعَةً غَيْرَهُمْ، رَوَوْا عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ» :كُنْتُ أُطَيِّبُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِحِلِّهِ، وَلِحِرْمِهِ بِأَطْيَبِ مَا أَجِدُ

उनमें से (एक) यह है कि अय्यूब सख़्तियानी, (अब्दुल्लाह) इब्ने मुबारक, वकीअ, इब्ने नुमैर और उनके अलावा एक जमात ने हिशाम बिन उर्वा से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लहू अन्हा से रिवायत की, कहा: मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एहराम खोलने और एहराम बांधने के लिए वह ख़ुशबू लगाया करती जो सबसे अच्छी मुझे मिला करती ।

فَرَوَى هَذِهِ الرِّوَايَةَ بِعَيْنِهَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، وَدَاوُدُ الْعَطَّارُ، وَحُمَيْدُ بْنُ الْأَسْوَدِ، وَوُهَيْبُ بْنُ خَالِدٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ،قَالَ :أَخْبَرَنِي عُثْمَانُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

फिर यही रिवायत लैस बिन साद, दावूद और अता, हुमैद बिन अस्वद, वुहैब बिन ख़ालिद और अबू उसामा ने हिशाम से बयान की, उन्होंने कहा: मुझे उस्मान बिन उर्वा (हिशाम के भाई) ने उर्वा से ख़बर दी, उन्होंने हज़रत आयशा से और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की ।

وَرَوَى هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ» :كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «إِذَا اعْتَكَفَ، يُدْنِي إِلَيَّ رَأْسَهُ فَأُرَجِّلُهُ وَأَنَا حَائِضٌ

और हिशाम ने अपने वालिद से, उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत की, कहा: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब एतिकाफ़ में होते, अपना सर मेरे क़रीब करे देते तो मैं उसमें कंघी करती और मैं (उस वक़्त) हैज़ की हालत में होती ।

فَرَوَاهَا بِعَيْنِهَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

फिर यही हदीस इमाम मालिक ने ज़ोहरी से, उन्होंने उर्वा से, उन्होंने अम्रा (बिन्ते अब्दुर रहमान अन्सारिया) से, उन्होंने आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की ।

وَرَوَى الزُّهْرِيُّ، وَصَالِحُ بْنُ أَبِي حَسَّانَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ» كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

और ज़ोहरी और सालिह बिन अबी हस्सान ने अबू सलमा (बिन अब्दुर रहमान बिन ऑफ़) से, उन्होंने हज़रत आयशा

يُقَبِّلُ وَهُوَ صَائِمٌ فَقَالَ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ فِي هَذَا الْخَبَرِ فِي الْقُبْلَةِ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عُرْوَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «كَانَ يُقَبِّلُهَا وَهُوَ صَائِمٌ

रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत की, कहा: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (अपनी बीवियों को) बोसा देते जबकि आप रोज़े में होते। यहया बिन अबी कसीर ने बोसे की इस हदीस के बारे में कहा: मुझे अबू सलमा ने ख़बर दी, उन्हें उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बताया कि उन्हें उर्वा ने ख़बर दी कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा उन्हें बताया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें बोसा देते जबकि आप रोज़े की हालत में होते।

وَرَوَى ابْنُ عُيَيْنَةَ، وَغَيْرُهُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ : أَطْعَمَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لُحُومَ الْخَيْلِ، وَنَهَانَا عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ

इब्ने उयैय्ना और दूसरो ने अम्र बिन दीनार से रिवायत की, कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें घोड़ो का गोश्त खिलाया (खाने की इजाज़त दी) और हमें गधों के गोश्त से मना फ़रमाया।

فَرَوَاهُ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «وَهَذَا النَّحْوُ فِي الرِّوَايَاتِ كَثِيرٌ يَكْثُرُ تَعْدَادُهُ، وَفِيمَا ذَكَرْنَا مِنْهَا كِفَايَةٌ لِذَوِي الْفَهْمِ

इसी हदीस को हम्माद बिन ज़ैद ने अम्र (बिन दीनार) से, उन्होंने मुहम्मद बिन अली (बिन अबी तालिब) से, उन्होंने जाबिर से और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया। इस तरह की रिवायतें बहुत ज़्यादा है जो हमने ज़िक्र की हैं, वह समझ रखने वालों के लिए काफ़ी हैं।

فَإِذَا كَانَتِ الْعِلَّةُ عِنْدَ مَنْ وَصَفْنَا قَوْلَهُ مِنْ قَبْلُ فِي فَسَادِ الْحَدِيثِ وَتَوْهِينِهِ، إِذَا لَمْ يُعْلَمْ أَنَّ الرَّاوِيَ قَدْ سَمِعَ مِمَّنْ رَوَى عَنْهُ شَيْئًا، إِمْكَانَ الْإِرْسَالَ فِيهِ، لَزِمَهُ تَرْكُ الِاحْتِجَاجِ فِي قِيَادِ قَوْلِهِ بِرِوَايَةِ مَنْ يُعْلَمُ أَنَّهُ قَدْ سَمِعَ مِمَّنْ رَوَى عَنْهُ، إِلَّا فِي نَفْسِ الْخَبَرِ الَّذِي فِيهِ ذِكْرُ السَّمَاعِ، لِمَا بَيَّنَّا مِنْ قَبْلُ عَنِ الْأَئِمَّةِ الَّذِينَ نَقَلُوا الْأَخْبَارَ أَنَّهُمْ كَانَتْ لَهُمْ تَارَاتٌ يُرْسِلُونَ فِيهَا الْحَدِيثَ إِرْسَالًا، وَلَا يَذْكُرُونَ مَنْ سَمِعُوهُ مِنْهُ، وَتَارَاتٌ يَنْشَطُونَ فِيهَا، فَيُسْنِدُونَ الْخَبَرَ عَلَى هَيْئَةِ مَا سَمِعُوا، فَيُخْبِرُونَ بِالنُّزُولِ فِيهِ إِنْ نَزَلُوا، وَبِالصُّعُودِ إِنْ صَعِدُوا، كَمَا شَرَحْنَا ذَلِكَ عَنْهُمْ

जिन साहब का क़ौल हमने पहले लिखा है, उनके पास इस हदीस की ख़राबी और कमजोरी की वजह, जब रावी के बारे में इल्म न हो कि उसने अपने उस्ताद से कुछ सुना, मुमकिन है कि इस (हदीस) में इरसाल हो तो इसके लिए अपने ही क़ौल की पैरवी करते हुए इस रावी की भी, जिसका अपने उस्ताद से समां मालूम है, उस रिवायत के सिवा जिसमे समां का ज़िक्र मौजूद है, बाक़ी हदीसों से नतीजा निकालना छोड़ देना चाहिए। इसकी वजह वही बात है जो हम पहले (ही) हदीसों को नक़ल करने वाले (बड़े) आइमा के अमल के हवाले से बता चुके हैं कि कई मर्तबा वह हदीस (की रिवायत) में इरसाल करते थे और उन (रावियों) का ज़िक्र न करते जिनसे उन्होंने (बिना किसी के वास्ते) वह हदीस सुनी थी और कई बार जब वह नुज़ूल पर आमादा होते तो उन्होंने जिस तरह हदीस सुनी उसी के मुताबिक़ नाज़िल (ज़्यादा वासतों वाली) सनद से इसको रिवायत कर देते और जब कम वासतों की सनद अपनाना चाहते तो सनद में कम वासतों से रिवायत बयान करते, जिस तरह

हम उनके हवाले से तफसील से बयान कर चुके हैं।

وَمَا عَلِمْنَا أَحَدًا مِنْ أَئِمَّةِ السَّلَفِ مِمَّنْ يَسْتَعْمِلُ الْأَخْبَارَ، وَيَتَفَقَّدُ صِحَّةَ الْأَسَانِيدِ وَسَقَمَهَا، مِثْلَ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ وَابْنِ عَوْنٍ، وَمَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، وَشُعْبَةَ بْنِ الْحَجَّاجِ، وَيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الْقَطَّانِ، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَهْدِيٍّ، وَمَنْ بَعْدَهُمْ مِنْ أَهْلِ الْحَدِيثِ، فَتَّشُوا عَنْ مَوْضِعِ السَّمَاعِ فِي الْأَسَانِيدِ، كَمَا ادَّعَاهُ الَّذِي وَصَفْنَا قَوْلَهُ مِنْ قَبْلُ

आइमा ए सलफ़ में से हदीसों के इस्तेमाल (उनसे नतीजे) और सनदों की सेहत और कमज़ोरी को परखने वालों, जैसे: अय्यूब सख़तियानी, इब्ने ऑन, मालिक बिन अनस, शोबा बिन हज्जाज, यहया बिन सईद क़त्तान, अब्दुर रहमान बिन महदी और बाद के आइमा हदीस में से किसी को नहीं देखा कि उन्होंने सनदों में समां के मक़ामात ढूंढें हों (और उनके आधार पर हदीस की सेहत और कमी के बारे में हुक्म लगाया हो) जिस तरह इन (साहब) ने दावा किया है जिनका क़ौल हमने नक़ल किया।

وَإِنَّمَا كَانَ تَفَقُّدُ مَنْ تَفَقَّدَ مِنْهُمْ سَمَاعَ رُوَاةِ الْحَدِيثِ مِمَّنْ رَوَى عَنْهُمْ، إِذَا كَانَ الرَّاوِي مِمَّنْ عُرِفَ بِالتَّدْلِيسِ فِي الْحَدِيثِ، وَشُهِرَ بِهِ، فَحِينَئِذٍ يَبْحَثُونَ عَنْ سَمَاعِهِ فِي رِوَايَتِهِ، وَيَتَفَقَّدُونَ ذَلِكَ مِنْهُ كَيْ تَنْزَاحَ عَنْهُمْ عِلَّةُ التَّدْلِيسِ

और हक़ीक़त यही है कि जिन लोगो ने हदीस के रावियों के अपने उस्तादों से समां की कोशिश की, तब यह कोशिश करते थे जब कोई रावी उन रावियों में से होता जो हदीस की तदलीस में मशहूर होता और उनकी शोहरत इसी हवाले से होती। उस वक़्त वह उसकी रिवायत में समां (की वज़ाहत) ढूंढते और इससे इस समां को तलाश करते ताकि उन (रावियों) से तदलीस की इल्लत दूर हो जाये।

فَمَنِ ابْتَغَى ذَلِكَ مِنْ غَيْرِ مُدَلِّسٍ، عَلَى الْوَجْهِ الَّذِي زَعَمَ مَنْ حَكَيْنَا قَوْلَهُ، فَمَا سَمِعْنَا ذَلِكَ عَنْ أَحَدٍ مِمَّنْ سَمَّيْنَا، وَلَمْ نُسَمِّ مِنَ الْأَئِمَّةِ

तदलीस न करने वाले रावी के बारे में इस शकल में जिस तरह उनका ख़याल है जिनका क़ौल हमने नक़ल किया, किसी ने (भी समां की) यह कोशिश नहीं की, हमने जिन आइमा का नाम लिया या जिनका नाम नहीं लिया, उनमें से किसी की तरफ़ से (भी) हमने ऐसी बात नहीं सुनी।

فَمِنْ ذَلِكَ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ يَزِيدَ الْأَنْصَارِيَّ، وَقَدْ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَدْ رَوَى عَنْ حُذَيْفَةَ، وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ، وَعَنْ كُلٍّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا حَدِيثًا يُسْنِدُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلَيْسَ فِي رِوَايَتِهِ عَنْهُمَا ذِكْرُ السَّمَاعِ مِنْهُمَا، وَلَا حَفِظْنَا فِي شَيْءٍ مِنَ الرِّوَايَاتِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ يَزِيدَ شَافَهَ حُذَيْفَةَ، وَأَبَا مَسْعُودٍ بِحَدِيثٍ قَطُّ، وَلَا وَجَدْنَا ذِكْرَ رُؤْيَتِهِ إِيَّاهُمَا فِي رِوَايَةٍ بِعَيْنِهَا

इसकी एक मिसाल यह है कि अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंसारी रज़ियल्लाहू अन्हु ने (और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीदार का शरफ़ हासिल किया है) हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अबू मसूद अंसारी रज़ियल्लाहू अन्हुमा दोनों से एक एक हदीस रिवायत की है जिसकी सनद उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचाई है। इन दोनों से उन (अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंसारी रज़ियल्लाहू अन्हु) की रिवायत में इनसे समां का ज़िक्र नहीं न ही (दूसरी) रिवायतों में से किसी में हमने यह बात पाई है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद रज़ियल्लाहू अन्हु ने हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अबू मसूद से आपने सामने कभी कोई हदीस सुनी हो, न ही किसी ख़ास रिवायत में हमें यह

बात मिली है कि उन्होंने इन दोनों को देखा है ।

وَلَمْ نَسْمَعْ عَنْ أَحَدٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ مِمَّنْ مَضَى، وَلَا مِمَّنْ أَدْرَكْنَا أَنَّهُ طَعَنَ فِي هَذَيْنِ الْخَبَرَيْنِ اللَّذَيْنِ رَوَاهُمَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ حُذَيْفَةَ، وَأَبِي مَسْعُودٍ بِضَعْفٍ فِيهِمَا، بَلْ هُمَا وَمَا أَشْبَهَهُمَا عِنْدَ مَنْ لَاقَيْنَا مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ بِالْحَدِيثِ مِنْ صِحَاحِ الْأَسَانِيدِ وَقَوِيِّهَا، يَرَوْنَ اسْتِعْمَالَ مَا نُقِلَ بِهَا، وَالِاحْتِجَاجَ بِمَا أَتَتْ مِنْ سُنَنٍ وَآثَارٍ

हमने उन अहले इल्म के बारे में भी यह नहीं सुना जो गुज़र गए और न ही उनसे जिन्हें हमने पाया कि उनमें से किसी ने इन दो हदीसों के बारे में ज़ईफ़ होने का ऐतराज़ किया हो जो अब्दुल्लाह बिन यज़ीद रज़ियल्लाहू अन्हु ने हज़रत हुज़ैफ़ा और अबू मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत कीं बल्कि यह दोनों हदीसें और इन जैसी और हदीसें इन उल्माए हदीस के नज़दीक जिनसे हम मिले, सही और क़वी सनद की रिवायतों में से हैं । इनकी इनके बारे में राय यह है कि इनसे इस्तदलाल किया जाये और इनमें जो सुन्नतें और (अमल के) नमूने मौजूद हैं उनको हुज्जत समझा जाये।

وَهِيَ فِي زَعْمِ مَنْ حَكَيْنَا قَوْلَهُ مِنْ قَبْلُ وَاهِيَةٌ مُهْمَلَةٌ، حَتَّى يُصِيبَ سَمَاعَ الرَّاوِي عَمَّنْ رَوَى

लेकिन यह (हदीसें) उन लोगो के ख़याल के मुताबिक़, जिनका क़ौल हमने नक़ल किया, इन्तिहाई ज़ईफ़ और बिना मतलब होंगीं जब तक कि उन्हें रिवायत करने वाले का उससे, जिससे उन्होंने रिवायत की, समां का इल्म हो जाये ।

وَلَوْ ذَهَبْنَا نُعَدِّدُ الْأَخْبَارَ الصِّحَاحَ عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ مِمَّنْ يَهِنُ بِزَعْمِ هَذَا الْقَائِلِ، وَنُحْصِيهَا لَعَجَزْنَا عَنْ تَقَصِّي ذِكْرِهَا وَإِحْصَائِهَا كُلِّهَا وَلَكِنَّا أَحْبَبْنَا أَنْ نَنْصِبَ مِنْهَا عَدَدًا يَكُونُ سِمَةً لِمَا سَكَتْنَا عَنْهُ مِنْهَا

अगर हम वह हदीसें जो अहले इल्म के पास सहीह और इस बात के कहने वाले के नज़दीक कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं, गिनती करने लग जायें और उनको जमा करें तो हम इन सबको जमा और गिनती करने में असमर्थ हो जायेंगे लेकिन हम चाहते हैं कि इनमें से कुछ को गिनें (जो) इन हदीसों की तरफ़ से भी निशानी होंगी जिनके बारे मं हम ख़ामोश रहेंगे ।

وَهَذَا أَبُو عُثْمَانَ النَّهْدِيُّ، وَأَبُو رَافِعٍ الصَّائِغُ، وَهُمَا مِمَّنْ أَدْرَكَ الْجَاهِلِيَّةَ، وَصَحِبَا أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْبَدْرِيِّينَ هَلُمَّ جَرًّا، وَنَقَلَا عَنْهُمُ الْأَخْبَارَ حَتَّى نَزَلَا إِلَى مِثْلِ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَابْنِ عُمَرَ، وَذَوِيهِمَا قَدْ أَسْنَدَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا، وَلَمْ نَسْمَعْ فِي رِوَايَةٍ بِعَيْنِهَا أَنَّهُمَا عَايَنَا أُبَيًّا، أَوْ سَمِعَا مِنْهُ شَيْئًا

यह अबू उस्मान नहदी और अबू राफ़े साइग़ हैं, इन दोनों ने जाहिलियत का दौर (भी) पाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बद्री और बाद वाले सहाबा के साथ भी रहे । इनसे इन्होने ख़बरे और हदीसें भी रिवायत कीं यहाँ तक कि इन (बद्री सहाबा) से बाद में आने वाले अबू हुरैरा, इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा और इन दोनों के शागिर्दों तक आकर रिवायत की । इन दोनों में से हर एक ने हज़रत उबई बिन कआब रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (अन के) इस्नाद के साथ एक एक हदीस रिवायत की और हमने किसी भी रिवायत में नहीं सुना कि इन दोनों हज़रत उबई बिन कआब रज़ियल्लाहू अन्हु को देखा था या इनसे कोई चीज़ सुनी थी।

وَأَسْنَدَ أَبُو عَمْرٍو الشَّيْبَانِيُّ وَهُوَ مِمَّنْ أَدْرَكَ الْجَاهِلِيَّةَ، وَكَانَ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا، وَأَبُو مَعْمَرٍ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَخْبَرَةَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَبَرَيْنِ

अबू अम्र शैबानी, वह (जो) इन लोगो में से हैं जिन्होंने दौरे जाहिलियत देखी, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में (जवान) मर्द थे और (इसी तरह) अबू मामर अब्दुल्लाह बिन सख़बरा, दोनों में से हर एक ने हज़रत अबू मसूद अंसारी रज़ियल्लाहू अन्हु की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की हुई दो हदीसें (अन से) बयान कीं।

وَأَسْنَدَ عُبَيْدُ بْنُ عُمَيْرٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا، وَعُبَيْدُ بْنُ عُمَيْرٍ وُلِدَ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

उबैद बिन उमैर ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहू अन्हा से, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (अन) के साथ एक हदीस रिवायत की जबकि उबैद बिन उमैर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में पैदा हुए।

وَأَسْنَدَ قَيْسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ وَقَدِ أَدْرَكَ زَمَنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَةَ أَخْبَارٍ

क़ैस बिन अबी हाज़िम ने (और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़मान देखा) अबू मसूद अंसारी रज़ियल्लाहू अन्हु से और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीन हदीसें (अन के) साथ बयान कीं।

وَأَسْنَدَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي لَيْلَى، وَقَدْ حَفِظَ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، وَصَحِبَ عَلِيًّا، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا

और अब्दुर रहमान बिन अबी लैला ने (जिन्होंने उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहू अन्हु से हदीसें सुन कर हिफ्ज़ कीं और हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु के साथ रहे) अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक हदीस (अन के) साथ रिवायत की।

وَأَسْنَدَ رِبْعِيُّ بْنُ حِرَاشٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثَيْنِ، وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا، وَقَدْ سَمِعَ رِبْعِيٌّ مِنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَرَوَى عَنْهُ

रिबअी बिन हिराश ने इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहू अन्हु से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दो हदीसें और हज़रत अबू बकरा रज़ियल्लाहू अन्हु के वास्ते से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक हदीस (अन के) साथ रिवायत की और रिबअी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहू अन्हु से हदीसें सुनीं और रिवायत कीं।

وَأَسْنَدَ نَافِعُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ الْخُزَاعِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا

नाफ़े बिन जुबैर बिन मुतइम ने अबू शुरैह ख़ुज़ाअी रज़ियल्लाहू अन्हु के वास्ते से (अन के) साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक हदीस रिवायत की।

وَأَسْنَدَ النُّعْمَانُ بْنُ أَبِي عَيَّاشٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، ثَلَاثَةَ أَحَادِيثَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

नोमान बिन अबी अय्याश ने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि

وَسَلَّمَ

वसल्लम से तीन हदीसें (अन के) साथ रिवायत की ।

وَأَسْنَدَ عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّيْثِيُّ، عَنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا

अता बिन यज़ीद लैसी ने तमीम दारी रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (अन के) साथ एक हदीस रिवायत की ।

وَأَسْنَدَ سُلَيْمَانُ بْنُ يَسَارٍ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا

सुलैमान बिन यसार ने राफ़े बिन ख़ुदीज रज़ियल्लाहू अन्हु से, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (अन के) साथ एक हदीस रिवायत की ।

وَأَسْنَدَ حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِمْيَرِيُّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَادِيثَ

हुमैद बिन अब्दुर रहमान हिमयरी ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से और उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (अन के) साथ एक रिवायत बयान की ।

فَكُلُّ هَؤُلَاءِ التَّابِعِينَ الَّذِينَ نَصَبْنَا رِوَايَتَهُمْ عَنِ الصَّحَابَةِ الَّذِينَ سَمَّيْنَاهُمْ لَمْ يُحْفَظْ عَنْهُمْ سَمَاعٌ عَلِمْنَاهُ مِنْهُمْ فِي رِوَايَةٍ بِعَيْنِهَا، وَلَا أَنَّهُمْ لَقُوهُمْ فِي نَفْسِ خَبَرٍ بِعَيْنِهِ،

यह सारे ताबिईन हैं, इनकी इन सहाबा से (जिनके हमने नाम लिए) रिवायतों को हमने अलग अलग करके पेश किया है । इनमे से किसी का इन (साहबा) से समां किसी ख़ास रिवायत के ज़रिये से हमारे इल्म में नहीं आया और न ही किसी ख़ास रिवायत में यह बात है कि वह इनसे मिले।

وَهِيَ أَسَانِيدُ عِنْدَ ذَوِي الْمَعْرِفَةِ بِالْأَخْبَارِ وَالرِّوَايَاتِ مِنْ صِحَاحِ الْأَسَانِيدِ، لَا نَعْلَمُهُمْ وَهَّنُوا مِنْهَا شَيْئًا قَطُّ، وَلَا الْتَمَسُوا فِيهَا سَمَاعَ بَعْضِهِمْ مِنْ بَعْضٍ، إِذِ السَّمَاعُ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ مُمْكِنٌ مِنْ صَاحِبِهِ غَيْرُ مُسْتَنْكَرٍ، لِكَوْنِهِمْ جَمِيعًا كَانُوا فِي الْعَصْرِ الَّذِي اتَّفَقُوا فِيهِ

इल्मे हदीस और रिवायत के माहिर लोगो के नज़दीक यह सनदें सहीह सनदों में से हैं, हमें इल्म नहीं कि उन्होंने इनमें से किसी को ज़ईफ़ क़रार दिया हो या उनका एक दुसरे से समां तलाश किया हो । इसकी वजह यही है कि उनमें से हर एक का (अपने उस्ताद से) समां मुमकिन है, मुशकिल नहीं क्यूंकि यह इसी एक ज़माने में थे जिसमें यह सब थे ।

وَكَانَ هَذَا الْقَوْلُ الَّذِي أَحْدَثَهُ الْقَائِلُ الَّذِي حَكَيْنَاهُ فِي تَوْهِينِ الْحَدِيثِ بِالْعِلَّةِ الَّتِي وَصَفَ أَقَلَّ مِنْ أَنْ يُعَرَّجَ عَلَيْهِ، وَيُثَارَ ذِكْرُهُ، إِذْ كَانَ قَوْلًا مُحْدَثًا وَكَلَامًا خَلْفًا لَمْ يَقُلْهُ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ سَلَفَ، وَيَسْتَنْكِرُهُ مَنْ بَعْدَهُمْ خَلَفَ، فَلَا حَاجَةَ بِنَا فِي رَدِّهِ بِأَكْثَرَ مِمَّا شَرَحْنَا، إِذْ كَانَ قَدْرُ الْمَقَالَةِ وَقَائِلِهَا الْقَدْرَ الَّذِي وَصَفْنَاهُ، وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى دَفْعِ مَا خَالَفَ مَذْهَبَ الْعُلَمَاءِ وَعَلَيْهِ التُّكْلَانُ

यह क़ौल जिसे इस क़ौल के कहने वाले ने हदीसों को इस इल्लत की वजह से जो उसने बयान की, कमज़ोर ठहराने के बारे में एजाद किया है (अहमियत में) इससे कम है कि इस पर (लम्बे चौड़े गौर ओ फ़िक्र के लिए) ज़्यादा वक़्त दिया जाये या इसका ज़्यादा चर्चा किया जाये क्यूंकि यह एक नया क़ौल है, एक ऐसी बात है जो अस्लाफ़ अहले इल्म में से किसी ने नहीं की और जो इनके बाद आये उन्होंने इसे रद्द किया है, इसलिए हमें अपनी बयान की हुई तफ़सील से ज़्यादा इसको रद्द करने की ज़रुरत नहीं । इसकी वजह यह (भी) है कि इस बात की और इसके कहने वाले की क़द्र इतनी ही है जितने हमने बयान की । उलमा के रास्ते की मुख़ालफ़त करने वाले के रद्द में अल्लाह (ही) है जिसकी

मदद तलब की जाती है और उसी पर भरोसा है ।